إِلَيْهِ يُرَدُّ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَمَا تَخْرُجُ مِن ثَمَرَاتٍ مِّنْ أَكْمَامِهَا وَمَا تَحْمِلُ مِنْ أُنثَىٰ وَلَا تَضَعُ إِلَّا بِعِلْمِهِ ۚ وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ أَيْنَ شُرَكَائِي قَالُوا آذَنَّاكَ مَا مِنَّا مِن شَهِيدٍ ﴿٤٧﴾

(४७) क़यामत का ज्ञान अल्लाह ही की ओर लौटाया जाता है,[1] तथा जो-जो फल अपने गाभों में से निकलते हैं तथा जो मादा गर्भवती होती है एवम् जो शिशु वह जन्म देती है, सबका ज्ञान उसको है।[2] तथा जिस दिन अल्लाह (तआला) उन (मूर्तिपूजकों) को बुलाकर पूछेगा कि मेरे साझीदार कहाँ हैं; वे उत्तर देंगे कि हमने तो तुझसे कह दिया कि हममें से कोई उसका साक्षी नहीं।[3]

وَضَلَّ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَدْعُونَ مِن قَبْلُ ۖ وَظَنُّوا مَا لَهُم مِّن مَّحِيصٍ ﴿٤٨﴾

(४८) तथा ये (जिन) जिनकी पूजा इससे पूर्व करते थे वे उनकी दृष्टि से ओझल हो गये।[4] तथा उन्होंने समझ लिया कि अब उनके लिए कोई बचाव (का मार्ग) नहीं।[5]

---

[1]अर्थात अल्लाह के सिवा उसके घटित होने का ज्ञान किसी को नहीं। इसीलिये जब माननीय जिब्रील ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से क़यामत के घटित होने के विषय में प्रश्न किया तो आपने फ़रमाया था «مَا الْمَسْئُولُ عَنْهَا بِأَعْلَمَ مِنَ السَّائِلِ». "इस संदर्भ में मुझे भी उतना ही ज्ञान है जितना आपको है, मैं आपसे अधिक नहीं जानता।" दूसरे स्थानों पर अल्लाह ने फ़रमाया : ﴿إِلَىٰ رَبِّكَ مُنتَهَاهَا﴾ (अन्नाज़िआत-४४) ﴿لَا يُجَلِّيهَا لِوَقْتِهَا إِلَّا هُوَ﴾ (अल-आराफ़-१८७)

[2]यह अल्लाह के पूर्ण तथा व्यापक ज्ञान का वर्णन है, तथा उसके इस ज्ञान गुण में कोई उसका साझी नहीं, यहाँ तक कि अम्बिया (अलैहिमुस्सलाम) भी नहीं। उन्हें भी इतना ही ज्ञान होता है जितना अल्लाह तआला (परमेश्वर) उन्हें प्रकाशना द्वारा प्रदान कर देता है तथा इस प्रकाशना द्वारा ज्ञान का संम्बन्ध भी नबूअत (दूतत्व) के पद तथा उसकी माँगों की पूर्ति से होता है, न कि अन्य कला एवं विषयों से सम्बन्धित। इसीलिए किसी भी नबी तथा रसूल को चाहे वह कितना ही मर्यादित हो 'माकान तथा मायकून (भूत एवं भविष्य) का ज्ञाता' कहना वैध (उचित) नहीं, क्योंकि यह मात्र एक अल्लाह की गरिमा एवं विशेषता है जिसमें किसी अन्य को साझी मानना शिर्क (मिश्रणवाद) होगा।

[3]अर्थात आज हममें से कोई यह मानने को तैयार नहीं कि तेरा कोई साझी है।

[4]अर्थात वे इधर-उधर हो गये तथा अनुमान के अनुसार उन्होंने किसी को लाभ नहीं पहुँचाया।

[5]यह अनुमान विश्वास के अर्थ में है। अर्थात वह क़यामत के दिन विश्वास करने पर

(४९) भलाई माँगने से मनुष्य थकता नहीं[1] तथा यदि उसे कोई कष्ट पहुँच जाये तो हताश एवं निराश हो जाता है।[2]

لَا يَسْـَٔمُ الْإِنسَانُ مِن دُعَاءِ الْخَيْرِ وَإِن مَّسَّهُ الشَّرُّ فَيَـُٔوسٌ قَنُوطٌ ﴿٤٩﴾

(५०) तथा जो कष्ट उसे पहुँच चुका है, उसके पश्चात यदि हम उसे किसी दया का स्वाद चखा दें तो वह कह उठता है कि मैं तो इसका अधिकारी ही था[3] तथा मैं तो विचार नहीं कर सकता कि क़यामत व्याप्त होगी तथा यदि मैं अपने प्रभु की ओर लौटाया गया, तो भी निःसंदेह उसके पास भी मेरे लिए भलाई होगी।[4] निःसंदेह हम उन

وَلَئِنْ أَذَقْنَاهُ رَحْمَةً مِّنَّا مِنْ بَعْدِ ضَرَّاءَ مَسَّتْهُ لَيَقُولَنَّ هَٰذَا لِي وَمَا أَظُنُّ السَّاعَةَ قَائِمَةً وَلَئِن رُّجِعْتُ إِلَىٰ رَبِّي إِنَّ لِي عِندَهُ لَلْحُسْنَىٰ فَلَنُنَبِّئَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِمَا عَمِلُوا وَلَنُذِيقَنَّهُم مِّنْ عَذَابٍ غَلِيظٍ ﴿٥٠﴾

वाध्य होंगे कि उन्हें अल्लाह के दण्ड से बचाने वाला कोई नहीं। जैसे दूसरे स्थान पर फ़रमाया :

﴿وَرَأَى الْمُجْرِمُونَ النَّارَ فَظَنُّوا أَنَّهُم مُّوَاقِعُوهَا وَلَمْ يَجِدُوا عَنْهَا مَصْرِفًا﴾

"तथा पापी नरक को देखकर समझ लेंगे कि वे उसी में झोंके जाने वाले हैं, किन्तु उससे बचाव का स्थान न पायेंगे।" (अल-कहफ़-५३)

[1]अर्थात सांसारिक धन-सम्पत्ति, स्वास्थ्य एवं बल, मान-मर्यादा तथा अन्य सांसारिक सुख-सुविधा की माँग करने से इंसान नहीं थकता अपितु माँगता ही रहता है। इंसान से तात्पर्य उनका प्रायत: बहुसंख्यक है।

[2]अर्थात आपदा पहुँचने पर तो तुरन्त निराश हो जाता है जबकि अल्लाह के निःस्वार्थी बन्दों की दशा इससे विभिन्न होती है। एक तो वह दुनिया के अभिलाषी नहीं होते। उनके समक्ष प्रत्येक क्षण आख़िरत ही होती है। दूसरे, दुख पहुँचने पर भी वे अल्लाह की दया एवं कृपा से निराश नहीं होते बल्कि परीक्षाओं को भी पापों का प्रायश्चित तथा पदोन्नति का कारण मानते हैं। मानो निराशा उनके समीप भी नहीं आती।

[3]अर्थात अल्लाह के निकट प्रिय मैं हूँ, वह मुझसे प्रसन्न है। इसलिए मुझे अपने अनुग्रह प्रदान कर रहा है। हालांकि दुनिया की कमी-अधिकता उसके प्रेम अथवा प्रसन्नता का लक्षण (चिन्ह) नहीं है। अपितु अल्लाह केवल परीक्षा के लिए ऐसा करता है ताकि वह देखे कि सुख-सुविधाओं में उसका कृतज्ञ कौन है तथा दुखों में धैर्यवान कौन ?

[4]यह कहने वाला मुनाफ़िक़ (द्वयवादी) अथवा काफ़िर है। कोई ईमानवाला ऐसी बात नहीं

काफ़िरों को उनके कर्मों से अवगत करेंगे तथा उन्हें कठोर यातना का स्वाद चखायेंगे ।

(५१) तथा जब हम मनुष्य पर अपना उपकार करते हैं तो वह विमुख हो जाता है तथा पहलू बदल लेता है;[1] तथा जब उस पर दुख आता है तो बड़ी लम्बी-चौड़ी प्रार्थनायें करने वाला बन जाता है ।[2]

وَإِذَآ أَنْعَمْنَا عَلَى الْإِنسَانِ أَعْرَضَ وَنَا بِجَانِبِهِۦ وَإِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ فَذُو دُعَآءٍ عَرِيضٍ ﴿٥١﴾

(५२) (आप) कह दीजिए कि भला यह तो बताओ कि यदि यह (क़ुरआन) अल्लाह की ओर से आया हुआ हो फिर तुमने उसे न माना तो उससे बढ़कर बहका हुआ कौन होगा[3] जो (सत्य से) विरोध में दूर चला जाये ।[4]

قُلْ أَرَءَيْتُمْ إِن كَانَ مِنْ عِندِ اللَّهِ ثُمَّ كَفَرْتُم بِهِۦ مَنْ أَضَلُّ مِمَّنْ هُوَ فِى شِقَاقٍۭ بَعِيدٍ ﴿٥٢﴾

(५३) शीघ्र ही हम उन्हें अपनी निशानियाँ दुनिया के किनारों में भी दिखायेंगे तथा स्वयं उनके अपने अस्तित्व में भी, यहाँ तक कि उन पर

سَنُرِيهِمْ ءَايَٰتِنَا فِى الْءَافَاقِ وَفِىٓ أَنفُسِهِمْ حَتَّىٰ يَتَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُ الْحَقُّ أَوَلَمْ يَكْفِ بِرَبِّكَ أَنَّهُۥ

कह सकता । काफ़िर ही यह समझता है कि मेरी दुनिया सुख से गुज़र रही है तो आख़िरत भी मेरे लिए ऐसी ही होगी ।

[1]अर्थात सत्य से मुँह फेर लेता तथा सत्य के पालन से अपना पहलू बदल लेता है तथा घमंड दिखाता है ।

[2]अर्थात अल्लाह के सदन में रोता गिड़गिड़ाता है ताकि वह आपदा का निवारण कर दे अर्थात दुख में अल्लाह का स्मरण करता है, सुख में भूल जाता है । आपदा आने के समय गुहार करता है, सुविधा प्राप्ति के समय उसे वह याद नहीं रहता ।

[3]अर्थात ऐसी दशा में तुमसे अधिक विपथ तथा तुमसे बड़ा शत्रु कौन होगा ?

[4] شِقَاق का अर्थ है विरोध, वैर, प्रतिद्वंदता । بَعِيدٍ मिलकर इसमें अतिश्योक्ति हो जाती है । अर्थात जो अत्याधिक विरोध तथा बैर से काम लेता है यहाँ तक कि अल्लाह के अवतरित किये क़ुरआन को भी झुठला देता है, इससे बढ़कर कुपथ तथा दुर्भाग्यशाली कौन हो सकता है ?

عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ شَهِيْدٌ ۝٥٣

खुल जाये कि सत्य यही है।[1] क्या आपके प्रभु का प्रत्येक वस्तु से अवगत होना पर्याप्त नहीं।[2]

اَلَآ اِنَّهُمْ فِىْ مِرْيَةٍ مِّنْ لِّقَآءِ رَبِّهِمْ ۗ اَلَآ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَىْءٍ مُّحِيْطٌ ۝٥٤

(५४) विश्वास करो कि यह लोग अपने प्रभु के समक्ष प्रस्तुत होने में सशंकित हैं।[3] याद रखो कि अल्लाह तआला प्रत्येक वस्तु को घेरे हुए है।[4]

सूरतुश्शूरा -४२

سُوْرَةُ الشُّوْرٰى

सूरः शूरा मक्का में अवतरित हुई और इसमें त्रिपन आयतें तथा पाँच रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

---

[1]जिनसे क़ुरआन का सत्य तथा अल्लाह की ओर से होना स्पष्ट हो जायेगा अर्थात أَنَّهُ में सर्वनाम ه क़ुरआन की ओर संकेत है। कुछ ने उसे इस्लाम अथवा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर बताया है। सबका मूल एक ही है। آفاق यह बहुवचन है أفق का अर्थात किनारा। अभिप्राय यह है कि हम अपनी निशानियाँ बाहर किनारों में भी दिखायेंगे तथा स्वयं इंसानों के भीतर भी। अर्थात आकाशों तथा धरती के किनारों में भी अल्लाह के सामर्थ्य की बड़ी-बड़ी निशानियाँ हैं, जैसे सूर्य, चाँद, तारे, रात्रि, दिन, गरज, चमक, कड़क, बनस्पतियाँ, जड़, पेड़, पर्वत, नहरें तथा नदियाँ आदि। तथा आन्तरिक निशानियों में स्वयं इंसान का अस्तित्व जिन मिश्रणों, धातुओं एवं रचनाओं से युक्त है, वे अभिप्राय हैं, जिनका विवरण विज्ञान तथा आयुर्वेद का रोमांचक विषय है। कुछ कहते हैं कि आफ़ाक़ से अभिप्राय पश्चिम तथा पूर्व के वह दूरस्थ क्षेत्र हैं जिनकी विजय को अल्लाह ने मुसलमानों के लिये सरल कर दिया तथा أنفس से अभिप्राय स्वयं अरब की धरती है जिसमें बद्र तथा मक्का विजय आदि रणों में मुसलमानों को सम्मान तथा सफलता दिया गया।

[2]प्रश्न सकारात्मक है कि अल्लाह अपने बंदों के कर्म एवम् कथन को देखने के लिये प्रर्याप्त है, तथा वही इस बात की गवाही दे रहा है कि क़ुरआन अल्लाह की वाणी है जो उसके सत्य दूत महा माननीय मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर अवतरित हुई।

[3]इसलिए उसके संबंध में विचार नहीं करते, न उसके लिए कर्म करते हैं तथा न उस दिन का कोई भय उनके दिलों में है।

[4]इस आधार पर उसके लिए क़यामत (प्रलय) का घटित करना तनिक भी कठिन नहीं, क्योंकि सभी उत्पत्तियों पर उसी का प्रभुत्व एवं अधिकार है। वह जैसे चाहे उनमें अधिकार करे, करता है तथा कर सकता है। उसे कोई रोकने वाला नहीं।

حٰمٓ ①

(१) हा॰मीम॰ ।

عٓسٓقٓ ②

(२) ऐन॰सीन॰क़ाफ़ ।

كَذٰلِكَ يُوْحِيْٓ اِلَيْكَ وَاِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ ۙ اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ③

(३) अल्लाह तआला जो महान तथा हिक्मत-वाला है, इसी प्रकार तेरी ओर तथा तुझसे पूर्व के लोगों की ओर प्रकाशना भेजता रहा है ।[1]

لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ④

(४) आकाशों की (समस्त) वस्तुयें तथा जो कुछ धरती में है, सब उसी का है तथा वह सर्वोच्च एवं महान है ।

تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْ فَوْقِهِنَّ وَالْمَلٰۗىِٕكَةُ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيَسْتَغْفِرُوْنَ لِمَنْ فِي الْاَرْضِ ۭ اَلَآ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ⑤

(५) निकट है कि आकाश अपने ऊपर से फट पड़ें[2] तथा समस्त फ़रिश्ते अपने प्रभु की पवित्रता महिमागान के साथ वर्णन कर रहे हैं तथा धरती वालों के लिए क्षमा-याचना कर रहे हैं ।[3] खूब समझ रखो कि अल्लाह (तआला) ही क्षमा करने वाला दया करने वाला है ।[4]

---

[1]अर्थात जिस प्रकार यह क़ुरआन तेरी ओर अवतरित किया गया उसी प्रकार तुझसे पहले अम्बिया पर ग्रन्थ तथा शास्त्र अवतरित किये गये । प्रकाशना (वह्यी) वह ईशवाणी है जो फ़रिश्तों द्वारा अल्लाह तआला अपने पैग़म्बरों (संदेशवाहकों) के पास भेजता रहा । एक सहाबी (सहचर) ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से प्रकाशना (वह्यी) की स्थिति पूछी तो आपने फ़रमाया कि कभी घंटी की ध्वनि के समान आती है तथा यह मुझ पर सबसे भारी होती है । जब यह समाप्त हो जाती है तो मुझे याद हो चुकी होती है । तथा कभी फ़रिश्ता इंसानी रूप में आता है एवं मुझसे बात करता है तथा वह जो कहता है मैं स्मरण कर लेता हूँ । आदरणीय आयशा رضي الله عنها कहती हैं कि मैंने कड़े जाड़े में देखा कि जब वह्यी की स्थिति समाप्त होती तो आप पसीने से भीग जाते तथा आप की ललाट से पसीने की बूँदें गिर रही होतीं । (सहीह बुख़ारी, बाबु बदइल वह्यी)

[2]अल्लाह की महानता तथा प्रताप के कारण ।

[3]यह विषय सूर: *मोमिन* की आयत संख्या ७ में भी वर्णित हुआ है ।

[4]अपने मित्रों तथा आज्ञाकारियों के लिए अथवा सभी बंदों के लिये, क्योंकि काफ़िरों तथा

(६) तथा जिन लोगों ने उसके अतिरिक्त अन्यों को कार्यक्षम बना लिया है। अल्लाह (तआला) उन्हें भली-भाँति देख रहा है,[1] तथा आप उनके उत्तरदायी नहीं हैं।[2]

وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مِن دُونِهِ أَوْلِيَاءَ اللَّهُ حَفِيظٌ عَلَيْهِمْ وَمَا أَنتَ عَلَيْهِم بِوَكِيلٍ ⑥

(७) तथा उसी प्रकार हमने आपकी ओर अरबी क़ुरआन की प्रकाशना की है[3] ताकि आप मक्कावासियों को तथा उसके निकटवर्ती क्षेत्र के लोगों को सावधान कर दें[4] तथा एकत्रित होने के दिन से[5] जिसके आने में कोई संदेह नहीं, डरा दें। एक गुट स्वर्ग में होगा तथा एक गुट नरक में होगा।[6]

وَكَذَٰلِكَ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ قُرْآنًا عَرَبِيًّا لِّتُنذِرَ أُمَّ الْقُرَىٰ وَمَنْ حَوْلَهَا وَتُنذِرَ يَوْمَ الْجَمْعِ لَا رَيْبَ فِيهِ فَرِيقٌ فِي الْجَنَّةِ وَفَرِيقٌ فِي السَّعِيرِ ⑦

अवज्ञाकारियों की तुरन्त पकड़ न करना अपितु उन्हें एक निश्चित समय तक अवसर देना, यह भी उसकी दया तथा क्षमा ही का प्रकार है।

[1]अर्थात उनके कर्मों को सुरक्षित कर रहा है ताकि उनको उस पर प्रतिकार दे।

[2]अर्थात आप इस बात के उत्तरदायी नहीं कि उनको संमार्ग पर चला दें अथवा पापों पर उनकी पकड़ करें अपितु यह काम हमारे हैं। आपका कर्तव्य मात्र संदेश पहुँचा देना है।

[3]अर्थात हमने प्रत्येक रसूल को जैसे उसके समुदाय की भाषा में भेजा उसी प्रकार हमने आप पर अरबी भाषा में क़ुरआन अवतरित किया है, क्योंकि आप की जाति यही भाषा समझती तथा बोलती है।

[4] أم القرى (उम्मुल क़ुरा) मक्के का नाम है। इसे 'बस्तियों की माँ' इसलिए कहा गया कि यह अरब की सबसे प्राचीन बस्ती है। जैसेकि यह सभी बस्तियों की माँ है जिन्होंने इसी से जन्म लिया है। तात्पर्य मक्का के निवासी हैं। وَمَنْ حولها में उसके पश्चिम तथा पूर्व के सभी क्षेत्र सम्मिलित हैं। अर्थात उन सब को डराये कि यदि वे कुफ़्र तथा शिर्क से न फिरे तो अल्लाह की यातना के पात्र होंगे।

[5]क़यामत के दिन को एकत्र होने का दिन इसलिए कहा कि उसमें अगले-पिछले सभी इंसान एकत्र होंगे। इसके अतिरिक्त, अत्याचारी एवं पीड़ित तथा ईमानदार एवं काफ़िर सब एकत्र होंगे तथा अपने-अपने कर्मानुसार प्रतिफल अथवा दण्ड पायेंगे।

[6]जो अल्लाह के आदेशों का पालन किया होगा तथा उसकी निषेधित एवं अवैध चीज़ों से

وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَهُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَٰكِن يُدْخِلُ مَن يَشَاءُ فِي رَحْمَتِهِ ۚ وَالظَّالِمُونَ مَا لَهُم مِّن وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ⑧

(८) यदि अल्लाह (तआला) चाहता तो उन सबको एक ही सम्प्रदाय का बना देता [1] परन्तु वह जिसे चाहता है अपनी दया में सम्मिलित कर लेता है, तथा अत्याचारियों का पक्षधर तथा सहायक कोई नहीं।

أَمِ اتَّخَذُوا مِن دُونِهِ أَوْلِيَاءَ ۖ فَاللَّهُ هُوَ الْوَلِيُّ وَهُوَ يُحْيِي الْمَوْتَىٰ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ⑨

(९) क्या उन लोगों ने अल्लाह (तआला) के अतिरिक्त अन्य संरक्षक बना लिये हैं, (वास्तव में तो) अल्लाह (तआला) ही संरक्षक है, वही मृतकों को जीवित करेगा तथा वही प्रत्येक वस्तु पर सामर्थ्यवान है।[2]

وَمَا اخْتَلَفْتُمْ فِيهِ مِن شَيْءٍ فَحُكْمُهُ إِلَى اللَّهِ ۚ ذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبِّي

(१०) तथा जिस-जिस बात में तुम्हारा मतभेद हो उसका निर्णय अल्लाह (तआला) ही की ओर है,[3] यही अल्लाह मेरा प्रभु है जिस पर मैंने

दूर रहा होगा वह स्वर्ग में, तथा उसकी अवज्ञा तथा निषेधित चीज़ों का करने वाला नरक में होगा। यही दो गिरोह होंगे, तीसरा गिरोह नहीं होगा।

[1]इस दशा में क़यामत (प्रलय) के दिन मात्र एक ही गिरोह होता अर्थात ईमानवालों तथा स्वर्गवासियों का, किन्तु अल्लाह की हिक्मत तथा इच्छा ने इस दबाव को पसंद नहीं किया बल्कि इंसानों की परीक्षा के लिए उसने इंसानों को इरादे तथा पसंद (छूट) की स्वाधीनता दी। जिसने इस स्वाधीनता का सही प्रयोग किया वह अल्लाह की दया का पात्र हो गया तथा जिसने इसका ग़लत प्रयोग किया उसने अत्याचार किया कि अल्लाह की प्रदान की हुई स्वतंत्रता एवं छूट को अल्लाह ही की अवज्ञा में प्रयोग किया। इसलिए ऐसे अत्याचारियों का क़यामत के दिन कोई सहायक नहीं होगा।

[2]जब यह बात है तो फिर अल्लाह तआला ही इस योग्य है कि उसे संरक्षक तथा कार्यक्षम माना जाये न कि उनको जिनके पास कोई अधिकार ही नहीं है, तथा जो सुनने एवं जवाब देने की शक्ति रखते हैं न हानि तथा लाभ पहुँचाने की क्षमता।

[3]इस मतभेद से अभिप्राय धर्म का मतभेद है। जैसे यहूदियत, ईसाईयत तथा इस्लाम आदि में परस्पर मतभेद है तथा प्रत्येक धर्म वाला लम्बा दावा करता है कि उसका धर्म सच्चा है, जबकि सभी धर्म एक समय में सही नहीं हो सकते। सत्यधर्म तो मात्र एक ही है तथा एक ही हो सकता है। दुनिया में सच्चे धर्म तथा संमार्ग की पहचान के लिए अल्लाह का

عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ أُنِيبُ ⑩

भरोसा कर रखा है, तथा जिसकी ओर मैं झुकता हूँ।

فَاطِرُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۚ جَعَلَ لَكُم مِّنْ أَنفُسِكُمْ أَزْوَاجًا وَمِنَ الْأَنْعَامِ أَزْوَاجًا ۖ يَذْرَؤُكُمْ فِيهِ ۚ لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ ۖ وَهُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ⑪

(११) वह आकाश तथा धरती को पैदा करने वाला है। उसने तुम्हारे लिए तुम्हारी जाति के जोड़े बना दिये हैं[1] तथा चौपायों के जोड़े बनाये हैं;[2] तुम्हें वह उसमें फैला रहा है,[3] उस जैसी कोई वस्तु नहीं;[4] वह सुनने वाला देखने वाला है।

لَهُ مَقَالِيدُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۖ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ

(१२) आकाशों तथा धरती की चाभियाँ उसी की हैं,[5] जिसकी चाहे जीविका विस्तृत कर

कुरआन मौजूद है किन्तु संसार में लोग इस ईशवाणी को अपना निर्णायक तथा मध्यस्थ मानने को तैयार नहीं। अंततः फिर क़यामत (प्रलय) का दिन ही रह जाता है जिसमें अल्लाह इस मतभेद का निर्णय करेगा तथा सच्चों को स्वर्ग में एवं दूसरों को नरक में प्रवेश करायेगा।

[1]अर्थात यह अल्लाह का अनुग्रह है कि तुम्हारी जाति ही से उसने तुम्हारे जोड़े बनाये अन्यथा यदि तुम्हारी पत्नियाँ इंसान के अलावा किसी अन्य जाति से बनाई जातीं तो तुम्हें यह शान्ति प्राप्त न होती जो अपनी सहजाति तथा समरूप पत्नी से प्राप्त होती है।

[2]अर्थात जोड़े बनाने (नर-मादा) का यही क्रम हमने चौपायों में भी रखा है। चौपाये से अभिप्राय वही नर-मादा आठ जानवर हैं जिनका वर्णन *सूरतुल अन्आम* में किया गया है।

[3] يَذْرَؤُكُمْ का अर्थ फैलाना अथवा पैदा करना है, अर्थात तुम्हें अधिकता से फैला रहा है अथवा संतान के बाद संतान पैदा कर रहा है, इंसानी वंश को भी तथा चौपायों के वंश को भी। فِيهِ का अर्थ है فِي ذالك الخلق على هـذه الصِّفَةِ अर्थात इस पैदाईश में इस रीति से वह तुम्हें आरम्भ से पैदा करता आ रहा है। अथवा 'माता के गर्भाशय में' अथवा 'पेट में' अभिप्राय है, अथवा فِيهِ यह بِهِ के अर्थ में है। अर्थात तुम्हारा जोड़ा बनाने के कारण से तुम्हें पैदा करता तथा फैलाता है क्योंकि यह जोड़ा होना ही संतान का कारण है। (फ़तहुल क़दीर तथा इब्ने कसीर)

[4]न अस्तित्व में न विशेष गुणों में। अतः वह अपना सदृश स्वयं ही है एक तथा निस्पृह।

[5] مَقَالِيدُ यह مِقْلَادٌ - مِقْلِيدٌ का बहुवचन है, कोष अथवा चाभियाँ।

إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ⑫

दे तथा संकुचित कर दे। निःसंदेह वह प्रत्येक वस्तु का जानने वाला है।

شَرَعَ لَكُم مِّنَ الدِّينِ مَا وَصَّىٰ بِهِ نُوحًا وَالَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ وَمَا وَصَّيْنَا بِهِ إِبْرَاهِيمَ وَمُوسَىٰ وَعِيسَىٰ أَنْ أَقِيمُوا الدِّينَ وَلَا تَتَفَرَّقُوا فِيهِ كَبُرَ عَلَى الْمُشْرِكِينَ مَا تَدْعُوهُمْ

(१३) अल्लाह (तआला) ने तुम्हारे लिए वही धर्म निर्धारित कर दिया है जिसको स्थापित करने का उसने नूह (अलैहिस्सलाम) को आदेश दिया था, जो (प्रकाशना के द्वारा) हमने तेरी ओर भेज दिया है तथा जिसका विशेष आदेश हमने इब्राहीम तथा मूसा एवं ईसा (अलैहिमुस्सलाम) को दिया था।[1] कि इस धर्म को स्थापित रखना[2] तथा इसमें फूट न डालना।[3] जिस वस्तु

---

[1] شَرَعَ का अर्थ है वर्णन किया, स्पष्ट किया तथा निर्धारित किया, لَكُمْ तुम्हारे लिये। यह मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के समुदाय से संबोधन है। अभिप्राय है कि तुम्हारे लिये वही धर्म नियुक्त किया है जिसका आदेश इससे पूर्व सभी अंबिया को दिया जाता रहा है। इस संदर्भ में कुछ श्रेष्ठ अंबिया के नाम का वर्णन किया।

[2] الدِّين (अद्दीन) से अभिप्राय अल्लाह के प्रति ईमान, तौहीद (अद्वैत), रसूल का अनुपालन तथा ईश्वरीय धर्म-विधान को मानना है। सभी अंबिया (ईशदूतों) का यही धर्म था जिसका आमन्त्रण वह अपनी जाति को देते रहे। यद्यपि प्रत्येक नबी के धर्म-विधान तथा तरीके में आंशिक मतभेद होते थे, जैसाकि फ़रमाया :

﴿لِكُلٍّ جَعَلْنَا مِنكُمْ شِرْعَةً وَمِنْهَاجًا﴾

"तुममें से प्रत्येक के लिए हमने एक विधान तथा मार्ग निर्धारित कर दिया है।" *(अल-मायेदा-४८)*

किन्तु उपरोक्त नियम सबमें साझा थे। इसी बात को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इन शब्दों में वर्णित किया कि हम अम्बिया का समूह एक पिता की संतान हैं, हमारा धर्म एक है। (सहीह बुख़ारी आदि) तथा यह एक धर्म वही तौहीद (अद्वैत) तथा रसूल का अनुपालन है। अर्थात इनका संबन्ध उन आंशिक समस्याओं से नहीं जिनमें प्रमाण परस्पर भिन्न तथा विपरीत होते हैं, क्योंकि उनमें प्रयत्न अथवा मतभेद की छूट होती है तथा यह विभिन्न होते हैं तथा हो सकते हैं। परन्तु तौहीद एवं अनुपालन आंशिक नहीं, मूल समस्या है जिस पर कुफ़्र तथा ईमान निर्भर हैं।

[3] मात्र एक अल्लाह की इबादत तथा उसी का आज्ञापालन (अथवा उसके रसूल का

اِلَيۡهِ ؕ اَللّٰهُ يَجۡتَبِىۡۤ اِلَيۡهِ مَنۡ يَّشَآءُ وَيَهۡدِىۡۤ اِلَيۡهِ مَنۡ يُّنِيۡبُ ۝١٣

की ओर आप उन्हें बुला रहे हैं वह तो (उन) मिश्रणवादियों पर भारी होती है।[1] अल्लाह (तआला) जिसे चाहे अपना चुना हुआ बनाता है[2] तथा जो भी उसकी ओर ध्यानमग्न होता है वह उनका उचित मार्गदर्शन करता है।[3]

وَمَا تَفَرَّقُوۡۤا اِلَّا مِنۡۢ بَعۡدِ مَا جَآءَهُمُ الۡعِلۡمُ بَغۡيًۢا بَيۡنَهُمۡ ؕ وَلَوۡلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتۡ مِنۡ رَّبِّكَ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى لَّقُضِىَ بَيۡنَهُمۡ ؕ وَاِنَّ الَّذِيۡنَ اُوۡرِثُوا الۡكِتٰبَ مِنۡۢ بَعۡدِهِمۡ لَفِىۡ شَكٍّ مِّنۡهُ مُرِيۡبٍ ۝١٤

(१४) तथा उन लोगों ने अपने पास ज्ञान आ जाने के पश्चात मतभेद किया (तथा वह भी) आपसी हठधर्मी से,[4] तथा यदि आपके प्रभु की बात एक निश्चित समय तक के लिए पूर्व ही से निर्धारित की गयी हुई न होती तो निःसंदेह उनका निर्णय हो चुका होता,[5] तथा जिन लोगों को उनके पश्चात किताब प्रदान की गयी है वे भी उसकी ओर से संदेह तथा असमंजस्य में पड़े हुए हैं।[6]

अनुपालन जो वास्तव में अल्लाह ही का आज्ञापालन है) एकता तथा मेल-जोल का आधार है तथा उसकी उपासना एवं आज्ञापालन से भागना अथवा इनमें अन्यों को साझी बनाना फूट एवं विच्छिन्नता का कारण है, "जिससे फूट न डालना" कह कर रोका गया है।

[1]तथा वह वही तौहीद एवं अल्लाह व रसूल का आज्ञापालन है।

[2]अर्थात जिसे मार्गदर्शन का पात्र समझता है उसे मार्गदर्शन के लिये चयन कर लेता है।

[3]अर्थात अपना धर्म अपनाने तथा इबादत को अल्लाह के लिए विशुद्ध करने का सौभाग्य उसे देता है जो उसके आज्ञापालन तथा उपासना की ओर ध्यान करता है।

[4]अर्थात उन्होंने विरोध तथा फूट का मार्ग ज्ञान अर्थात मार्गदर्शन आ जाने तथा तर्क के पूरे हो जाने के पश्चात अपनाया जबकि फूट (विरोध) का कोई औचित्य शेष नही रह जाता किन्तु मात्र शत्रुता, हठधर्मी तथा ईर्ष्या के कारण ऐसा किया। इससे कुछ ने यहूद तथा कुछ मक्का के कुरैश तात्पर्य लिये हैं।

[5]अर्थात यदि उनके विषय में दण्ड में विलम्ब का निर्णय न होता तो तत्क्षण प्रकोप भेजकर उनका विनाश कर दिया जाता।

[6]इससे अभिप्राय यहूदी तथा ईसाई हैं जो अपने से पहले के यहूदियों तथा इसाईयों के

فَلِذَٰلِكَ فَادْعُ ۖ وَاسْتَقِمْ
كَمَا أُمِرْتَ ۖ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَهُمْ ۖ
وَقُلْ آمَنتُ بِمَا أَنزَلَ اللَّهُ
مِن كِتَابٍ ۖ وَأُمِرْتُ لِأَعْدِلَ
بَيْنَكُمُ ۖ اللَّهُ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ ۖ
لَنَا أَعْمَالُنَا وَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ ۖ
لَا حُجَّةَ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمُ ۖ اللَّهُ
يَجْمَعُ بَيْنَنَا ۖ وَإِلَيْهِ الْمَصِيرُ ﴿١٥﴾

(१५) तो आप लोगों को उसी ओर बुलाते रहें, तथा जो कुछ आप से कहा गया है उस पर दृढ़ता से रहें,[1] तथा उनकी इच्छाओं पर न चलें,[2] तथा कह दें कि अल्लाह तआला ने जितनी किताबें अवतरित की हैं मेरा उन पर ईमान है, तथा मुझे आदेश दिया गया है कि तुममें न्याय[3] करता रहूँ। हमारा तथा तुम सबका प्रभु अल्लाह ही है। हमारे कर्म हमारे लिए हैं तथा तुम्हारे कर्म तुम्हारे लिए हैं। हम तुममें कोई विवाद नहीं।[4] अल्लाह (तआला) हम सबको एकत्रित करेगा तथा उसी की ओर लौट कर जाना है।

وَالَّذِينَ يُحَاجُّونَ فِي اللَّهِ مِن بَعْدِ
مَا اسْتُجِيبَ لَهُ حُجَّتُهُمْ
دَاحِضَةٌ عِندَ رَبِّهِمْ وَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ

(१६) तथा जो लोग अल्लाह (तआला) की बातों में झगड़ा डालते हैं इसके बाद कि (सृष्टि) उसे मान चुकी[5] है, उनका विवाद

पश्चात किताब अर्थात धर्मशास्त्र तौरात तथा इंजील के उत्तराधिकारी बनाये गये। अथवा अरबवासी अभिप्राय हैं जिनमें अल्लाह तआला ने अपना पवित्र क़ुरआन अवतरित किया तथा उन्हें क़ुरआन का उत्तराधिकारी बनाया। पहले अर्थ के अनुसार الكتاب (अलकिताब) से अभिप्राय तौरात तथा इंजील एवं दूसरे भावार्थानुसार इससे तात्पर्य पवित्र क़ुरआन है।

[1]अर्थात इस फूट तथा शंका के कारण जिसकी चर्चा पहले हुई, उसका खण्डन करने के लिए आप उनको तौहीद की दावत (आमंत्रण) दें तथा उस पर अडिग रहें।

[2]अर्थात उन्होंने अपनी इच्छा से जो चीज़े गढ़ ली हैं, जैसे मूर्तियों की पूजा आदि, इसमें उनकी आकांक्षा के पीछे न चलें।

[3]अर्थात जब भी तुम अपना कोई विवाद (समस्या) मेरे पास लाओगे तो अल्लाह के आदेशों के अनुसार उसका न्याय के साथ निर्णय कर दूँगा।

[4]अर्थात कोई झगड़ा नहीं क्योंकि सत्य स्पष्ट हो चुका है।

[5]अर्थात यह मूर्तिपूजक मुसलमानों से लड़ते झगड़ते हैं, जिन्होंने अल्लाह तथा रसूल की बात मान ली है, ताकि उन्हें फिर संमार्ग से विचलित कर दें। अथवा अभिप्राय यहूदी

وَلَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ﴿١٦﴾

अल्लाह के निकट असत्य है ।[1] तथा उन पर क्रोध है तथा उनके लिए कठोर यातनायें हैं ।

اَللّٰهُ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ وَالْمِيْزَانَ ؕ وَمَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ قَرِيْبٌ ﴿١٧﴾

(१७) अल्लाह (तआला) ने सत्य के साथ किताब अवतरित की है तथा तराज़ू भी (उतारी है)[2] तथा आपको क्या पता कि शायद क़यामत निकट ही हो ।[3]

يَسْتَعْجِلُ بِهَا الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهَا ۚ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مُشْفِقُوْنَ

(१८) उसकी जल्दी उन्हें पड़ी है जो उस पर ईमान नहीं रखते [4] तथा जो उस पर विश्वास

तथा ईसाई हैं जो मुसलमानों से झगड़ते थे तथा कहते थे कि हमारा धर्म तुम्हारे धर्म से उत्तम है तथा हमारा नबी तुम्हारे नबी से पहले हुआ है, इसलिए हम तुमसे उत्तम हैं ।

[1] داحِضَةٌ का अर्थ, कमज़ोर, बातिल के हैं जिसको टिकना नहीं ।

[2] الكِتـاب (अलकिताब) से अभिप्राय जातिवाचक धर्मग्रन्थ है अर्थात सभी पैग़म्बरों पर जितनी भी किताबें अवतरित हुईं, वह सब सत्य थीं अथवा विशेष रूप से पवित्र क़ुरआन अभिप्राय है, तथा उसकी सत्यता को स्पष्ट किया जा रहा है । ميزان (मीज़ान-तुला) से तात्पर्य इंसाफ़ तथा न्याय है । न्याय को तुला इसलिए बताया कि यह बराबरी तथा इंसाफ़ का यन्त्र (साधन) है । इसके समानार्थी यह आयात भी हैं ।

﴿لَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِالْبَيِّنَٰتِ وَأَنزَلْنَا مَعَهُمُ ٱلْكِتَٰبَ وَٱلْمِيزَانَ لِيَقُومَ ٱلنَّاسُ بِٱلْقِسْطِ﴾

"नि:सन्देह हम ने अपने संदेष्टाओं को स्पष्ट प्रमाण देकर भेजा तथा उनके साथ ग्रन्थ एवं न्याय अवतरित किया ताकि लोग न्याय पर स्थापित रहें ।" (*सूर: अल-हदीद-२५*)

﴿وَٱلسَّمَآءَ رَفَعَهَا وَوَضَعَ ٱلْمِيزَانَ ۞ أَلَّا تَطْغَوْا۟ فِى ٱلْمِيزَانِ ۞ وَأَقِيمُوا۟ ٱلْوَزْنَ بِٱلْقِسْطِ وَلَا تُخْسِرُوا۟ ٱلْمِيزَانَ﴾

"उसी ने आकाश को उच्च किया तथा उसी ने तुला स्थापित किया ताकि तुम तौलने में कमी-वेशी न करो । न्याय के साथ वज़न को ठीक रखो तथा तौल में कमी न करो ।" (*सूर: रहमान-७-९*)

[3] قريب पुरूषलिंग तथा स्त्रीलिंग दोनों के विशेषण के लिये आता है । ﴿إِنَّ رَحْمَتَ ٱللَّهِ قَرِيبٌ مِّنَ ٱلْمُحْسِنِينَ﴾ (फ़तहुल क़दीर)

[4] अर्थात परिहास स्वरूप यह समझते हुए कि इसको आना ही कहाँ है ? इसलिए कहते हैं

مِنْهَا وَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهَا الْحَقُّ ۭ اَلَآ اِنَّ الَّذِيْنَ يُمَارُوْنَ فِي السَّاعَةِ لَفِيْ ضَلٰلٍۢ بَعِيْدٍ ⑱

रखते हैं वे तो उससे डर[1] रहे हैं एवं उन्हें उसे सत्य होने का पूर्ण ज्ञान है। याद रखो, जो लोग क़यामत के विषय में लड़-झगड़ रहे हैं[2] वे दूर की गुमराही में पड़े हुए हैं।[3]

اَللّٰهُ لَطِيْفٌۢ بِعِبَادِهٖ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَاۗءُ ۚ وَهُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيْزُ ⑲

(१९) अल्लाह (तआला) अपने भक्तों पर बड़ा ही कृपा करने वाला है, जिसे चाहता है अत्याधिक जीविका प्रदान करता है। तथा वह अति शक्तिशाली, अति प्रभावशाली है।

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الْاٰخِرَةِ نَزِدْ لَهٗ فِيْ حَرْثِهٖ ۚ وَمَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ

(२०) जिसका विचार आख़िरत की खेती का हो हम उसे उसकी खेती में और वृद्धि करेंगे,[4] तथा जो साँसारिक खेती की कामना करता हो

कि क़यामत शीघ्र आये।

[1]इसलिए कि एक तो उनको उसके होने का पूरा विश्वास है। दूसरे उनको भय है कि उस दिन निष्पक्ष हिसाब होगा, कहीं वह भी अल्लाह की पकड़ में न आ जायें। जैसे दूसरे स्थान पर आया है :

﴿ وَالَّذِيْنَ يُؤْتُوْنَ مَآ اٰتَوْا وَّقُلُوْبُهُمْ وَجِلَةٌ اَنَّهُمْ اِلٰى رَبِّهِمْ رٰجِعُوْنَ ﴾

"तथा जो लोग देते हैं जो कुछ देते हैं, तथा उनके हृदय कंपित होते हैं कि वे अपने प्रभु की ओर लौटने वाले हैं।" (*अल-मोमिनून-६०*)

[2] يُمَارُون (युमारून) مُمَارَاة से बना है। जिसका अर्थ लड़ना-झगड़ना है। अथवा مِرْيَة (मिर्यतुन) से है जिसका अर्थ शंका तथा संदेह है।

[3]इसलिए कि वह तर्कों पर चिंतन-मनन नहीं करते जो ईमान लाने के कारण बन सकते हैं जबकि यह प्रमाण रात-दिन उनके दर्शन में आते हैं, उनकी आँखों से गुज़रते हैं तथा उनकी बुद्धि एवं बोध में आ सकते हैं। अत: वे सत्य से बहुत दूर जा पड़े हैं।

[4] حَرْث का अर्थ बीज बोना है। यहाँ रूपक के रूप में कर्मों के फल तथा लाभ पर बोला गया है। अभिप्राय यह है कि जो व्यक्ति संसार में अपने कर्म तथा श्रम के द्वारा परलोक के पुण्य तथा प्रतिफल का अभिलाषी है तो अल्लाह उसकी परलोक की खेती में इस प्रकार बढ़ायेगा कि एक सत्कर्म का पुण्य दस गुना से लेकर सात सौ गुना तक भी प्रदान करेगा।

مِنْهَا وَمَا لَهُۥ فِى ٱلْـَٔاخِرَةِ مِن نَّصِيبٍ ﴿٢٠﴾

हम उसे उसमें से ही कुछ दे देंगे ।[1] ऐसे व्यक्ति का आख़िरत (परलोक) में कोई भाग नहीं है ।[2]

أَمْ لَهُمْ شُرَكَٰٓؤُا۟ شَرَعُوا۟ لَهُم مِّنَ ٱلدِّينِ مَا لَمْ يَأْذَنۢ بِهِ ٱللَّهُ ۚ وَلَوْلَا كَلِمَةُ ٱلْفَصْلِ لَقُضِىَ بَيْنَهُمْ ۗ وَإِنَّ ٱلظَّٰلِمِينَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٢١﴾

(२१) क्या उन लोगों ने ऐसे (अल्लाह के) साझीदार (निर्धारित कर रखे) हैं जिन्होंने ऐसे धार्मिक आदेश निर्धारित कर दिये हैं, जो अल्लाह के कहे हुए नहीं हैं ।[3] यदि निर्णय के दिन का वचन न होता तो (अभी ही) उनमें निर्णय कर दिया जाता । नि:संदेह (उन) अत्याचारियों के लिए ही कष्टदायी यातनायें हैं ।

تَرَى ٱلظَّٰلِمِينَ مُشْفِقِينَ مِمَّا كَسَبُوا۟ وَهُوَ وَاقِعٌۢ بِهِمْ ۗ وَٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَعَمِلُوا۟ ٱلصَّٰلِحَٰتِ فِى رَوْضَاتِ ٱلْجَنَّاتِ ۖ لَهُم

(२२) आप देखेंगे कि (ये) अत्याचारी अपने कर्मों से डर रहे होंगे[4] जो नि:संदेह उन पर घटित होने वाला है,[5] तथा जो लोग ईमान लाये तथा उन्होंने पुण्य के कार्य भी किये वे

---

[1]अर्थात दुनिया के अभिलाषी को दुनिया तो मिलती है किन्तु इतनी नहीं जितनी वह चाहता है, अपितु उतनी ही मिलती हो जितनी अल्लाह की इच्छा तथा भाग्य-लेख के अनुसार होती है ।

[2]यह वही विषय है जो *सूर: बनी इस्राईल* १८ में भी वर्णित हुआ है । अभिप्राय यह है की दुनिया तो अल्लाह प्रत्येक को अवश्य देता है जितनी उसने लिख दी है, क्योंकि उसने सबकी जीविका का भार ले रखा है, दुनिया के इच्छुक का भी तथा परलोक के इच्छुक का भी । फिर भी जो परलोक का आर्जन एवं श्रम करेगा तो क़यामत के दिन परमेश्वर उसे कई गुना पुण्य तथा प्रतिफल प्रदान करेगा, जब कि दुनिया के अभिलाषी के लिए परलोक में नरक की यातना के अलावा कुछ नहीं होगा । अब यह इंसान को स्वयं सोच लेना चाहिए कि उसका लाभ माया-मोह में है अथवा परलोक का इच्छुक बनने में ।

[3]अर्थात शिर्क तथा पाप, जिनकी आज्ञा अल्लाह ने नहीं दी है उनके बनाये साझीदारों ने इंसानों को इस मार्ग पर लगा दिया है ।

[4]अर्थात क़यामत के दिन ।

[5]हालांकि डरना व्यर्थ होगा क्योंकि अपने किये का दण्ड तो उन्हें प्रत्येक दशा में भुगतना होगा ।

مَا يَشَآءُونَ عِندَ رَبِّهِمْ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيرُ ﴿٢٢﴾

स्वर्ग के बाग़ों में होंगे, वे जो इच्छा करेंगे अपने प्रभु के पास उपस्थित पायेंगे, यही है महान अनुग्रह।

ذَٰلِكَ الَّذِي يُبَشِّرُ اللَّهُ عِبَادَهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ ۗ قُل لَّا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا إِلَّا الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبَىٰ ۗ وَمَن يَقْتَرِفْ حَسَنَةً نَّزِدْ لَهُ فِيهَا

(२३) यही वह है जिसकी शुभसूचना अल्लाह (तआला) अपने उन भक्तों को दे रहा है, जो ईमान लाये तथा (सुन्नत के अनुसार) कर्म किये, तो कह दीजिए कि मैं उस पर तुमसे कोई बदला नहीं चाहता परन्तु नातेदारी का प्रेम,[1] और जो व्यक्ति पुण्य करे हम उसके

---

[1]कुरैश के गोत्र तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में नातेदारी का सम्बन्ध था। आयत का अभिप्राय पूर्णतः स्पष्ट है कि मैं धर्म के प्रचार-प्रसार तथा शिक्षा-दिक्षा पर कोई बदला नहीं चाहता। हाँ, एक वस्तु का प्रश्न अवश्य है कि मेरे तथा तुम्हारे बीच जो नातेदारी है, उस पर ध्यान दो। तुम मेरी बात नहीं मानते तो न मानो, तुम्हारी इच्छा किन्तु मुझे क्षति पहुँचाने से तो रूके रहो। तुम मेरे सहायक नहीं बन सकते तो संबंधी के नाते मुझे कष्ट न दो तथा मेरे मार्ग में रोड़ा तो न बनो कि मैं रिसालत (उपदेश पहुँचाने) का दायित्व पूरा कर सकूँ। आदरणीय इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हुमा ने इसका अर्थ लिया है कि मेरे तथा तुम्हारे मध्य जो निकटता तथा संबंध है उसे स्थापित रखो। (सहीह बुख़ारी, *तफ़सीर सूरतिश्शूरा*) नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का परिवार निश्चय वंश के आधार पर दुनिया का श्रेष्ठतम परिवार है जिससे प्रेम, उसका सम्मान तथा आदर ईमान का अंश है, इसलिए कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने कथनों (हदीसों) में उनके सम्मान तथा सुरक्षा पर बल दिया है। किन्तु इस आयत का कोई संबंध उस विषय से नहीं है जैसाकि शीआ लोग खींच-तानकर इस आयत को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के परिवार के प्रेम के साथ जोड़कर परिवार को भी सीमित करते हैं, फिर आपके परिवार को भी उन्होंने आदरणीय अली तथा फ़ातिमा एवं हसन-हुसैन तक सीमित कर दिया है। साथ ही प्रेम का अर्थ भी उनके निकट यह है कि उन्हें निष्पाप तथा ईश्वरीय अधिकारों से युक्त माना जाये। इसके सिवाय मक्का के काफ़िरों से अपने परिवार प्रेम की माँग आमन्त्रण के पारिश्रमिक (मज़दूरी) स्वरूप अति विचित्र बात है जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उच्चतम मर्यादा से बहुत पतित है, आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के आमन्त्रण को स्वीकार न करने के बावजूद आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की माँग तो केवल निकटता एवं सम्बन्धी होने के आधार पर प्रेम स्थापित रखने की थी। फिर यह आयत तथा सूरः मक्की है जबकि आदरणीय अली (रज़ि अल्लाहु अन्हु) तथा फ़ातिमा (रज़ि अल्लाहु अन्हा) के बीच विवाह बन्धन भी

حُسْنًا ۭ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ ۝

पुण्य में और अधिक बढ़ा देंगे ।[1] निश्चय ही अल्लाह (तआला) अत्यन्त क्षमाशील तथा अत्याधिक गुणग्राही है ।[2]

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰى عَلَي اللّٰهِ كَذِبًا ۚ فَاِنْ يَّشَاِ اللّٰهُ يَخْتِمْ عَلٰي قَلْبِكَ ۭ وَيَمْحُ اللّٰهُ الْبَاطِلَ وَيُحِقُّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ ۭ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝

(२४) क्या ये कहते हैं (कि पैग़म्बर ने) अल्लाह पर मिथ्यारोपण कर लिया है यदि अल्लाह (तआला) चाहे तो आपके दिल पर मुहर लगा दे [3] तथा अल्लाह (तआला) अपनी बातों से असत्य को मिटा देता है [4] तथा सत्य को सिद्ध रखता है । वह सीने की बातों का जानने वाला है ।

وَهُوَ الَّذِيْ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَيَعْفُوْا عَنِ السَّيِّاٰتِ

(२५) तथा वही है जो अपने बन्दों की क्षमा-याचना को स्वीकार करता है [5] तथा पापों को

स्थापित नहीं हुआ था । अर्थात अभी वह घराना अस्तित्व में ही नहीं आया था जिसके स्वयं कृत प्रेम की सिद्धि इस आयत से की जाती है ।

[1]अर्थात पुण्य एवं प्रतिफल बढ़ायेंगे । अथवा नेकी का बदला अत्याधिक नेकी करने की संमति स्वरूप प्रदान करेंगे जैसे बुराई का बदला अधिक बुराईयों का करना है ।

[2]अत: वह पर्दा डालता तथा क्षमा कर देता है तथा अधिक से अधिक प्रतिफल प्रदान करता है ।

[3]अर्थात इस आरोप में यदि सच्चाई होती तो हम आपके दिल पर मुहर लगा देते जिससे वह क़ुरआन ही मिट जाता, जिसके गढ़ने को आप से सम्बन्धित किया जाता है । अभिप्राय यह है कि हम आप को कड़ी यातना देते ।

[4]यह क़ुरआन भी यदि असत्य होता (जैसाकि झुठलाने वालों का दावा है) तो निश्चय अल्लाह तआला उसको भी मिटा देता जैसाकि उसकी नीति है ।

[5]तौबा का अभिप्राय है पाप पर पश्चाताप तथा लज्जित होना तथा भविष्य में उसको न करने का संकल्प । केवल मुख से तौबा-तौबा कर लेना अथवा उस पाप तथा अवज्ञा के कर्म को तो न छोड़ना तथा तौबा का प्रदर्शन करना तौबा नहीं है । यह उपहास तथा परिहास है । फिर भी शुद्ध तथा सच्ची तौबा अल्लाह अवश्य स्वीकार करता है ।

وَيَعْلَمُ مَا تَفْعَلُونَ ﴿٢٥﴾

क्षमा करता है, तथा जो कुछ तुम कर रहे हो सब जानता है।

وَيَسْتَجِيبُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَيَزِيدُهُم مِّن فَضْلِهِ ۚ وَالْكَافِرُونَ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ﴿٢٦﴾

(२६) तथा ईमानवालों एवं सदाचारियों की सुनता है [1] तथा उन्हें अपनी कृपा से और अधिक प्रदान करता है, तथा काफ़िरों के लिए कठोर यातना है।

وَلَوْ بَسَطَ اللَّهُ الرِّزْقَ لِعِبَادِهِ لَبَغَوْا فِي الْأَرْضِ وَلَٰكِن يُنَزِّلُ بِقَدَرٍ مَّا يَشَاءُ ۚ إِنَّهُ بِعِبَادِهِ خَبِيرٌ بَصِيرٌ ﴿٢٧﴾

(२७) तथा यदि अल्लाह (तआला) अपने सब बन्दों की जीविका विस्तृत कर देता तो वे धरती पर उपद्रव मचा[2] दते, परन्तु वह अनुमान से जो कुछ चाहता है अवतरित करता है। वह अपने बंदों से भली-भाँति सूचित है तथा भली-भाँति देखने वाला है।

وَهُوَ الَّذِي يُنَزِّلُ الْغَيْثَ مِن بَعْدِ مَا قَنَطُوا وَيَنشُرُ رَحْمَتَهُ ۚ

(२८) तथा वही है जो लोगों के निराश हो जाने के पश्चात वर्षा करता है[3] तथा अपनी

[1]अर्थात उनकी विनय सुनता तथा उनकी इच्छा एवं कामनायें पूरी करता है किन्तु आवश्यक है कि प्रार्थना के प्रतिबंधों तथा नियमों का पूरा पालन किया जाये। हदीसों में आता है कि अल्लाह अपने बन्दे की तौबा (क्षमा-याचना) से उस व्यक्ति से भी अधिक प्रसन्न होता है जिसकी सवारी खाने-पीने के सामान सहित वन में खो जाये तथा वह निराश होकर किसी पेड़ के नीचे सो जाये कि सहसा उसे अपनी सवारी मिल जाये और हर्षोल्लास में उसके मुख से निकल जाये कि हे अल्लाह तू मेरा बंदा तथा मैं तेरा प्रभु हूँ, अर्थात अति आनंद में वह गलती कर जाये। (सहीह मुस्लिम किताबुत्तौबा बाबुन फ़िल हद्दे अलत् तौबा वल फर्हे बिहा)

[2]अर्थात यदि अल्लाह प्रत्येक व्यक्ति को आवश्यकता तथा ज़रूरत से अधिक एक समान जीविका के साधन प्रदान कर देता तो उसका परिणाम यह होता कि कोई किसी की अधीनता स्वीकार न करता। प्रत्येक व्यक्ति उपद्रव तथा बुराई एवं अत्याचार सीमा उल्लंघन में एक से बढ़ कर एक होता तथा जगत उपद्रव से भर जाता।

[3]अर्थात जो जीविका की उपज में सबसे अधिक लाभदायक तथा महत्वपूर्ण है। यह वर्षा जब निराशा के पश्चात होती है तो इस अनुग्रह का संवेदन भी उसी समय होता है। अल्लाह तआला के ऐसा करने में हिक्मत भी यही है कि बन्दे अल्लाह के प्रदानों का सम्मान करें तथा उसकी कृतज्ञता दिखायें।

وَهُوَ الْوَلِيُّ الْحَمِيدُ ﴿٢٨﴾

कृपा को विस्तार कर देता है । वही है संरक्षक तथा प्रशंसा एवम् महिमा के योग्य ।[1]

وَمِنْ آيَاتِهِ خَلْقُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَثَّ فِيهِمَا مِنْ دَابَّةٍ ۚ وَهُوَ عَلَىٰ جَمْعِهِمْ إِذَا يَشَاءُ قَدِيرٌ ﴿٢٩﴾

(२९) तथा उसकी निशानियों में से आकाश तथा धरती का पैदा करना और उनमें जीवधारियों का फैलाना है। वह इस पर भी सामर्थ्यवान है कि जब चाहे उन्हें एकत्रित कर दे ।[2]

وَمَا أَصَابَكُمْ مِنْ مُصِيبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ أَيْدِيكُمْ وَيَعْفُو عَنْ كَثِيرٍ ﴿٣٠﴾

(३०) तथा जो कुछ भी कष्ट तुम्हें पहुँचते हैं वह तुम्हारे अपने हाथों के करतूत का (बदला) है, तथा वह बहुत-सी बातों को क्षमा कर देता है।[3]

---

[1]कार्यक्षम है, अपने नेक बन्दों के काम बनाता है। उन्हें लाभ पहुँचाता तथा बुराईयों एवं विनाश से उनकी रक्षा करता है। अपने इस अपार वरदानों तथा अनुग्रहों पर प्रशंसनीय है।

[2] دَابَّة (धरती पर चलने-फिरने वाला) का शब्द साधारण है, जिसमें जिन्न तथा इन्सान के अतिरिक्त सभी जीव सम्मिलित हैं जिनके रूप, रंग, बोलियाँ, स्वभाव तथा प्रकार एवं जाति एक दूसरे से सर्वथा भिन्न हैं तथा वह धरती में फैले हुए हैं। इन सभी को अल्लाह तआला प्रलय के दिन एक ही मैदान में एकत्रित करेगा।

[3]यह संबोधन यदि ईमान वालों से हो तो अभिप्राय होगा कि तुम्हारे कुछ पापों का प्रायश्चित (क्षतिपूर्ति) वह आपदा बन जाती है जो तुम्हें पापों के बदले पहुँचती है तथा कुछ पाप वह हैं जो अल्लाह यूँ ही क्षमा कर देता है तथा अल्लाह बड़ा कृपाशील है, क्षमा करने के पश्चात आख़िरत में उस पर पकड़ नहीं करेगा। हदीस में भी आता है कि ईमान वाले को जो भी दुख, चिन्ता तथा शोक पहुँचता है यहाँ तक कि उसके पाँव में काँटा भी गड़ता है तो अल्लाह तआला उसके कारण से उसके पाप क्षमा कर देता है। (सहीह बुख़ारी, किताबुल मरज़ा, बाबु माजाअ फ़ी कफ़्फ़ारतिल मरज़े, मुस्लिम किताबुल बिर्रे, बाबु सवाबिल मोमिने फीमा युसीबुहू मिन मरज़िन) यदि संबोधन सामान्य हो तो अभिप्राय यह होगा कि तुम्हें जो दुख संसार में पहुँचते हैं यह तुम्हारे अपने पापों का परिणाम है जबकि अल्लाह तआला बहुत से पापों को क्षमा ही कर देता है, अर्थात या तो सदा के लिए क्षमा कर देता है अथवा उन पर तुरन्त दण्ड नहीं देता। (दण्ड एवं सज़ा में विलम्ब भी एक प्रकार से क्षमा ही है)। जैसे दूसरे स्थान पर फ़रमाया :

﴿وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللَّهُ النَّاسَ بِمَا كَسَبُوا مَا تَرَكَ عَلَىٰ ظَهْرِهَا مِنْ دَابَّةٍ﴾

"यदि अल्लाह तआला लोगों के करतूतों पर तुरन्त पकड़ना प्रारम्भ कर दे तो धरती पर कोई चलने वाला ही शेष न रहता।" (फ़ातिर-४५)

وَمَآ أَنتُم بِمُعْجِزِينَ فِى ٱلْأَرْضِ ۖ وَمَا لَكُم مِّن دُونِ ٱللَّهِ مِن وَلِىٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿٣١﴾

(३१) तथा तुम हमें धरती पर विवश करने वाले नहीं हो,[1] तथा तुम्हारे लिए अल्लाह (तआला) के अतिरिक्त कोई कार्यक्षम नहीं है तथा न सहायता करने वाला।

وَمِنْ ءَايَٰتِهِ ٱلْجَوَارِ فِى ٱلْبَحْرِ كَٱلْأَعْلَٰمِ ﴿٣٢﴾

(३२) तथा समुद्र में चलने वाली पर्वतों जैसी नावें उसकी निशानियों में से हैं।[2]

إِن يَشَأْ يُسْكِنِ ٱلرِّيحَ فَيَظْلَلْنَ رَوَاكِدَ عَلَىٰ ظَهْرِهِۦٓ ۚ إِنَّ فِى ذَٰلِكَ لَءَايَٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ﴿٣٣﴾

(३३) यदि वह चाहे तो हवा बन्द कर दे तथा ये नवकायें समुद्र में रूकी रह जायें। नि:संदेह इसमें प्रत्येक धैर्य रखने वाले कृतज्ञ के लिए निशानियाँ हैं।

أَوْ يُوبِقْهُنَّ بِمَا كَسَبُوا۟ وَيَعْفُ عَن كَثِيرٍ ﴿٣٤﴾

(३४) अथवा उन्हें उनके करतूतों के कारण नष्ट कर दे।[3] वह तो बहुत-सी त्रुटियों को क्षमा कर देता है।[4]

وَيَعْلَمَ ٱلَّذِينَ يُجَٰدِلُونَ فِىٓ ءَايَٰتِنَا

(३५) और ताकि जो लोग हमारी निशानियों में झगड़ते हैं[5] वे ज्ञात कर लें कि उनके लिए

इसी भावार्थ की आयत *अन्नहल* ६१ भी है।

[1]अर्थात तुम भागकर किसी ऐसी जगह नहीं जा सकते कि जहाँ तुम हमारी पकड़ में न आ सको अथवा जो विपदा हम तुम पर उतारना चाहें उससे बच सको।

[2] الجوار (अलजेवार) अथवा الجواري (अलजवारी) جارية जारियह (चलने वाली) का बहुवचन है। अर्थ है नवकायें, जहाज़। यह अल्लाह के पूर्ण सामर्थ्य का प्रमाण है कि सागरों में पर्वतों के समान नवकायें तथा जहाज़ उसकी आज्ञा से चलते हैं अन्यथा वह आज्ञा दे तो यह सागरों में खड़े रह जायें।

[3]अर्थात समुद्र को आज्ञा दे तथा उसकी लहरों में बाढ़ आ जाये तथा यह उनमें डूब जायें।

[4]अन्यथा समुद्र में यात्रा करने वाला कोई सुरक्षित वापस न आ सके।

[5]अर्थात उनका इंकार करते हैं।

مَا لَهُمْ مِّنْ مَّحِيْصٍ

कोई छुटकारा नहीं ।[1]

فَمَا أُوْتِيْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ وَّ أَبْقٰى لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ

(३६) तो तुम्हें जो कुछ दिया गया है वह सांसारिक जीवन का कुछ थोड़ा-सा साधन है[2] तथा अल्लाह (तआला) के पास जो है वह उस से कई गुना श्रेष्ठ[3] तथा स्थाई है, वह उनके लिए है जो ईमान लाये तथा केवल अपने प्रभु पर ही भरोसा रखते हैं ।

وَالَّذِيْنَ يَجْتَنِبُوْنَ كَبٰٓئِرَ الْاِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ وَاِذَا مَا غَضِبُوْا هُمْ يَغْفِرُوْنَ

(३७) तथा वे महापापों से और असभ्य बातों से बचते हैं तथा क्रोध के समय (भी) क्षमा कर देते हैं ।[4]

وَالَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِرَبِّهِمْ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ۖ وَاَمْرُهُمْ شُوْرٰى

(३८) तथा आपने प्रभु के आदेश को स्वीकार करते हैं,[5] तथा नमाज़ की नियमित रूप से स्थापना करते है [6] तथा उनका प्रत्येक कार्य

---

[1]अर्थात अल्लाह के प्रकोप से वे कहीं भागकर मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकते ।

[2]अर्थात साधारण तथा हीन है चाहे वह क़ारून का कोष ही क्यों न हो । इसलिए उसके धोखे में न आना, इसलिए कि यह सामयिक तथा नश्वर है ।

[3]अर्थात अच्छे कर्मों का जो फल अल्लाह के पास मिलेगा वह दुनिया के सामानों से कहीं अधिक उत्तम है तथा स्थाई भी, क्योंकि उस का अन्त एवं विनाश नहीं । अभिप्राय यह है कि लोक को परलोक पर प्रधानता न दो, ऐसा करोगे तो पछताओगे ।

[4]अर्थात लोगों को क्षमा करना उनके स्वभाव का एक अंश है न कि बदला लेना । जैसे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विषय में आता है «مَاانْتَقَمَ لِنَفْسِهِ قَطُّ إِلَّا أَنْ تُنْتَهَكَ حُرُمَاتُ اللهِ» "नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने स्वयं के लिए कभी बदला नहीं लिया । हां, अल्लाह के विधानों (निषेधाज्ञाओं) को तोड़ा जाये तो आपके लिए असहनीय था ।" (बुख़ारी किताबुल अदब, बाबु यस्सेरू वला तुअस्सिरू मुस्लिम किताबुल फ़ज़ायल)

[5]अर्थात उसकी आज्ञा का पालन, उसके रसूल का अनुसरण तथा उसकी धमकियों से बचते हैं ।

[6]नमाज़ की नियमितता और इक़ामत का विशेष करके वर्णन किया गया है कि उपासना

بَيْنَهُمْ ۖ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ﴿٣٨﴾

आपसी विचार-विमर्श से होता है[1] तथा जो कुछ हमने उन्हें प्रदान कर रखा है, उसमें से (हमारे नाम पर) देते हैं।

وَالَّذِينَ إِذَا أَصَابَهُمُ الْبَغْيُ

(३९) तथा जब उन पर अत्याचार (एवं क्रूरता)

(एबादात) में इसका सबसे अधिक महत्व है।

[1] شُـــورى यह ذكرى तथा بُشرى के समान مفاعلة से धातु है। अर्थात ईमानवाले प्रत्येक महत्वपूर्ण कार्य परस्पर परामर्श से करते हैं। अपने ही विचार को अन्तिम निर्णय नहीं समझते। स्वयं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को भी अल्लाह ने आदेश दिया कि मुसलमानों से परामर्श करो (*आले इमरान*-१५९) अत: आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम युद्ध के विषयों तथा अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में परामर्श का प्रयोजन करते थे, जिससे मुसलमानों का भी उत्साह बढ़ता था तथा विषय के सभी भाग स्पष्ट हो जाते थे। आदरणीय उमर रज़ी अल्लाह अन्हु जब भाले की मार से घायल हो गये तथा जीवन की कोई आशा शेष न रही तो शासन के विषय में परामर्श के लिए छ: व्यक्ति नियुक्त किये। उस्मान, अली, तलहा, ज़ुबैर, साद तथा अब्दुर्रहमान पुत्र औफ़ (रज़ी अल्लाह अंहुम)। उन्होंने परस्पर परामर्श के बाद आदरणीय उस्मान रज़ी अल्लाहु अन्हु को शासन के लिए निर्वाचित कर लिया। कुछ लोग परामर्श के इस प्रबंध एवं आदेश से राजतन्त्र का खंडन तथा प्रजातंत्र को सिद्धि करते हैं, हालांकि परामर्श का प्रबंध शाही शासन में भी होता है। राजा की भी सलाहकार समिति होती है जिसमें प्रत्येक महत्वपूर्ण काम पर सोच-विचार होता है। इसलिए इस आयत से राजतन्त्र का कदापि खंडन नहीं होता। इसके अतिरिक्त प्रजातंत्र को परामर्श का समानार्थ समझना सर्वथा ग़लत है। परामर्श प्रत्येक छोटे-बड़े से नहीं हो सकता, न उसकी आवश्यकता ही है। परामर्श का अर्थ उन लोगों से विचार-विमर्श करना है जो मामले की सूक्ष्मता तथा आवश्यकता को समझते हों, जसमें परामर्श की आवश्यकता होती है। जैसे भवन, सेतु आदि निर्माण करना हो तो तांगे वाले, दर्ज़ी अथवा रिक्शाचालक से नहीं, किसी इंजीनियर से परामर्श लिया जायेगा। किसी रोग के विषय में परामर्श की आवश्यकता होगी तो चिकित्सक वैद्य की आवश्यकता होगी, जबकि प्रजातंत्र में इसके विपरीत प्रत्येक व्यस्क को परामर्श का पात्र माना जाता है, चाहे वह कोरा मूर्ख, निर्बोध तथा राज्य के विषय में सूक्ष्मता से बिल्कुल अंजान हो। अत: परामर्श शब्द से प्रजातंत्र की सिद्धि अधिकार जमाने एवं धांधली के सिवा कुछ नहीं, तथा जिस प्रकार सोशलिज़्म के साथ इस्लामी शब्द जोड़ने से सोशलिज़्म मुसलमान नहीं हो सकता, इसी प्रकार प्रजातंत्र में इस्लाम का पेवंद लगा देने से पश्चिमी प्रजातंत्र पर ख़िलाफ़त का वस्त्र सही नहीं आ सकता। पश्चिम का यह वृक्ष इस्लाम की भूमि पर नहीं पनप सकता।

هُمْ يَنْتَصِرُونَ ﴿٣٩﴾

हो तो वे केवल बदला ले लेते हैं।[1]

وَجَزَٰٓؤُا۟ سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا ۖ فَمَنْ عَفَا وَأَصْلَحَ فَأَجْرُهُۥ عَلَى ٱللَّهِ ۚ إِنَّهُۥ لَا يُحِبُّ ٱلظَّٰلِمِينَ ﴿٤٠﴾

(४०) तथा बुराई का बदला उसी जैसी बुराई है,[2] तथा जो क्षमा कर दे और सुधार कर ले तो उसका बदला अल्लाह के ऊपर है। वास्तव में अल्लाह (तआला) अत्याचारियों से प्रेम नहीं करता।

وَلَمَنِ ٱنتَصَرَ بَعْدَ ظُلْمِهِۦ فَأُو۟لَٰٓئِكَ مَا عَلَيْهِم مِّن سَبِيلٍ ﴿٤١﴾

(४१) तथा जो व्यक्ति अपने नृशंसित होने के पश्चात (समान) बदला ले ले तो ऐसे व्यक्ति पर (निन्दा का) कोई मार्ग नहीं।

إِنَّمَا ٱلسَّبِيلُ عَلَى ٱلَّذِينَ يَظْلِمُونَ ٱلنَّاسَ وَيَبْغُونَ فِى ٱلْأَرْضِ بِغَيْرِ ٱلْحَقِّ ۚ أُو۟لَٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٤٢﴾

(४२) यह मार्ग केवल उन लोगों पर है जो स्वयं अन्यों पर अत्याचार करें तथा धरती पर अनायास उपद्रव मचाते फिरें। यही लोग हैं जिनके लिए कष्टदायी यातनायें हैं।

وَلَمَن صَبَرَ وَغَفَرَ إِنَّ ذَٰلِكَ لَمِنْ عَزْمِ ٱلْأُمُورِ ﴿٤٣﴾

(४३) तथा जो व्यक्ति धैर्य कर ले एवं क्षमा कर दे, तो निःसंदेह यह एक बड़े साहस के कार्यों में से (एक कार्य) है।

وَمَن يُضْلِلِ ٱللَّهُ فَمَا لَهُۥ مِن وَلِىٍّ مِّنۢ بَعْدِهِۦ ۗ وَتَرَى ٱلظَّٰلِمِينَ

(४४) तथा जिसे अल्लाह (तआला) भटका दे उसका उसके पश्चात कोई कार्यक्षम नहीं।

---

[1]अर्थात बदला लेने से वह विवश नहीं हैं। यदि बदला लेना चाहें तो ले सकते हैं, फिर भी सामर्थ्य होते हुए वह क्षमा को प्रधानता देते हैं। जैसे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मक्का विजय के दिन अपने ख़ून के प्यासों के लिए सामान्य क्षमा की घोषणा कर दी। हुदैबिया में आपने ८० व्यक्तियों को क्षमा कर दिया जिन्होंने आप के विरोध में षड़यन्त्र रचा था। लबीद बिन आसिम यहूदी से बदला नहीं लिया जिसने आप पर जादू किया था। उस यहूदी नारी को आप ने कुछ नहीं कहा जिसने आप के खाने में विष मिला दिया था, जिसकी पीड़ा आप आजीवन अनुभव करते रहे, सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम। (इब्ने कसीर)

[2]यह प्रतिकार (बदला) लेने की अनुमति है। बुराई का बदला यद्यपि बुराई नहीं है किन्तु समरूप होने के कारण बुराई ही कहा गया है।

لَمَّا رَأَوُا الْعَذَابَ يَقُولُونَ هَلْ إِلَىٰ
مَرَدٍّ مِّن سَبِيلٍ ﴿٤٤﴾

तथा तू देखेगा कि अत्याचारी लोग यातनाओं को देखकर कह रहे होंगे कि क्या वापस लौटने का कोई मार्ग है ?

وَتَرَاهُمْ يُعْرَضُونَ عَلَيْهَا خَاشِعِينَ
مِنَ الذُّلِّ يَنظُرُونَ مِن طَرْفٍ
خَفِيٍّ ۗ وَقَالَ الَّذِينَ آمَنُوا
إِنَّ الْخَاسِرِينَ الَّذِينَ خَسِرُوا
أَنفُسَهُمْ وَأَهْلِيهِمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ
أَلَا إِنَّ الظَّالِمِينَ فِي
عَذَابٍ مُّقِيمٍ ﴿٤٥﴾

(४५) तथा तू उन्हें देखेगा कि वे (नरक के) समक्ष ला खड़े किये जायेंगे, अपमान के कारण झुके जाते होंगे तथा कनखियों से देख रहे होंगे। ईमानवाले स्पष्ट रूप से कहेंगे कि वास्तव में हानि उठाने वाले वे हैं, जिन्होंने आज क़यामत के दिन अपने आप को तथा अपने परिवार को हानि में डाल दिया। याद रखो कि नि:संदेह अत्याचारी लोग स्थाई यातना में हैं।[1]

وَمَا كَانَ لَهُم مِّنْ أَوْلِيَاءَ
يَنصُرُونَهُم مِّن دُونِ اللَّهِ ۗ
وَمَن يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ
مِن سَبِيلٍ ﴿٤٦﴾

(४६) तथा उनकी कोई सहायता करने वाला नहीं, जो अल्लाह (तआला) से पृथक उनकी सहायता कर सकें, तथा जिसे अल्लाह भटका दे तो उसके लिए कोई मार्ग ही नहीं।

اسْتَجِيبُوا لِرَبِّكُم مِّن قَبْلِ
أَن يَأْتِيَ يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهُ مِنَ اللَّهِ ۚ
مَا لَكُم مِّن مَّلْجَإٍ يَوْمَئِذٍ

(४७) अपने प्रभु का आदेश मान लो इससे पूर्व कि अल्लाह की ओर से वह दिन आ जाये जिसका हट जाना असंभव है।[2] तुम्हें उस दिन न तो कोई शरण का स्थान मिलेगा तथा

---

[1]अर्थात दुनिया में यह काफ़िर हमें मूर्ख तथा साँसारिक क्षति में ग्रस्त समझते थे, जबकि दुनिया में हम केवल परलोक को प्रधानता देते थे तथा साँसारिक क्षति को कोई महत्व नहीं देते थे। आज देख लो कि वास्तविक क्षति ग्रस्त कौन है। वे जिन्होंने साँसारिक क्षणिक क्षति को अनदेख किये रखा तथा आज वह स्वर्ग का आनंद ले रहे हैं, अथवा वह जिन्होंने संसार ही को सब कुछ समझ रखा था तथा आज ऐसी यातना में ग्रस्त हैं, जिससे अब मुक्ति ही संभव नहीं।

[2]अर्थात जिसे दूर करने तथा हटाने की कोई शक्ति नहीं रखेगा।

وَمَا لَكُم مِّن نَّكِيرٍ ﴿٤٧﴾

न छिपकर अनजान बन जाने का ।[1]

فَإِنْ أَعْرَضُوا فَمَا أَرْسَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ حَفِيظًا ۖ إِنْ عَلَيْكَ إِلَّا الْبَلَاغُ ۗ وَإِنَّا إِذَا أَذَقْنَا الْإِنسَانَ مِنَّا رَحْمَةً فَرِحَ بِهَا ۖ وَإِن تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ فَإِنَّ الْإِنسَانَ

(४८) यदि ये विमुख हो जायें तो हमने आपको उन पर रक्षक बना कर नहीं भेजा । आपका दायित्व तो केवल संदेश पहुँचा देने का है[2] तथा जब हम मनुष्य को अपनी दया का स्वाद चखाते हैं,[3] तो वह उस पर इतराने लग जाता है,[4] तथा यदि उन्हें उनके कर्मों

---

[1]अर्थात तुम्हारे लिए कोई ऐसा स्थान न होगा कि जिसमें तुम छुप कर अंजान बन जाओ तथा पहचाने न जाओ अथवा देखे न जा सको, जैसे फ़रमाया :

﴿ يَقُولُ الْإِنسَانُ يَوْمَئِذٍ أَيْنَ الْمَفَرُّ ۞ كَلَّا لَا وَزَرَ ۞ إِلَىٰ رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْمُسْتَقَرُّ ﴾

"उस दिन इंसान कहेगा कि कहाँ भागने की जगह है । कदापि नहीं, कोई भागने का मार्ग नहीं । उस दिन तेरे प्रभु के पास ही ठिकाना होगा ।" *(अल-क़ियामह-१०-१२)*

अथवा नकीर, नकार के अर्थ में है कि तुम अपने पापों को नकार न सकोगे, क्योंकि एक तो वह सब अंकित होंगे । दूसरे स्वयं इंसान के अंग भी गवाही देंगे । अथवा जो दण्ड तुम्हें तुम्हारे पापों के कारण दिया जायेगा तुम उस दण्ड का इंकार न कर सकोगे, क्योंकि पापों को स्वीकार किये बिना तुम्हें कोई चारा (उपाय) न होगा ।

[2]जैसे अन्य स्थान पर कहा ﴿ لَيْسَ عَلَيْكَ هُدَاهُمْ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ يَهْدِي مَن يَشَاءُ ﴾ *(अल-बक़र:-२७२)*, ﴿ فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلَاغُ وَعَلَيْنَا الْحِسَابُ ﴾ *(अर्रअद-४०)* तथा ﴿ فَذَكِّرْ إِنَّمَا أَنتَ مُذَكِّرٌ لَّسْتَ عَلَيْهِم بِمُصَيْطِرٍ ﴾ *(अल-ग़ाशिया-२१,२२)* इन सबका भावार्थ यह है कि आपका दायित्व केवल तथा केवल यह है कि अल्लाह का संदेश लोगों तक पहुँचा दें । मानें न मानें, आपसे उसकी पूछ न होगी, क्योंकि मार्ग दर्शा देना आपके अधिकार ही में नहीं, यह मात्र अल्लाह के अधिकार में है ।

[3]अर्थात जीविका के साधनों की बहुतायत, स्वास्थ्य एवं सुख, संतान की अधिकता, मान एवं पद आदि ।

[4]अर्थात घमंड तथा अहंकार दिखाता है, अन्यथा अल्लाह के वरदानों पर प्रसन्न होना अथवा उसका प्रदर्शन अप्रिय नहीं है । किन्तु वह वरदानों को प्रत्यक्ष करने तथा कृतज्ञता के रूप में हो । अहंकार एवं दिखावा तथा घमण्ड स्वरूप न हो ।

كَفُوْرٌ ۝٤٨

के कारण कोई कठिनाई आती है [1] तो निश्चय मनुष्य बड़ा कृतघ्न है।[2]

لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ؕ يَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ اِنَاثًا وَّيَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ الذُّكُوْرَ ۝٤٩

(४९) आकाशों तथा धरती का राज्य अल्लाह (तआला) ही के लिए है। वह जो चाहता है पैदा करता है, [3] जिसको चाहता है पुत्रियाँ देता है तथा जिसे चाहता है पुत्र देता है।

اَوْ يُزَوِّجُهُمْ ذُكْرَانًا وَّ اِنَاثًا ۚ وَيَجْعَلُ مَنْ يَّشَآءُ عَقِيْمًا ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌ قَدِيْرٌ ۝٥٠

(५०) अथवा उन्हें एकत्रित कर देता है [4] पुत्र भी तथा पुत्रियाँ भी, तथा जिसे चाहे बाँझ कर देता है, वह बड़े ज्ञान वाला तथा सर्वशक्तिमान है।

---

[1]धन की कमी, रोग, संतान से वंचित होना आदि।

[2]अर्थात तुरन्त अनुकम्पाओं को भूल जाता है तथा مُنْعِمْ (उपकारी) को भी। यह अधिकाँश इंसान के हिसाब से है जिसमें क्षीण ईमान के लोग भी सम्मिलित हैं। किन्तु अल्लाह के पुनीत बन्दों तथा पूर्ण ईमानवालों की यह दशा नहीं होती। वह दुखों को सहन करते हैं तथा अनुकम्पाओं पर कृतज्ञता। जैसाकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : «إِنْ أَصَابَتْهُ سَرَّآءُ شَكَرَ فَكَانَ خَيراً لَّهُ، وإِنْ أَصَابَتْهُ ضَرَّآءُ صَبَرَ فَكَانَ خَيراً لَّهُ، وَلَيْسَ ذٰلِكَ لأَحَدٍ إِلَّا لِلْمُؤْمِنِ». (सहीह मुस्लिम, किताबुज्जुहद, बाबुल मोमिने अमरूहू ख़ैरून कुल्लुहू)

[3]अर्थात विश्व (सृष्टि) में केवल अल्लाह ही की इच्छा तथा योजना चलती है। वह जो चाहता है होता है, जो नहीं चाहता नहीं होता। कोई दूसरा उसमें हस्तक्षेप का सामर्थ्य तथा अधिकार नहीं रखता।

[4]अर्थात जिसको चाहता है पुत्र-पुत्री दोनों देता है। इस स्थान पर अल्लाह ने लोगों की चार श्रेणियाँ वर्णन की हैं। एक वह जिनको केवल पुत्र देता है, दूसरे वह जिनको केवल पुत्रियाँ देता है, तीसरे वह जिनको पुत्र-पुत्रियाँ दोनों प्रदान करता है तथा चौथे वह जिनको पुत्र न पुत्री। लोगों में यह अंतर तथा भेद अल्लाह के सामर्थ्य के लक्षणों में से है। इस ईश्वरीय अंतर को दुनिया की कोई शक्ति बदल नहीं सकती। यह विभाजन संतान के हिसाब से है। पिता के हिसाब से भी इंसानों के चार प्रकार हैं। आदम अलैहिस्सलाम को केवल मिट्टी से रचा, उनके न पिता हैं न माता २- हव्वा को आदम अर्थात पुरूष से पैदा किया, उनकी माता नहीं, ३- आदरणीय ईसा को केवल स्त्री से पैदा किया, उनके पिता नहीं, ४- तथा शेष सभी इंसानों को नर-नारी दोनों के मिलान से, उनके पिता भी हैं तथा माता भी। فَسُبحان الله العليم القدير (इब्ने कसीर)

وَمَا كَانَ لِبَشَرٍ اَنْ يُّكَلِّمَهُ اللّٰهُ اِلَّا وَحْيًا اَوْ مِنْ وَّرَآئِ حِجَابٍ اَوْ يُرْسِلَ رَسُوْلًا فَيُوْحِيَ بِاِذْنِهٖ مَا يَشَآءُ ؕ اِنَّهٗ عَلِيٌّ حَكِيْمٌ ﴿٥١﴾

(५१) तथा असंभव है कि किसी बंदे से अल्लाह (तआला) वार्तालाप करे परन्तु प्रकाशना के रूप में अथवा पर्दे के पीछे से अथवा किसी फ़रिश्ते को भेजे तथा वह अल्लाह के आदेश से जो वह चाहे प्रकाशना करे।[1] निःसंदेह वह सर्वोच्च तथा तत्वदर्शी है।

وَكَذٰلِكَ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ رُوْحًا مِّنْ اَمْرِنَا ؕ مَا كُنْتَ تَدْرِيْ مَا الْكِتٰبُ وَلَا الْاِيْمَانُ وَلٰكِنْ جَعَلْنٰهُ نُوْرًا نَّهْدِيْ بِهٖ مَنْ نَّشَآءُ مِنْ عِبَادِنَا ؕ وَاِنَّكَ لَتَهْدِيْۤ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٥٢﴾

(५२) तथा इसी प्रकार हमने आपकी ओर अपने आदेश से रूह (आत्मा) को अवतरित किया है, [2] आप उससे पूर्व यह भी नहीं जानते थे कि किताब तथा ईमान क्या वस्तु है ? [3] परन्तु हमने उसे ज्योति बनाया, उसके द्वारा अपने भक्तों में से जिसे चाहते हैं, मार्गदर्शन देते हैं। [4] निःसंदेह

---

[1]इस आयत में ईश्वरीय प्रकाशना के तीन रूप बताये गये हैं। प्रथम यह कि दिल में कोई बात डाल देना अथवा स्वप्न में बतला देना इस विश्वास के साथ कि यह अल्लाह ही की ओर से है। दूसरा, पर्दे के पीछे से बात करना, जैसे ईशदूत मूसा से तूर पर्वत पर की गई। तीसरा, फ़रिश्ते द्वारा अपनी प्रकाशना भेजना। जैसे देवदूत जिब्रील अलैहिस्सलाम अल्लाह का उपदेश लेकर आते तथा तथा पैग़म्बरों को सुनाते थे।

[2] رُوْحٌ से अभिप्राय ईशवाणी पवित्र क़ुरआन है। अर्थात जैसे आपसे पहले अन्य रसूलों पर हम प्रकाशना (वह्यी) करते रहे, वैसे ही हमने आप पर क़ुरआन की प्रकाशना किया है। पवित्र क़ुरआन को रूह (आत्मा) कहा गया है कि क़ुरआन से दिलों को जीवन प्राप्त होता है जैसे आत्मा में मानव-जीवन का भेद लुप्त है।

[3]किताव से तात्पर्य क़ुरआन है। अर्थात नबूवत से पहले क़ुरआन का भी ज्ञान आपको नहीं था। ऐसे ही ईमान के उन विवरण से भी अंजान थे जो धर्मविधान (शरीयत) में अभीष्ट हैं।

[4]अर्थात क़ुरआन को प्रकाश बनाया, उसके द्वारा हम अपने बंदों में से जिसे चाहते हैं संमार्ग से सम्मानित करते हैं। अभिप्राय यह है कि क़ुरआन से मार्गदर्शन तथा निर्देशन उन्हीं को मिलता है जिनमें ईमान की इच्छा तथा तड़प होती है वह उसे मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिए पढ़ते-सुनते तथा चिन्तन-मनन करते हैं, तो अल्लाह उनकी सहायता करता है तथा उनके लिए संमार्ग का पथ समतल कर देता है। जिस पर वह चल पड़ते

आप सत्यमार्ग का दर्शन करा रहे हैं।

(५३) उस अल्लाह के मार्ग का[1] जिसके स्वामित्व में आकाशों एवं धरती की हर वस्तु है। सावधान रहो, सभी कार्य अल्लाह ही की ओर लौटते हैं।[2]

صِرَاطِ اللّٰهِ الَّذِیْ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ ؕ اَلَاۤ اِلَی اللّٰهِ تَصِیْرُ الْاُمُوْرُ ۟

सूरतुज़ ज़ुख़रुफ़-४३

سُوْرَةُ الزُّخْرُفِ

सूरः ज़ुख़रुफ़ मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें नवासी आयतें तथा सात रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

(१) हा॰मीम॰।

حٰمٓ ۟

(२) सौगन्ध है इस खुली किताब की।

وَالْكِتٰبِ الْمُبِیْنِ ۟

(३) हमने इसको अरबी भाषा का क़ुरआन

اِنَّا جَعَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِیًّا لَّعَلَّكُمْ

हैं। अन्यथा जो अपनी आँखें बन्द कर लें, कानों में रूई डाल लें तथा बोध एवं विवेक से काम नहीं लें तो उन्हें मार्गदर्शन कैसे मिल सकता है। जैसे फ़रमाया :

﴿قُلْ هُوَ لِلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا هُدًی وَّشِفَآءٌ ؕ وَالَّذِیْنَ لَا یُؤْمِنُوْنَ فِیْۤ اٰذَانِهِمْ وَقْرٌ وَّهُوَ عَلَیْهِمْ عَمًی ؕ اُولٰٓىِٕكَ یُنَادَوْنَ مِنْ مَّكَانٍۭ بَعِیْدٍ﴾

"आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) कह दीजिए कि यह तो ईमानेवालों के लिए मार्गदर्शन एवं स्वास्थ्य सुधार है तथा जो ईमान नहीं लाते उनके कानों में तो (बहरापन एवं) भार है तथा उन पर अन्धापन है ये लोग दूर के स्थान से पुकारे जा रहे हैं।" *(सूरः हा॰ मीम॰ अस्सजदः-४४)*

[1]यह صراط مستقيم (सिराते मुस्तक़ीम) सीधा मार्ग इस्लाम है। उसे अल्लाह ने अपनी ओर सम्बन्धित किया है जिससे इस मार्ग की महानता तथा प्रतिष्ठा स्पष्ट होती है तथा उसके एक मात्र मोक्ष मार्ग होने की ओर संकेत भी है।

[2]अर्थात क़यामत के दिन सभी निर्णय अल्लाह ही के हाथ में होगा। इसमें कड़ी चेतावनी है जो प्रतिकार को आवश्यक बताती है।

تَعْقِلُونَ ۝٣

बनाया है[1] कि तुम समझ लो ।

وَإِنَّهُۥ فِىٓ أُمِّ ٱلْكِتَٰبِ لَدَيْنَا لَعَلِىٌّ حَكِيمٌ ۝٤

(४) तथा नि:संदेह यह सुरक्षित पुस्तक में है तथा हमारे निकट उच्च कोटि की हिक्मत से पूर्ण है ।[2]

أَفَنَضْرِبُ عَنكُمُ ٱلذِّكْرَ صَفْحًا أَن كُنتُمْ قَوْمًا مُّسْرِفِينَ ۝٥

(५) क्या हम इस सदुपदेश को तुमसे इस आधार पर हटा लें कि तुम सीमा उल्लघंन करने वाले लोग हो ।[3]

وَكَمْ أَرْسَلْنَا مِن نَّبِىٍّ فِى ٱلْأَوَّلِينَ ۝٦

(६) तथा हमने विगत जातियों में भी बहुत से नबी भेजे ।

وَمَا يَأْتِيهِم مِّن نَّبِىٍّ إِلَّا كَانُوا۟ بِهِۦ

(७) तथा जो नबी उनके पास आया उन्होंने

---

[1]जो संसार की सर्वोत्तम भाषा है । दूसरे, इससे सर्वप्रथम संबोधित भी अरब थे । उन्हीं की भाषा में क़ुरआन उतारा ताकि वह समझना चाहें तो सरलता से समझ जायें ।

[2]इस में क़ुरआन की उस महानता तथा प्रधानता का वर्णन है जो उच्च लोक में उसे प्राप्त है, ताकि जगतवासी भी उसकी महानता तथा मर्यादा को ध्यान में रखते हुए उसे तदानुसार महत्व दें तथा उससे मार्गदर्शन का वह उद्देश्य प्राप्त करें जिसके लिए उसे संसार में उतारा गया है। أم الكتاب (मूलग्रंथ) से अभिप्राय लौहे महफ़ूज (सुरक्षित पट्टिका) है ।

[3]इसके विभिन्न अर्थ किये हैं, जैसे १- तुम चूँकि पापों में अधिक लीन तथा उस पर अडिग हो । इसलिए क्या तुम यह सोचते हो कि हम तुम्हें शिक्षा-उपदेश देना त्याग देंगे ? २- अथवा तुम्हारे कुफ्र तथा अति पर हम तुम्हें कुछ न कहेंगे तथा तुम्हें क्षमा कर देंगे । ३- अथवा हम तुम्हें विनाश कर दें तथा तुम्हें किसी चीज़ का आदेश दें रोक न सकें । ४- इसलिए कि तुम पवित्र क़ुरआन के प्रति विश्वास करने वाले नहीं हो । अत: हम क़ुरआन के उतारने का क्रम ही रोक दें । पहले भावार्थ को इमाम तबरी ने तथा अन्तिम को इमाम इब्ने कसीर ने अधिक पसन्द किया है तथा कहा है कि यह अल्लाह की दया तथा करूणा है कि उसने भलाई तथा क़ुरआन की ओर आमन्त्रण देने का क्रम स्थगित नहीं किया, यद्यपि वह मुख फेरने तथा इंकार करने में सीमा उल्लंघन कर रहे थे, ताकि जिसके भाग्य में संमार्ग है वह इसके द्वारा सीधा रास्ता अपना ले तथा जो हतभागी है उन पर प्रमाण स्थापित हो जाये ।

يَسْتَهْزِءُونَ ۝٧

उसका उपहास उड़ाया।

فَأَهْلَكْنَآ أَشَدَّ مِنْهُم بَطْشًا وَمَضَىٰ مَثَلُ ٱلْأَوَّلِينَ ۝٨

(८) तो हमने उनसे अधिक बलवानों को[1] नष्ट कर डाला तथा अगलों का उदाहरण गुज़र चुका है।[2]

وَلَئِن سَأَلْتَهُم مَّنْ خَلَقَ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ خَلَقَهُنَّ ٱلْعَزِيزُ ٱلْعَلِيمُ ۝٩

(९) तथा यदि आप उनसे पूछें कि आकाशों तथा धरती को किसने पैदा किया तो नि:संदेह उनका उत्तर होगा कि उन्हें सर्वशक्तिमान एवं सर्वज्ञाता (अल्लाह ही) ने पैदा किया है।[3]

ٱلَّذِى جَعَلَ لَكُمُ ٱلْأَرْضَ مَهْدًا وَجَعَلَ لَكُمْ فِيهَا سُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ۝١٠

(१०) (वही है) जिसने तुम्हारे लिये धरती को फ़र्श (तथा बिछौना) बनाया[4] तथा उसमें तुम्हारे लिए मार्ग बना दिये ताकि तुम मार्ग पा लिया करो।[5]

---

[1]अर्थात मक्कावासियों से अधिक बलवान थे। जैसे दूसरे स्थान पर फ़रमाया ﴿كَانُوٓا۟ أَكْثَرَ مِنْهُمْ وَأَشَدَّ قُوَّةً﴾ "वह संख्या तथा बल में कहीं उनसे अधिक थे।" (*अलमोमिन-८२*)

[2]अर्थात पवित्र क़ुरआन में उन जातियों की चर्चा अथवा विशेषता अनेक बार गुज़र चुकी है। इसमें मक्कावासियों के लिये धमकी है कि पिछली जातियाँ रसूलों के झुठलाने के कारण नाश हुईं। यदि यह भी नबी (दूतत्व) को झुठलाने पर अड़िग रहे तो उनकी भाँति यह भी नष्ट कर दिये जायेंगे।

[3]किन्तु इस स्वीकार के उपरान्त इन्ही सृष्टियों में से बहुतों को इन मुर्खों ने अल्लाह का साझी बना लिया है। इससे उनके अपराध की बुराई का भी वर्णन है तथा उनके अज्ञानता एवं मूर्खता का प्रदर्शन भी।

[4]ऐसा विस्तर जिसमें स्थिरता तथा स्थायित्व हो। तुम इस पर चलते हो, खड़े होते हो तथा सोते हो, जहाँ चाहते चलते-फिरते हो, उसने उसको पहाड़ो द्वारा स्थिर कर दिया ताकि उसमें गति तथा कंपन न हो।

[5]अर्थात एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में तथा एक देश से दूसरे देश में जाने के लिए मार्ग बना दिये ताकि व्यवसायिक, व्यापारिक एवं अन्य उद्देश्य के लिए तुम यातायात कर सको।

وَالَّذِي نَزَّلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً بِقَدَرٍ فَأَنشَرْنَا بِهِ بَلْدَةً مَّيْتًا كَذَٰلِكَ تُخْرَجُونَ ⑪

(११) तथा उसी ने आकाश से एक अनुमान[1] के अनुसार वर्षा की, तो हमने उससे मृत नगर को जीवित कर दिया। उसी प्रकार तुम निकाले जाओगे।[2]

وَالَّذِي خَلَقَ الْأَزْوَاجَ كُلَّهَا وَجَعَلَ لَكُم مِّنَ الْفُلْكِ وَالْأَنْعَامِ مَا تَرْكَبُونَ ⑫

(१२) तथा जिसने समस्त वस्तुओं के जोड़े[3] बनाये तथा तुम्हारी (सवारी के) लिए नवकायें बनायीं तथा चौपाये पशु पैदा किये जिन पर तुम सवार होते हो।

لِتَسْتَوُوا عَلَىٰ ظُهُورِهِ ثُمَّ تَذْكُرُوا نِعْمَةَ رَبِّكُمْ إِذَا اسْتَوَيْتُمْ عَلَيْهِ وَتَقُولُوا سُبْحَانَ الَّذِي سَخَّرَ لَنَا هَٰذَا وَمَا كُنَّا لَهُ مُقْرِنِينَ ⑬

(१३) ताकि तुम उनकी पीठ पर जमकर सवार हुआ करो,[4] फिर अपने प्रभु के (प्रदान किये हुए) उपहारों को याद करो जब उस पर ठीक-ठाक बैठ जाओ तथा कहो कि पवित्र शक्ति है उसकी जिसने उसे हमारे वश में कर दिया, यद्यपि हमें उसे वश में करने की शक्ति नहीं थी।[5]

---

[1]जिससे तुम्हारी आवश्यकता पूरी हो सके, क्योंकि आवश्यकता से कम वर्षा होती तो तुम्हारे लिए लाभकारी न होती तथा अधिक होती तो वह तूफ़ान बन जाती जिसमें तुम्हारे डूबने एवं नष्ट होने का भय होता।

[2]अर्थात जैसे वर्षा से मृत धरती हरी हो जाती है ऐसे ही क़यामत (प्रलय) के दिन तुमको भी जीवित करके क़ब्रों से निकाल लिया जायेगा।

[3]प्रत्येक चीज़ को जोड़ा-जोड़ा बनाया, नर-मादा, वनस्पतियाँ-खेतियाँ, फल-फूल तथा प्राणी सबमें नर-मादा का क्रम है। कुछ कहते हैं कि इससे अभिप्राय एक-दूसरे की प्रतिकूल वस्तुयें हैं, जैसे प्रकाश तथा अंधकार, रोग तथा स्वास्थ्य, न्याय तथा अत्याचार, भलाई तथा बुराई, ईमान (विश्वास) तथा कुफ़्र (इंकार) नरमी एवं सखती इत्यादि। कुछ कहते हैं कि जोड़ा, प्रकार के अर्थ में है अर्थात सभी प्रकारों का रचयिता अल्लाह है।

[4] لِتَسْتَوُوا का अर्थ है لِتَسْتَقِرُّوا अथवा لِتَسْتَعْلُوا टिककर बैठ जाओ अथवा चढ़ जाओ। ظُهُورِهِ में सर्वनाम एक वचन जातिवाचक संज्ञा के कारण है।

[5]अर्थात यदि इन पशुओं को हमारे अधीन तथा वश में न करता तो हम इन्हें अपने वश

وَإِنَّآ إِلَىٰ رَبِّنَا لَمُنقَلِبُونَ ⑭

(१४) तथा निश्चित रूप से हम अपने प्रभु की ओर लौटकर जाने वाले हैं।[1]

وَجَعَلُوا لَهُۥ مِنْ عِبَادِهِۦ جُزْءًا ۚ إِنَّ ٱلْإِنسَـٰنَ لَكَفُورٌ مُّبِينٌ ⑮

(१५) तथा उन्होंने अल्लाह के कुछ बन्दों को उसका अंश बना दिया, [2] निःसंदेह मनुष्य स्पष्ट रूप से कृतघ्न है।

أَمِ ٱتَّخَذَ مِمَّا يَخْلُقُ بَنَاتٍ وَأَصْفَىٰكُم بِٱلْبَنِينَ ⑯

(१६) क्या अल्लाह (तआला) ने अपनी सृष्टि में से पुत्रियाँ तो स्वयं रख लीं तथा तुम्हें पुत्रों[3] से सुशोभित किया ?

وَإِذَا بُشِّرَ أَحَدُهُم بِمَا ضَرَبَ لِلرَّحْمَـٰنِ مَثَلًا ظَلَّ وَجْهُهُۥ مُسْوَدًّا وَهُوَ كَظِيمٌ ⑰

(१७) (यद्यपि) उनमें से किसी को जब उस वस्तु की सूचना दी जाती है जिसका उदाहरण उसने अल्लाह दयालु के लिए वर्णन किया है, तो उसका मुख काला पड़ जाता है तथा वह शोकग्रस्त हो जाता है।

में रखकर उनको सवारी, भारवाहन तथा दूसरे लक्ष्य के लिये प्रयोग नहीं कर सकते थे। مُقْرِنِين का अर्थ مُطِيقِين है।

[1]नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब सवारी पर सवार होते तो तीन बार الله أكبر (अल्लाहु अकबर) कहते तथा سبحان الذي से لَمُنقلِبون तक आयत पढ़ते। इसके अतिरिक्त भलाई तथा कुशलता के लिए प्रार्थना करते जो दुआओं की पुस्तकों में देख ली जाये। (सहीह मुस्लिम किताबुल हज्ज, बाबु मायकूलु इज़ा रकिब .....)

[2] عِبَادٌ से तात्पर्य फ़रिश्ते तथा جُزْءٌ जुज़ (अंश) से अभिप्राय पुत्रियाँ अर्थात फ़रिश्ते हैं जिनको मूर्तिपूजकों ने अल्लाह की पुत्रियाँ बना कर उनकी पूजा आरम्भ कर दी थी। इस प्रकार वह अल्लाह के पैदा किये को उसका साझी तथा अंश मानते थे जबकि वह इन चीज़ों से परमपवित्र है। कुछ ने अंश से अभिप्राय यहाँ भोग-प्रसाद के रूप में निकाले जाने वाले वह पशु तात्पर्य लिये हैं जिनका एक भाग (अंश) मूर्तिपूजक अल्लाह के नाम पर तथा एक भाग मूर्तियों के नाम पर निकाला करते थे जिसकी चर्चा *सूरतुल अंआम* १३६ में है।

[3]इसमें उनकी उस मूर्खता तथा बुद्धिहीनता का वर्णन है जो उन्होंने अल्लाह के लिए संतान बना रखी है जिसे यह स्वयं अप्रिय समझते हैं। हालाँकि अल्लाह की संतान होती तो क्या ऐसा ही होता कि उसकी तो पुत्रियाँ होतीं तथा तुम्हें पुत्र से सम्मानित करता।

(१८) अथवा क्या (अल्लाह की संतान पुत्रियाँ हैं) जो आभूषणों में पलें तथा झगड़े में (अपनी बात) स्पष्ट न कर सकें ?[1]

أَوَمَن يُنَشَّؤُا فِي الْحِلْيَةِ وَهُوَ فِي الْخِصَامِ غَيْرُ مُبِينٍ ⑱

(१९) तथा उन्होंने दयालु के इबादत करने वाले फ़रिश्तों को स्त्रियाँ बना लिया। क्या उनकी पैदाईश के समय वे उपस्थित थे ? उनकी यह गवाही लिख ली जायेगी तथा उनसे उसकी पूछताछ की जायेगी।[2]

وَجَعَلُوا الْمَلَائِكَةَ الَّذِينَ هُمْ عِبَادُ الرَّحْمَٰنِ إِنَاثًا ۚ أَشَهِدُوا خَلْقَهُمْ ۚ سَتُكْتَبُ شَهَادَتُهُمْ وَيُسْأَلُونَ ⑲

(२०) तथा कहते हैं कि अल्लाह (तआला) चाहता तो हम उनकी पूजा न करते। उन्हें उसका कुछ ज्ञान नहीं,[3] यह तो केवल अनुमानित

وَقَالُوا لَوْ شَاءَ الرَّحْمَٰنُ مَا عَبَدْنَاهُم ۗ مَّا لَهُم بِذَٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۖ إِنْ هُمْ

---

[1] يُنَشَّؤُا यह نَشُوءٌ धातु से बना है, पालन-पोषण के अर्थ में। नारियों के दो गुणों का वर्णन यहाँ विशेष रूप से किया गया है। १- उनका पालन-पोषण आभूषणों तथा शोभा में होता है, अर्थात बोध की आँखें खुलते ही उनका ध्यान शोभा एवं सौन्दर्य की वस्तुओं की ओर हो जाता है। अभिप्राय इस वर्णन से यह है कि जिनकी दशा यह है, वे अपने व्यक्तिगत विषय का सुधार करने की भी योग्यता तथा क्षमता नहीं रखतीं। २- यदि किसी से वाद-विवाद हो तो वह अपनी बात भी सही ढंग से (प्राकृतिक लज्जा के कारण) स्पष्ट नहीं कर सकतीं, न अपने प्रतिद्वंदी के तर्क का तोड़ ही कर सकती हैं। यह नारी की वह दो प्राकृतिक कमज़ोरियाँ हैं जिनके कारण पुरूष स्त्री पर एक गुणा प्रधानता रखते हैं। वाक्य-क्रम से भी पुरूष की प्रधानता स्पष्ट है, क्योंकि बात इसी प्रकरण में अर्थात नर-नारी में जो स्वाभाविक अन्तर है, जिसके कारण बच्ची के मुक़ाबिले में बच्चे के जन्म को अधिक पसन्द किया जाता था, हो रही है।

[2]अर्थात प्रतिकार के लिये, क्योंकि फ़रिश्तों के अल्लाह की पुत्रियाँ होने का कोई प्रमाण उनके पास नहीं होगा।

[3]अर्थात स्वयं अपने से अल्लाह की इच्छा का सहारा, यह उनका एक बड़ा तर्क है, क्योंकि प्रत्यक्ष रूप से यह बात सही है कि अल्लाह की इच्छा के बिना कोई काम नहीं होता न हो सकता है। किन्तु ये इससे अनभिज्ञ हैं कि उसकी इच्छा, उसकी प्रसन्नता से अलग चीज़ है। सभी कार्य निश्चय उसकी इच्छा से ही होता है, किन्तु वह प्रसन्न उन्हीं कर्मों से होता है जिनका उसने आदेश दिया है, न कि प्रत्येक उस कर्म से जो इंसान अल्लाह की चाहत से करता है। इन्सान चूँकि चोरी, कुकर्म, अत्याचार तथा बड़े-बड़े पाप करता है।

إِلَّا يَخْرُصُونَ ﴿٢٠﴾

(असत्य बातें) कहते हैं।

أَمْ آتَيْنَاهُمْ كِتَابًا مِّن قَبْلِهِ فَهُم بِهِ مُسْتَمْسِكُونَ ﴿٢١﴾

(२१) क्या हमने इससे पूर्व उन्हें (अन्य) कोई किताब प्रदान की है, जिसे ये दृढ़ता से पकड़े हुए हैं ?[1]

بَلْ قَالُوا إِنَّا وَجَدْنَا آبَاءَنَا عَلَىٰ أُمَّةٍ وَإِنَّا عَلَىٰ آثَارِهِم مُّهْتَدُونَ ﴿٢٢﴾

(२२) (नहीं-नहीं) बल्कि ये तो कहते हैं कि हमने अपने पूर्वजों को एक धर्म पर पाया तथा हम उन्हीं के पद चिन्हों पर चल कर संमार्ग प्राप्त हैं।

وَكَذَٰلِكَ مَا أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ فِي قَرْيَةٍ مِّن نَّذِيرٍ إِلَّا قَالَ مُتْرَفُوهَا إِنَّا وَجَدْنَا آبَاءَنَا عَلَىٰ أُمَّةٍ وَإِنَّا عَلَىٰ آثَارِهِم مُّقْتَدُونَ ﴿٢٣﴾

(२३) तथा इसी प्रकार आपसे पहले भी हमने जिस बस्ती में कोई डराने वाला भेजा, वहाँ के सम्पन्न लोगों ने यही उत्तर दिया कि हमने अपने पूर्वजों को (एक डगर पर एवं) एक धर्म पर पाया तथा हम तो उन्हीं के पद चिन्हों का अनुगमन करने वाले हैं।

قُلْ أَوَلَوْ جِئْتُكُم بِأَهْدَىٰ مِمَّا

(२४) (नबी ने) कहा भी कि यद्यपि मैं उससे अत्योत्तम (लक्ष्य तक पहुँचाने वाला) मार्ग

यदि अल्लाह चाहे तो किसी को यह पाप करने का सामर्थ्य ही न दे, तुरन्त उसका हाथ पकड़ ले, उसके पाँव को रोक दे, उसकी आँखें अंधी कर दे। किन्तु यह दबाव होगा, जबकि उसने मनुष्य को संकल्प तथा इच्छा की स्वाधीनता दी है ताकि उसकी परीक्षा ली जाये। अत: उसने दोनों प्रकार के कर्मों का स्पष्ट वर्णन कर दिया है, जिनसे प्रसन्न होता है उनकी भी तथा जिनसे अप्रसन्न होता है उनकी भी। इंसान दोनों प्रकार के कर्मों में से जो भी कर्म करेगा अल्लाह उसका हाथ नहीं पकड़ेगा, किन्तु यदि वह काम अपराध तथा पाप का होगा तो निश्चय वह उससे अप्रसन्न होगा कि उसने अल्लाह के दिये अधिकार का गलत प्रयोग किया। फिर भी अल्लाह यह अधिकार संसार में उससे वापस नहीं लेगा। हाँ, उसका दण्ड क़यामत के दिन देगा।

[1]अर्थात क़ुरआन से पहले कोई किताब, जिसमें उन्हें अल्लाह के सिवा किसी की उपासना (इबादत) करने का अधिकार दिया गया है, जिसे उन्होंने दृढ़ता से थाम रखा है ? अर्थात ऐसा नहीं है बल्कि पूर्वजों के अनुगमन के अतिरिक्त उनके पास कोई प्रमाण नहीं है।

وَجَدْتُّمْ عَلَيْهِ اٰبَآءَكُمْ ؕ قَالُوْٓا اِنَّا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿٢٤﴾

लेकर आया हूँ जिस पर तुमने अपने पूर्वजों को पाया तो उन्होंने उत्तर दिया कि हम उसे नहीं मानने वाले हैं जिसे देकर तुम्हें भेजा गया है।[1]

فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٢٥﴾

(२५) तो हमने उनसे प्रतिशोध लिया तथा देख ले झुठलाने वालों का क्या परिणाम हुआ ?

وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖٓ اِنَّنِيْ بَرَآءٌ مِّمَّا تَعْبُدُوْنَ ﴿٢٦﴾

(२६) तथा जबकि इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने अपने पिता से तथा अपने समुदाय से कहा कि मैं इन बातों से अलग हूँ जिनकी तुम पूजा करते हो।

اِلَّا الَّذِيْ فَطَرَنِيْ فَاِنَّهٗ سَيَهْدِيْنِ ﴿٢٧﴾

(२७) अतिरिक्त उस शक्ति के जिसने मुझे पैदा किया है तथा वही मेरा मार्गदर्शन भी करेगा।[2]

وَجَعَلَهَا كَلِمَةًۢ بَاقِيَةً فِيْ

(२८) तथा इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) उसी को अपनी संतान में भी शेष रहने वाली बात[3]

---

[1]अर्थात अपने पूर्वजों के अनुगमन में इतने पक्के थे कि पैग़म्बर का स्पष्टीकरण तथा तर्क भी उन्हें फेर नहीं सका। यह आयत अन्धे अनुगमन के खंडन तथा उसकी निंदा पर वहुत बड़ा प्रमाण है। (देखिये शौकानी की फ़तहुल क़दीर)

[2]अर्थात जिसने मुझे पैदा किया है, वह अपने धर्म की समझ भी मुझे देगा तथा उस पर स्थिर भी रखेगा। मैं मात्र उसी की उपासना करूँगा।

[3]अर्थात इस धर्म-सूत्र لا إله إلا الله (ला एलाह इल्लल्लाह) की वसीयत अपनी संतान को भी कर गये। जैसे फ़रमाया :

﴿وَوَصّٰى بِهَآ اِبْرٰهٖمُ بَنِيْهِ وَيَعْقُوْبُ﴾

"इब्राहीम तथा याक़ूब ने इसकी वसीयत अपनी संतान को की।" (*अल-बक़र:-१३२*)

कुछ ने جعلها में कर्ता अल्लाह को माना है, अर्थात अल्लाह ने इस धर्म-सूत्र को इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पश्चात उनकी संतान में शेष रखा तथा वे केवल एक अल्लाह के उपासक रहे।

عَقِبِهٖ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٢٨﴾

स्थापित कर गये ताकि लोग (मिश्रणवाद से) बचते रहें ।[1]

بَلْ مَتَّعْتُ هٰٓؤُلَآءِ وَ اٰبَآءَهُمْ حَتّٰى جَآءَهُمُ الْحَقُّ وَرَسُوْلٌ مُّبِيْنٌ ﴿٢٩﴾

(२९) बल्कि मैंने उन लोगों को तथा उनके पूर्वजों को सामान (एवं साधन) [2] प्रदान किया यहाँ तक कि उनके पास सत्य एवं स्पष्ट रूप से सुनाने वाला रसूल आ गया ।[3]

وَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ وَّاِنَّا بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿٣٠﴾

(३०) तथा सत्य के पहुँचते ही ये बोल पड़े कि यह तो जादू है तथा हम इसको अस्वीकार करने वाले हैं ।[4]

وَقَالُوْا لَوْلَا نُزِّلَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ عَلٰى رَجُلٍ مِّنَ الْقَرْيَتَيْنِ عَظِيْمٍ ﴿٣١﴾

(३१) तथा कहने लगे कि यह क़ुरआन इन दोनों बस्तियों में से किसी सम्पन्न व्यक्ति पर क्यों अवतरित नहीं किया गया ।[5]

---

[1]अर्थात इब्राहीम की संतान में यह एकेश्वरवादी इसलिए पैदा किये ताकि उनके तौहीद (अद्वैत) के उपदेश से लोग शिर्क (मिश्रणवाद) से रूकते रहें । لَعَلَّهم में सर्वनाम मक्कावासियों की ओर फिरता है । अर्थात संभवत: मक्कावासी इस धर्म की ओर लौट आयें जो ईशदूत माननीय इब्राहीम का धर्म था जो विशुद्ध तौहीद पर आधारित था न कि शिर्क (बहुदेववाद) पर ।

[2]यहाँ से फिर उन वरदानों की चर्चा हो रही है जो अल्लाह ने उन्हें प्रदान किये थे तथा वरदानों के पश्चात प्रकोप में शीघ्रता नहीं की, अपितु उन्हें पूरा अवसर दिया जिससे वह धोखे में पड़ गये तथा मन के बन्दे बन गये ।

[3]सत्य से पवित्र क़ुरआन तथा दूत से आदरणीय मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अभिप्राय हैं । مُبِين रसूल का विशेषण (गुण) है, खोल-खोल कर वर्णन करने वाला अथवा जिसका ईशदूत होना स्पष्ट है । इसमें कोई शंका और गोपनीयता नहीं ।

[4]क़ुरआन को जादू कहकर उसका इंकार कर दिया तथा अगले शब्दों में आदरणीय नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अपमान तथा निरादर किया ।

[5]दोनों नगरों से तात्पर्य मक्का तथा ताएफ़ है तथा बड़े व्यक्तियों से अभिप्राय अधिकतर भाष्यकारों के निकट मक्का का वलीद पुत्र मुग़ीरह तथा ताएफ़ का उरवह पुत्र मसऊद सक़फ़ी है । कुछ ने और अन्य लोगों के नाम उल्लेख किये हैं । फिर भी उद्देश्य इससे एक

(३२) क्या आपके प्रभु की दया को ये वितरण करते हैं ?[1] हमने ही उनके सांसारिक जीवन की जीविका उनमें वितरण की है तथा एक को दूसरे से श्रेष्ठ किया है ताकि एक-दूसरे को अधीन में कर ले ।[2] और जिसे ये लोग एकत्रित करते फिरते हैं, उससे आपके प्रभु की दया अति उत्तम है ।[3]

أَهُمْ يَقْسِمُونَ رَحْمَتَ رَبِّكَ ۚ نَحْنُ قَسَمْنَا بَيْنَهُم مَّعِيشَتَهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۚ وَرَفَعْنَا بَعْضَهُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجَاتٍ لِّيَتَّخِذَ بَعْضُهُم بَعْضًا سُخْرِيًّا ۗ وَرَحْمَتُ رَبِّكَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ ﴿٣٢﴾

(३३) तथा यदि यह बात नहीं होती कि सभी

وَلَوْلَا أَن يَكُونَ النَّاسُ أُمَّةً وَاحِدَةً

ऐसे व्यक्ति का चुनाव है जो पहले ही से श्रेष्ठ पद वाला हो, धनवान एवं अपनी जाति में माना हुआ हो । अर्थात यदि क़ुरआन अवतरित होता, तो दोनों नगरों में से किसी ऐसे ही व्यक्ति पर अवतरित होता न कि मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर जिनके पास दुनिया का धन नहीं, न अपनी जाति में नेतृत्व एवं प्रधानता के पद पर आसीन हैं ।

[1] رحمت (रहमत) अनुग्रह के अर्थ में है, तथा यहाँ सबसे बड़ा अनुग्रह 'नबूअत' अभिप्राय है । प्रश्न नकारत्मक है । अर्थात यह काम उनका नहीं है कि प्रभु के वरदानों, विशेष रूप से नबूअत (दूतत्व) को अपनी इच्छा से वितरण करें । अपितु यह केवल प्रभु का काम है, क्योंकि वही सब बातों तथा प्रत्येक व्यक्ति की स्थिति से पूर्णत: अवगत है । वही समझता है कि इंसानों में नबूअत का ताज (मुकुट) किसके सिर पर रखना है तथा अपनी प्रकाशना (वह्यी) से किसे सम्मानित करना है ।

[2]अर्थात धन-सम्पत्ति तथा मान-मर्यादा तथा बुद्धि एवं बोध में यह अंतर हमने इसलिये रखा है ताकि अधिक धनवाला कम धनवाले से, उच्च पद वाला नीचे के अधिकारियों से तथा बोध एवं विवेक में अधिक अपने से कम बुद्धि रखने वाले से काम ले सके । अल्लाह की इस पूर्ण हिक्मत से विश्व (सृष्टि) की व्यवस्था उत्तम रूप से चल रही है । यदि सब धन, पद, ज्ञान तथा बोध में तथा अन्य सांसारिक साधनों में समान होते तो कोई किसी का काम करने के लिए तैयार न होता । इसी प्रकार तुच्छ तथा हीन समझे जाने वाले काम को भी कोई न करता । यह इंसानी ज़रूरत है जो परमेश्वर ने अंतर तथा भिन्नता में रख दी है, जिसके कारण प्रत्येक इंसान दूसरे इंसान बल्कि इंसानों की ज़रूरत रखता है । सभी मानवीय आवश्यकतायें, कोई व्यक्ति चाहे वह अरबपति क्यों न हो, अन्य व्यक्तियों की सहायता के बिना पूरी नहीं कर सकता ।

[3]इस رحمت दया से तात्पर्य आख़िरत के वह वरदान हैं जो अल्लाह ने अपने सदाचारी बंदों के लिए तैयार कर रखे हैं ।

लोग एक ही तरीके पर हो जायेंगे [1] तो दयालु के साथ कुफ़्र करने वालों के घरों की छतों को हम चाँदी की बना देते तथा सीढ़ियों को भी जिन पर वे चढ़ा करते।

لَجَعَلْنَا لِمَن يَكْفُرُ بِالرَّحْمَٰنِ لِبُيُوتِهِمْ سُقُفًا مِّن فِضَّةٍ وَمَعَارِجَ عَلَيْهَا يَظْهَرُونَ ﴿٣٣﴾

(३४) तथा उनके घरों के द्वार तथा तख़्त (आसन) भी जिन पर वे तकिया लगा-लगा कर बैठते।

وَلِبُيُوتِهِمْ أَبْوَابًا وَسُرُرًا عَلَيْهَا يَتَّكِئُونَ ﴿٣٤﴾

(३५) तथा स्वर्ण के भी,[2] तथा ये सब कुछ यूँही सा साँसारिक लाभ है तथा आख़िरत तो आपके प्रभु के निकट केवल सदाचारियों के लिए (ही) है।[3]

وَزُخْرُفًا ۚ وَإِن كُلُّ ذَٰلِكَ لَمَّا مَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۚ وَالْآخِرَةُ عِندَ رَبِّكَ لِلْمُتَّقِينَ ﴿٣٥﴾

(३६) तथा जो व्यक्ति अल्लाह की याद से आलस्य करे[4] हम उस पर एक शैतान निर्धारित कर देते हैं; वही उसका साथी रहता है।[5]

وَمَن يَعْشُ عَن ذِكْرِ الرَّحْمَٰنِ نُقَيِّضْ لَهُ شَيْطَانًا فَهُوَ لَهُ قَرِينٌ ﴿٣٦﴾

---

[1]अर्थात माया-मोह के कारण दुनिया के अभिलाषी हो जायेंगे तथा परलोक एवं अल्लाह की प्रसन्नता की खोज भूल जायेंगे।

[2]अर्थात कुछ चीज़ें चाँदी की तथा कुछ सोने की, क्योंकि विभिन्नता में शोभा अधिक होती है। अभिप्राय यह है कि दुनिया का धन हमारी दृष्टि में इतना तुच्छ है कि यदि उपरोक्त ख़तरा न होता तो अल्लाह के मुन्किरों को ख़ूब धन दिया जाता परन्तु उसमें भय यही था कि सब लोग माया-मोह में न पड़ जायें। दुनिया की हीनता उस हदीस से भी स्पष्ट होती है जिसमें फ़रमाया : "لو كانت الدنيا تزن عند الله جناح بعوضة ما سقى منها كافرا شربة ماء" "यदि दुनिया का मूल्य अल्लाह के निकट एक मच्छर के पंख के बराबर भी होता तो अल्लाह तआला काफ़िरों को एक घूंट पानी भी पीने को नहीं देता।" (तिर्मिज़ी, इब्ने माजा, किताबुज़ ज़ोहद)

[3]जो मिश्रणवाद एवं पापों से बचते तथा अल्लाह की आज्ञा पालन करते रहे, उनके लिए परलोक के सुख एवं वरदान हैं जिनका अन्त एवम् विनाश नहीं।

[4]عَشَا يَعْشُو का अर्थ है आँखों का रोग रतौंधी अथवा उसके कारण जो अंधापन होता है, अर्थात जो अल्लाह की याद (स्मरण) से अंधा हो जाये।

[5]वह शैतान अल्लाह की याद की अपेक्षा करने वालों का साथी बन जाता है तथा प्रत्येक

وَإِنَّهُمْ لَيَصُدُّونَهُمْ عَنِ السَّبِيلِ وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُم مُّهْتَدُونَ ﴿٣٧﴾

(३७) तथा वह उन्हें मार्ग से रोकते हैं तथा यह उसी विचार में रहते हैं कि यह संमार्ग प्राप्त हैं ।[1]

حَتَّىٰ إِذَا جَاءَنَا قَالَ يَا لَيْتَ بَيْنِي وَبَيْنَكَ بُعْدَ الْمَشْرِقَيْنِ فَبِئْسَ الْقَرِينُ ﴿٣٨﴾

(३८) यहाँ तक कि जब वह हमारे पास आयेगा तो कहेगा कि काश मेरे तथा तेरे मध्य पूर्व एवं पश्चिम की दूरी होती, तू बड़ा बुरा साथी है ।[2]

وَلَن يَنفَعَكُمُ الْيَوْمَ إِذ ظَّلَمْتُمْ أَنَّكُمْ فِي الْعَذَابِ مُشْتَرِكُونَ ﴿٣٩﴾

(३९) तथा जबकि तुम अत्याचारी सिद्ध हो चुके तो तुम्हें आज कदापि तुम सबकी यातना में सहभागी होना कोई लाभकारी न होगा ।

أَفَأَنتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ أَوْ تَهْدِي الْعُمْيَ وَمَن كَانَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٤٠﴾

(४०) तो क्या तू बहरे को सुना सकता है अथवा अंधे को मार्ग दिखा सकता है तथा उसे जो खुली गुमराही में हो ।[3]

समय उनके संग रहता है । अथवा इंसान स्वयं उसी शैतान का साथी बन जाता है तथा उससे अलग नहीं होता अपितु सभी विषयों में उसका अनुगमन तथा सभी बहकावे में उसका अनुपालन करता है ।

[1]अर्थात वह शैतान उसके तथा सत्यमार्ग के बीच आड़ बन जाते हैं तथा उससे उन्हें रोकते हैं तथा उन्हें बराबर समझाते रहते हैं कि तुम सत्य पर हो, यहाँ तक कि वह अपने वारे में इसी भ्रम में पड़ जाते हैं कि वह सत्य पर हैं । अथवा काफ़िर शैतानों के वारे में यह समझते हैं कि यह सही हैं तथा उनका अनुपालन करते रहते हैं । (फ़तहुल क़दीर)

[2] مَشْرِقَيْنِ द्विवचन है । तात्पर्य पूर्व-पश्चिम हैं । فَبِئْسَ الْقَرِينُ का विशेष्य लुप्त है । أنت أيها الشَّيْطَان शैतान तू बड़ा बुरा साथी है । यह काफ़िर क़यामत के दिन कहेगा किन्तु उस दिन इसे स्वीकार से क्या लाभ ?

[3]अर्थात जिसके लिए सदा का दुर्भाग्य लिख दिया गया है वह शिक्षा-दिक्षा से बहरा तथा अंधा है । तेरी शिक्षा तथा सदुपदेश से वह सीधी डगर पर नहीं आ सकता । यह प्रश्न नकारात्मक है । जैसे बहरा सुनने से तथा अंधा देखने से वंचित है इसी प्रकार खुली गुमराही में ग्रस्त व्यक्ति सत्य की ओर आने से वंचित है । यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सांत्वना है ताकि ऐसे लोगों के कुफ़्र (इंकार) से आप अधिक व्याकुलता का संवेदन न करें ।

فَإِمَّا نَذْهَبَنَّ بِكَ فَإِنَّا مِنْهُم مُّنتَقِمُونَ ﴿٤١﴾

(४१) फिर यदि हम तुझे यहाँ से[1] ले भी जायें तो भी हम उनसे बदला लेने वाले हैं ।[2]

أَوْ نُرِيَنَّكَ الَّذِي وَعَدْنَاهُمْ فَإِنَّا عَلَيْهِم مُّقْتَدِرُونَ ﴿٤٢﴾

(४२) अथवा जो कुछ उनसे वादा किया है[3] वह तुझे दिखा दें; हम उन पर भी सामर्थ्य रखते हैं ।[4]

فَاسْتَمْسِكْ بِالَّذِي أُوحِيَ إِلَيْكَ ۖ إِنَّكَ عَلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٤٣﴾

(४३) तो जो प्रकाशना आपकी ओर की गयी है उसे दृढ़ता से थामे रहें ।[5] वस्तुत: आप सीधे मार्ग पर हैं ।[6]

وَإِنَّهُ لَذِكْرٌ لَّكَ وَلِقَوْمِكَ ۖ

(४४) तथा नि:संदेह यह (स्वयं) आपके लिए तथा आपकी जाति[7] के लिए शिक्षा है तथा

---

[1]अर्थात तुझे मौत आ जाये इस से पहले कि उन पर प्रकोप आये अथवा तुझे मक्का से निकाल ले जायें ।

[2]दुनिया ही में यदि हमारी इच्छा की मार्ग हुई । अन्य दशा में पारलौकिक यातना से तो वह किसी रूप में बच नहीं सकते ।

[3]अर्थात तेरी मृत्यु से पूर्व अथवा मक्के ही में तेरे रहते हुए उन पर प्रकोप भेज दें ।

[4]अर्थात हम जब चाहें उन पर प्रकोप उतार सकते हैं क्योंकि हम उन पर समर्थ हैं, जैसाकि आपके जीवन ही में बद्र के रण में काफ़िर शिक्षाप्रद पराजय तथा अपमान से दोचार हुए ।

[5]अर्थात पवित्र क़ुरआन को चाहे कोई भी झुठलाता रहे ।

[6]यह فَاسْتَمْسِكْ का कारण है ।

[7]इसे विशेष करने का अभिप्राय यह नहीं कि दूसरों के लिए सदुपदेश नहीं बल्कि प्रथम संबोधित चूँकि क़ुरैश थे, इसलिए उनकी चर्चा की । अन्यथा क़ुरआन तो पूरे जगत के लिए सदुपदेश है । ﴿وَمَا هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعَالَمِينَ﴾ (*सूर: अल-क़लम*-५२) जैसे आपको आदेश दिया गया कि ﴿وَأَنذِرْ عَشِيرَتَكَ الْأَقْرَبِينَ﴾ "अपने समीपवर्ती संबंधियों को ही डराइये ।" (*अश्शुअरा*-२१४) इसका अभिप्राय यह नहीं है कि अल्लाह का उपदेश मात्र संबंधियों को पहुँचाना है । अपितु अर्थ यह है कि आमन्त्रण का आरम्भ अपने परिवार ही से करें । कुछ ने यहाँ ذكر (ज़िक्र) का अर्थ प्रतिष्ठा लिया है अर्थात यह क़ुरआन तेरे जाति के लिये

وَسَوْفَ تُسْـَٔلُونَ ﴿٤٤﴾

निकट भविष्य में तुम लोग पूछे जाओगे।

وَسْـَٔلْ مَنْ أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ مِن رُّسُلِنَآ أَجَعَلْنَا مِن دُونِ ٱلرَّحْمَٰنِ ءَالِهَةً يُعْبَدُونَ ﴿٤٥﴾

(४५) तथा हमारे उन नबियों से मालूम करो जिन्हें हमने[1] आपसे पूर्व भेजा था कि क्या हमने दयालु के अतिरिक्त अन्य देवता निर्धारित किये थे जिनकी पूजा की जाये ?[2]

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِـَٔايَٰتِنَآ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَإِي۟هِۦ فَقَالَ إِنِّى رَسُولُ رَبِّ ٱلْعَٰلَمِينَ ﴿٤٦﴾

(४६) तथा हमने मूसा (अलैहिस्सलाम) को अपनी निशानियाँ देकर फ़िरऔन तथा उसके राज्य-प्रमुखों के पास भेजा तो(मूसा ने जाकर) कहा कि मैं सर्वलोक के प्रभु का रसूल (संदेशवाहक) हूँ।[3]

प्रतिष्ठा का हेतु है कि यह उनकी भाषा में उतरा। उसको वह सर्वाधिक समझने वाले हैं। इसके द्वारा वे पूरे विश्व पर प्रधानता प्राप्त कर सकते हैं इसलिए उनको चाहिए कि इसे अपनायें तथा उसकी माँग पर सर्वाधिक कर्म करें।

[1]पैग़म्बरों से यह प्रश्न या तो इस्रा तथा मेराज के अवसर पर बैतुल मोकद्दस में हुआ अथवा आसमान पर किया गया, जहाँ अम्बिया (ईशदूतों) से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की भेंट हुई। अथवा أُمَمٌ का शब्द लुप्त है, अर्थात उनके अनुयायियों (अहले किताब-ग्रंथधारी यहूदियों एवं ईसाईयों) से पूछो, क्योंकि वे उनकी शिक्षाओं से परिचित हैं तथा उनके ऊपर अवतरित धर्मशास्त्र उनके पास मौजूद हैं।

[2]उत्तर अवश्य (नि:सन्देह) नकारात्मक है अल्लाह ने किसी भी नबी को यह आदेश नहीं किया। अपितु इसके विपरीत प्रत्येक नबी को तौहीद के प्रचार का ही आदेश दिया गया।

[3]मक्का के क़ुरैश ने कहा था कि यदि अल्लाह किसी को नबी बनाकर भेजता तो मक्का अथवा तायफ़ के किसी ऐसे व्यक्ति पर भेजता जो धनी तथा पदाधिकारी होता। जैसे फ़िरऔन ने भी माननीय मूसा के मुक़ाबिले में कहा था कि मैं मूसा से उत्तम हूँ तथा यह मुझसे हीन है, यह तो साफ बोल भी नहीं सकता, जैसाकि आगे आ रहा है। संभवत: इसी समान स्थिति के कारण यहाँ मूसा तथा फ़िरऔन का वाक्य दुहराया जा रहा है। इसके सिवा इसमें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिये सांत्वना का पक्ष भी है कि आदरणीय मूसा को भी बहुत सी परीक्षाओं से गुज़रना पड़ा, उन्होंने धैर्य तथा साहस से काम लिया। इसी प्रकार आप भी मक्का के काफ़िरों के कष्टों एवं अनुचित व्यवहारों से हताश न हों, धैर्य तथा साहस से काम लें। आदरणीय मूसा के समान ही अन्ततः विजय तथा सफलता

فَلَمَّا جَآءَهُم بِـَٔايَٰتِنَآ إِذَا هُم مِّنْهَا يَضْحَكُونَ ﴿٤٧﴾

(४७) तो जब वह हमारी निशानियाँ लेकर उनके पास आये तो वे सहसा उन पर हँसने लगे ।[1]

وَمَا نُرِيهِم مِّنْ ءَايَةٍ إِلَّا هِىَ أَكْبَرُ مِنْ أُخْتِهَا ۖ وَأَخَذْنَٰهُم بِٱلْعَذَابِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٤٨﴾

(४८) तथा हम जो निशानी उनको दिखाते थे, वे अन्य से बढ़ी-चढ़ी होती थी[2] तथा हमने उन्हें यातना में पकड़ा ताकि वे रूक जायें ।[3]

وَقَالُوا۟ يَـٰٓأَيُّهَ ٱلسَّاحِرُ ٱدْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِندَكَ إِنَّنَا لَمُهْتَدُونَ ﴿٤٩﴾

(४९) तथा उन्होंने कहा कि हे जादूगर,[4] हमारे लिए अपने प्रभु से उसकी[5] प्रार्थना कर जिसका उसने तुझे वचन दे रखा है ।[6] विश्वास

आप ही की है तथा यह मक्कावासी फ़िरऔन ही की भाँति असफल तथा पराजित होंगे ।

[1]जब आदरणीय मूसा ने फ़िरऔन तथा उसके दरबारियों को तौहीद (एकेश्वरवाद) की दावत (आमन्त्रण) दिया तो उन्होंने उनके ईशदूत होने का प्रमाण माँगा जिस पर उन्होंने वह चमत्कार एवं प्रमाण प्रस्तुत किये, जो अल्लाह ने उन्हें प्रदान किये थे, जिन्हें देखकर उन्होंने उपहास किया तथा कहा कि यह कौन-सी बड़ी चीज़ें हैं, यह तो जादू द्वारा हम भी प्रस्तुत (पेश) कर सकते हैं ।

[2]इन निशानियों से वह निशानियाँ अभिप्राय हैं जो तूफ़ान, टिड्डी दल, जुयें, मेढक तथा रक्त आदि के रूप में दिखायी गयीं, जिनकी चर्चा सूर: आराफ़ आयत नं॰ १३३-१३५ में आ चुकी है । बाद की प्रत्येक निशानी पहली निशानी से बढ़कर होती, जिससे माननीय मूसा की सच्चाई स्पष्ट से स्पष्टतम हो जाती ।

[3]उद्देश्य इन निशानियों अथवा प्रकोप से यह होता था कि शायद वह झुठलाने से रूक जायें ।

[4]कहते हैं कि उस युग में जादू बुरी चीज़ न थी तथा विद्वानों को भी सम्मान स्वरूप जादूगर कहा जाता था । इसके अलावा, चमत्कारों तथा निशानियों के संबंध में भी उनका विचार था कि यह मूसा की जादू-कला का चमत्कार है । इसलिए उन्होंने मूसा अलैहिस्सलाम को तांत्रिक के शब्द से संबोधित किया ।

[5]'अपने प्रभु से' के शब्द अपनी मिश्रणवादी (अनेकेश्वरवादी) मांसिकता के कारण कहा, क्योंकि अनेकेश्वरवादियों में अनेक पभु तथा पूज्य होते थे, मूसा अपने पभु से यह काम करा लो ।

[6]अर्थात हमारे ईमान लाने पर प्रकोप टालने का वा दा ।

कर कि हम मार्ग पर लग जायेंगे ।[1]

فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ إِذَا هُمْ يَنْكُثُونَ ﴿٥٠﴾

(५०) फिर जब हमने उन पर से वह प्रकोप हटा लिया तो उन्होंने उसी समय अपना वचन तथा प्रतिज्ञा तोड़ दिया ।

وَنَادَىٰ فِرْعَوْنُ فِي قَوْمِهِ قَالَ يَٰقَوْمِ أَلَيْسَ لِي مُلْكُ مِصْرَ وَهَٰذِهِ الْأَنْهَٰرُ تَجْرِي مِنْ تَحْتِي ۖ أَفَلَا تُبْصِرُونَ ﴿٥١﴾

(५१) तथा फ़िरऔन ने अपने समुदाय में घोषणा करायी तथा कहा[2] कि हे मेरी जाति के लोगो, क्या मिस्र का देश मेरा नहीं तथा मेरे राजभवनों के नीचें जो ये नहरें बह रही हैं ?[3] क्या तुम देखते नहीं ?

أَمْ أَنَا خَيْرٌ مِّنْ هَٰذَا الَّذِي هُوَ مَهِينٌ وَلَا يَكَادُ يُبِينُ ﴿٥٢﴾

(५२) बल्कि मैं श्रेष्ठ हूँ इसकी अपेक्षा जो हीन है[4] तथा साफ़ बोल भी नहीं सकता ।[5]

فَلَوْلَا أُلْقِيَ عَلَيْهِ أَسْوِرَةٌ مِّنْ ذَهَبٍ أَوْ جَاءَ مَعَهُ الْمَلَٰٓئِكَةُ مُقْتَرِنِينَ ﴿٥٣﴾

(५३) अच्छा, इस पर स्वर्ण के कंगन क्यों नहीं उतरे [6] अथवा उसके साथ झुण्ड एवं घटा बाँधकर

---

[1]यदि यह प्रकोप टल गया तो हम तुझे अल्लाह का सच्चा रसूल मान लेंगे तथा तेरे ही प्रभु की उपासना करेंगे, जैसाकि आगामी आयत में है तथा *सूरह आराफ़* में भी गुज़रा ।

[2]जब माननीय मूसा ने ऐसी कई निशानियाँ प्रस्तुत कर दीं जो एक से बढ़कर एक थीं तो फ़िरऔन को यह भय हुआ कि कहीं मेरी जाति मूसा की ओर आकर्षित न हो जाये । इसलिए उसने अपनी पराजय का धब्बा छुपाने के लिए तथा समुदाय को निरन्तर धोखे में रखने के लिए यह नई चाल चली कि अपने शासन तथा अधिकार के हवाले से मूसा का निरादर तथा अपमान दिखाया जाये ताकि मेरी जाति मेरे राज्य तथा आधिपत्य से ही भयभीत रहे ।

[3]इससे अभिप्राय नील नदी अथवा उसकी कुछ शाखायें हैं जो उसके राजभवन के नीचे से गुज़रती थीं ।

[4] أَمْ इजराव अर्थात एक विषय से बात को दूसरे विषय की ओर फेरने के लिए अर्थात بَلْ (बल्कि) के अर्थ में है । कुछ के विचार में प्रश्नवाची ही है ।

[5]यह ईशदूत मूसा अलैहिस्सलाम के तुतलेपन की ओर संकेत है जैसाकि *सूरः ताहा* में गुज़रा ।

[6]उस युग में मिश्र तथा ईरान के राजा अपनी विशेषता दिखाने के लिए सोने के कंगन पहनते थे तथा गले में सोने का तौक़ तथा सिकड़ी डालते थे जो उनकी प्रधानता का प्रतीक समझा जाता था । इसी कारण फ़िरऔन ने आदरणीय मूसा के विषय में कहा कि

फ़रिश्ते ही आ जाते ।[1]

فَاسْتَخَفَّ قَوْمَهٗ فَاَطَاعُوْهُ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿۵۴﴾

(५४) तो उसने अपनी जाति के लोगों को प्रलोभन दिया तथा उन्होंने उसी की मान ली ।[2] नि:संदेह वे सारे ही अवज्ञाकारी लोग थे ।

فَلَمَّاۤ اٰسَفُوْنَا انْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَاَغْرَقْنٰهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿۵۵﴾

(५५) फिर जब उन्होंने हमें क्रोधित किया तो हमने उनसे बदला लिया तथा सब को डुबो दिया ।

فَجَعَلْنٰهُمْ سَلَفًا وَّ مَثَلًا لِّلْاٰخِرِيْنَ ﴿۵۶﴾

(५६) और हमने उन्हें गया-गुजरा कर दिया तथा बाद वालों के लिए नमूना बना दिया ।[3]

وَلَمَّا ضُرِبَ ابْنُ مَرْيَمَ مَثَلًا اِذَا قَوْمُكَ مِنْهُ يَصِدُّوْنَ ﴿۵۷﴾

(५७) तथा जब मरियम के पुत्र का उदाहरण वर्णन किया गया तो उससे तेरा समुदाय (प्रसन्नता से) पुकार उठा ।

وَقَالُوْۤا ءَاٰلِهَتُنَا خَيْرٌ اَمْ هُوَ ؕ مَا ضَرَبُوْهُ لَكَ اِلَّا جَدَلًا ؕ بَلْ هُمْ قَوْمٌ خَصِمُوْنَ ﴿۵۸﴾

(५८) तथा उन्होंने कहा कि हमारे देवता अच्छे हैं अथवा वह ? तुझसे उनका यह कहना मात्र झगड़े के उद्देश्य से है, बल्कि यह लोग हैं ही झगड़ालू ।[4]

यदि उसकी कोई मर्यादा की विशेषता होती एवम् कोई स्थान होता तो उसके हाथ में सोने के कंगन होने चाहिये थे ।

[1]जो इस बात की पुष्टि करते कि यह अल्लाह का रसूल (ईशदूत) है अथवा राजाओं के समान उसकी प्रतिष्ठा को प्रत्यक्ष करने के लिए उसके साथ होते ।

[2]अर्थात उसने अपनी जाति की बुद्धि को हल्की समझा अथवा कर दिया तथा उन्हें अपनी मूर्खता एवं कुपथ पर अडिग रहने की ताकीद की, तथा जाति उसकी अनुगामी बन गई ।

[3] آسَفُونا بمعنى أسخَطُونا अथवा أغضَبُونا के अर्थ में है अर्थात हमें क्रोधित कर दिया । سَلَفٌ यह سَالِفٌ का बहुवचन है । जैसे خادِمٌ، خَدَمٌ का तथा حارِسٌ का حَرَسٌ अर्थात बाद में आने वालों के लिये उनको शिक्षाप्रद तथा नमूना बना दिया कि वह इस प्रकार कुफ़्र एवं अत्याचार तथा बड़ाई एवं उपद्रव न करें । जैसे फ़िरऔन ने किया ताकि वह इस जैसे शिक्षाप्रद दुष्परिणाम से सुरक्षित रहें ।

[4]शिर्क (अनेकेश्वरवाद) के खंडन तथा मिथ्या उपास्यों की हीनता को स्पष्ट करने के लिए

إِنْ هُوَ إِلَّا عَبْدٌ أَنْعَمْنَا عَلَيْهِ وَجَعَلْنَٰهُ مَثَلًا لِّبَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ ۝٥٩

(५९) वह (ईसा अलैहिस्सलाम) भी केवल बंदा (भक्त) ही हैं, जिस पर हमने उपकार किया तथा उसे इस्राईल की सन्तान के लिए (अपने सामर्थ्य की) निशानी बनाया।[1]

जब मक्का के मूर्तिपूजकों से कहा जाता कि तुम्हारे संग तुम्हारे देवता भी नरक में जायेंगे तो इससे अभिप्राय वह पत्थर की मूर्तियाँ होती हैं जिनकी वह पूजा करते थे, न कि वह नेक लोग जो अपने जीवन में लोगों को तौहीद (अद्वैत) का आमंत्रण देते रहे किन्तु उनके निधन के पश्चात उनके प्रति श्रद्धालु लोगों ने उन्हें पूज्य समझना आरम्भ कर दिया। इसके संबंध में तो क़ुरआन करीम ने ही स्पष्ट कर दिया है कि यह नरक से दूर रहेंगे।

﴿ إِنَّ ٱلَّذِينَ سَبَقَتْ لَهُم مِّنَّا ٱلْحُسْنَىٰٓ أُو۟لَٰٓئِكَ عَنْهَا مُبْعَدُونَ ﴾

"नि:संदेह जिनके लिए हमारी ओर से पुण्य पूर्व ही में ठहर चुका है वे सब नरक से दूर ही रखे जायेंगे।" (*अल-अम्बिया-१०१*)

क्योंकि इसमें उनका कोई दोष नहीं था। इसलिए पवित्र क़ुरआन ने इसके लिए जो शब्द प्रयोग किया है, वह शब्द ما है जो निर्जीव के लिए प्रयुक्त होता है।

﴿ إِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُونَ مِن دُونِ ٱللَّهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ ﴾

"तुम और अल्लाह के अतिरिक्त जिन-जिन की तुम पूजा करते हो, सब नरक के ईंधन (जलावन) बनोगे।" (*अल-अम्बिया-९८*)

इससे अम्बिया (अलैहिमुस्सलाम) तथा वह धर्मात्मा निकल गये जिनको लोगों ने अपने विचार से पूज्य बनाये रखा होगा। अर्थात यह तो संभव है कि अन्य मूर्तियों के साथ उनके समरूप बनाई हुई मूर्तियाँ भी अल्लाह तआला नरक में डाल दे किन्तु वह लोग तो प्रत्येक स्थिति में नरक से दूर ही रहेंगे। किन्तु मूर्तिपूजक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुख से ईशदूत ईसा की शुभ चर्चा सुनकर झगड़ते कि जब ईसा प्रशंसनीय हैं यद्यपि ईसाईयों ने उन्हें पूज्य बना रखा है तो फिर हमारे पूज्य क्यों बुरे, क्या वह अच्छे नहीं ? अथवा यदि हमारे पूज्य नरक में जायेंगे तो आदरणीय ईसा तथा उज़ैर भी नरक में जायेंगे। अल्लाह ने यहाँ फ़रमाया : इनका ख़ुशी से चिल्लाना केवल इनका झगड़ना है। جَدَل का अभिप्राय ही यह होता है कि झगड़ालू जानता है कि उसके पास कोई प्रमाण नहीं, परन्तु केवल अपनी बात के पक्ष में वाद-विवाद से नहीं रूकता।

[1]एक, इसलिए कि बिना पिता के उनका जन्म हुआ। दूसरे, स्वयं उन्हें चमत्कार दिये गये मृतों को जीवित करना आदि, इसलिए भी।

(६०) यदि हम चाहते तो तुम्हारे बदले फ़रिश्ते कर देते जो धरती पर एक-दूसरे की उत्तराधिकारी का काम करते |[1]

وَلَوْ نَشَاۤءُ لَجَعَلْنَا مِنْكُمْ مَّلٰۤىِٕكَةً فِي الْاَرْضِ يَخْلُفُوْنَ ﴿٦٠﴾

(६१) तथा नि:संदेह वह (ईसा अलैहिस्सलाम) क़यामत के लक्षण हैं, [2] तो तुम क़यामत के विषय में संदेह न करो तथा मेरी बात मान लो, यही सीधा मार्ग है |

وَاِنَّهٗ لَعِلْمٌ لِّلسَّاعَةِ فَلَا تَمْتَرُنَّ بِهَا وَاتَّبِعُوْنِ ۗ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿٦١﴾

(६२) तथा शैतान तुम्हें रोक न दे, निश्चय वह तुम्हारा खुला शत्रु है |

وَلَا يَصُدَّنَّكُمُ الشَّيْطٰنُ ۚ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿٦٢﴾

(६३) तथा जब ईसा (अलैहिस्सलाम) चमत्कार लाये तो कहा कि मैं तुम्हारे पास हिक्मत (ज्ञान) लाया हूँ तथा इस लिए आया हूँ कि जिन कुछ बातों में तुम मतभेद करते हो,

وَلَمَّا جَاۤءَ عِيْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ قَالَ قَدْ جِئْتُكُمْ بِالْحِكْمَةِ وَلِاُبَيِّنَ لَكُمْ بَعْضَ الَّذِيْ تَخْتَلِفُوْنَ فِيْهِ ۚ

---

[1]अर्थात तुम्हारा अन्त करके तुम्हारी जगह धरती पर फ़रिश्तों को बसा देते, जो तुम्हारी ही भाँति एक-दूसरे के उत्तराधिकारी होते | अभिप्राय यह है कि फ़रिश्तों का आकाश पर रहना ऐसी श्रेष्ठता नहीं कि उन की उपासना की जाये, यह तो हमारी इच्छा एवं निर्णय है कि फ़रिश्तों को आकाश पर तथा इंसानों को धरती पर बसाया | हम चाहें तो फ़रिश्तों को धरती पर भी बसा सकते हैं |

[2] عِلْمٌ (इल्म) लक्षण तथा निशान के अर्थ में है| अधिकाँश व्याख्याकारों के निकट इसका अभिप्राय यह है कि क़यामत के निकट उनका आकाश से अवतरण होगा, जैसाकि विशुद्ध निरन्तर हदीसों से सिद्ध है | यह अवतरण इस बात का लक्षण होगा कि अब प्रलय निकट है | इसलिए कुछ ने अक्षर 'ऐन' तथा 'लाम' के ज़बर (दोनों पर 'अ' की मात्रा) के साथ عَلَمٌ पढ़ा है जिसका अर्थ ही लक्षण तथा चिन्ह है | कुछ के विचार में उनको प्रलय का लक्षण मानना उनके चमत्कारों तथा जन्म के आधार पर है | अर्थात जैसे अल्लाह ने उनको बिना पिता के पैदा किया, उनका यह जन्म इस बात का प्रतीक है कि अल्लाह क़यामत (प्रलय) के दिन सभी इन्सानों को पुन: जीवन प्रदान करेगा | अत: अल्लाह के सामर्थ्य को देखते हुए क़यामत के होने में कोई संदेह नहीं है | اِنَّهٗ में सर्वनाम आदरणीय ईसा की ओर संकेत है |

उन्हें स्पष्ट कर दूँ,[1] तो तुम अल्लाह (तआला) से डरो तथा मेरा कहा मानो।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿٦٣﴾

(६४) मेरा एवं तुम्हारा प्रभु मात्र अल्लाह (तआला) ही है तो तुम सब उसकी इबादत करो। सीधा मार्ग यही है।

اِنَّ اللّٰهَ هُوَ رَبِّيْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ۭ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿٦٤﴾

(६५) फिर (इस्राईल की संतान के) गुटों ने आपस में मतभेद किया,[2] तो अत्याचारियों के लिए ख़राबी है दुख वाले दिन की यातना से।

فَاخْتَلَفَ الْاَحْزَابُ مِنْۢ بَيْنِهِمْ ۚ فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْ عَذَابِ يَوْمٍ اَلِيْمٍ ﴿٦٥﴾

(६६) ये लोग मात्र क़यामत की प्रतीक्षा में हैं कि वह सहसा उन पर आ पड़े तथा उन्हें सूचना भी न हो।

هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا السَّاعَةَ اَنْ تَاْتِيَهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٦٦﴾

(६७) उस दिन (घनिष्ठ) मित्र भी एक-दूसरे के शत्रु बन जायेंगे सिवाय सदाचारियों के।[3]

اَلْاَخِلَّاۗءُ يَوْمَىِٕذٍۢ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ اِلَّا الْمُتَّقِيْنَ ﴿٦٧﴾

(६८) हे मेरे बंदो ! आज तो तुम पर कोई भय

يٰعِبَادِ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ وَلَآ اَنْتُمْ

---

[1]इसके लिए देखिये आले इमरान आयत नं॰ ५ की व्याख्या।

[2]इससे तात्पर्य यहूदी तथा इसाई हैं। यहूदियों ने आदरणीय ईसा अलैहिस्सलाम की निन्दा की तथा उन्हें (अल्लाह की शरण) व्याभिचार का पुत्र कहा जबकि इसाईयों ने अतिश्योक्ति से काम लेकर उन्हें उपास्य बना लिया। अथवा अभिप्राय इसाईयों के विभिन्न गिरोह हैं जो आदरणीय ईसा के विषय में एक-दूसरे से कड़ा विरोध रखते हैं। एक उन्हें अल्लाह का पुत्र, दूसरा अल्लाह, तीसरा तीन उपास्यों का तीसरा कहता है तथा एक गिरोह मुसलमानों की तरह उन्हें अल्लाह का बन्दा (दास) तथा उसका पैग़म्बर मानता है।

[3]क्योंकि काफ़िरों की मित्रता कुफ़्र तथा अवज्ञा एवं उल्लंघन के आधार पर होती है तथा यही अवज्ञा उनके यातना का कारण होंगी, जिसकी वजह से वह एक-दूसरे को दोष देंगे तथा परस्पर शत्रु हो जायेगें। इसके विपरीत, चूँकि ईमानवालों तथा सदाचारियों की मित्रता अल्लाह की प्रसन्नता के आधार पर होती है तथा यही धर्म एवं ईमान सत्कर्म तथा पुण्य का कारण है। उनसे उनकी मित्रता में कोई कटाव नहीं होगा। वह इसी प्रकार स्थापित रहेगी जिस प्रकार जगत में थी।

تَحْزَنُونَ ﴿٦٨﴾

तथा डर है तथा न तुम शोकग्रस्त होगे ।[1]

الَّذِينَ آمَنُوا بِآيَاتِنَا وَكَانُوا مُسْلِمِينَ ﴿٦٩﴾

(६९) जो हमारी आयतों पर ईमान लाये तथा थे भी वे (आज्ञाकारी) मुसलमान ।

ادْخُلُوا الْجَنَّةَ أَنتُمْ وَأَزْوَاجُكُمْ تُحْبَرُونَ ﴿٧٠﴾

(७०) तुम तथा तुम्हारी पत्नियाँ आनंदित एवं प्रसन्न होकर स्वर्ग में चले जाओ ।[2]

يُطَافُ عَلَيْهِم بِصِحَافٍ مِّن ذَهَبٍ وَأَكْوَابٍ ۖ وَفِيهَا مَا تَشْتَهِيهِ الْأَنفُسُ وَتَلَذُّ الْأَعْيُنُ ۖ وَأَنتُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٧١﴾

(७१) उनके चारों ओर स्वर्ण के थालों तथा स्वर्ण के गिलासों का दौर चलाया जायेगा ।[3] उनके मन जिस वस्तु को चाहें तथा जिससे उनकी आँखें आनंद प्राप्त करें, सब वहाँ होगा तथा तुम उसमें सदैव रहोगे ।[4]

وَتِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِي أُورِثْتُمُوهَا بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٧٢﴾

(७२) तथा यही वह स्वर्ग है कि तुम अपने कर्मों के बदले इसके उत्तराधिकारी बानये गये हो ।

لَكُمْ فِيهَا فَاكِهَةٌ كَثِيرَةٌ مِّنْهَا تَأْكُلُونَ ﴿٧٣﴾

(७३) यहाँ तुम्हारे लिए अत्याधिक मेवे हैं जिन्हें तुम खाते रहोगे ।

---

[1]यह क़यामत के दिन उन सदाचारियों से कहा जायेगा जो संसार में मात्र अल्लाह की प्रसन्नता के लिए आपस में प्रेम रखते थे, जैसाकि हदीसों में भी उसकी महत्ता आयी है । बल्कि अल्लाह के लिए मित्रता तथा बैर को पूर्ण ईमान का आधार बताया गया है ।

[2]أزواجكم से कुछ ने ईमानदार पत्नियाँ, कुछ ने ईमानदार साथी और कुछ ने स्वर्ग की हूरें भावार्थ लिया है । वे सब सहीह हैं क्योंकि स्वर्ग में यह सब कुछ ही होगा ।

[3] صِحَافٌ यह صَحْفَةٌ का बहुवचन है, प्लेट, थाली । सबसे बड़े बर्तन को جَفْنَةٌ कहा जाता है । उससे छोटा قَصْعَةٌ जिससे दस व्यक्ति का पेट भर जाता है । फिर صَحْفَةٌ (قصعة का आधा) फिर مِكِيلَةٌ है । अभिप्राय यह है कि स्वर्गवासियों को जो भोजन मिलेंगे वह सोने की थालियों में होंगे । (फ़तहुल क़दीर)

[4]अर्थात जैसे एक उत्तराधिकारी उत्तराधिकार का मालिक होता है, उसी प्रकार स्वर्ग भी एक उत्तराधिकार है जिसके उत्तराधिकारी वे होंगे जिन्होंने संसार में ईमान तथा सदाचार का जीवन निर्वाह किया होगा ।

إِنَّ الْمُجْرِمِينَ فِي عَذَابِ جَهَنَّمَ خَالِدُونَ ﴿٧٤﴾

(७४) निःसंदेह पापी लोग नरक की यातना में सदैव रहेंगे।

لَا يُفَتَّرُ عَنْهُمْ وَهُمْ فِيهِ مُبْلِسُونَ ﴿٧٥﴾

(७५) यह (यातना) कभी भी उनसे हल्की न की जायेगी तथा वे उसी में निराश पड़े होंगे।[1]

وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ وَلَٰكِن كَانُوا هُمُ الظَّالِمِينَ ﴿٧٦﴾

(७६) तथा हमने उन पर अत्याचार नहीं किया अपितु वे स्वयं ही अत्याचारी थे।

وَنَادَوْا يَا مَالِكُ لِيَقْضِ عَلَيْنَا رَبُّكَ ۖ قَالَ إِنَّكُم مَّاكِثُونَ ﴿٧٧﴾

(७७) तथा वे पुकार-पुकार कर कहेगें कि हे मालिक,[2] तेरा प्रभु हमारा काम ही तमाम कर दे,[3] वह कहेगा कि तुम्हें तो (सदैव) रहना है।[4]

لَقَدْ جِئْنَاكُم بِالْحَقِّ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَكُمْ لِلْحَقِّ كَارِهُونَ ﴿٧٨﴾

(७८) हम तो तुम्हारे पास सत्य ले आये परन्तु तुम में से अधिकतर लोग सत्य से[5] घृणा करने वाले थे।

أَمْ أَبْرَمُوا أَمْرًا فَإِنَّا مُبْرِمُونَ ﴿٧٩﴾

(७९) क्या उन्होंने किसी कार्य का दृढ़ विचार कर लिया है? तो विश्वास करो कि हम भी सुदृढ़ कार्य करने वाले हैं।[6]

---

[1]अर्थात मोक्ष से निराश।

[2]मालिक, नरक के दरोग़ा का नाम है।

[3]अर्थात हमें मौत ही दे दे। ताकि यातना से प्राण छूट जाये।

[4]अर्थात वहाँ मौत कहाँ? किन्तु यह यातना का जीवन मौत से भी बुरा होगा। फिर भी उसके बिना कोई उपाय न होगी।

[5]यह अल्लाह का कथन है अथवा अल्लाह की ओर फ़रिश्तों का कथन है। जैसे कोई अधिकारी 'हम' का प्रयोग सरकार के अर्थ में प्रयोग करता है। अधिकांश से तात्पर्य कुल है अर्थात सभी नरकवासी, अथवा फिर अधिकांश से अभिप्राय प्रमुख तथा लीडर हैं। शेष नरकवासी उनके अनुयायी होने के कारण उसमें सम्मिलित होंगे। सत्य से तात्पर्य अल्लाह का वह धर्म तथा संदेश है जो वह पैग़म्बरों के द्वारा भेजता रहा। अन्तिम सत्य पवित्र ईशवाणी क़ुरआन तथा इस्लाम धर्म है।

[6]إِبْرَام का अर्थ है संकल्प लेना तथा पक्का करना। أَمْ (बल्कि) بَلْ के अर्थ में है। अर्थात

أَمْ يَحْسَبُونَ أَنَّا لَا نَسْمَعُ سِرَّهُمْ وَنَجْوَاهُمْ ۚ بَلَىٰ وَرُسُلُنَا لَدَيْهِمْ يَكْتُبُونَ ﴿٨٠﴾

(८०) क्या उनका यह विचार है कि हम उनकी गुप्त बातों को तथा उनकी काना-फूसी को नहीं सुनते । (नि:संदेह हम निरन्तर सुन रहे हैं)[1] बल्कि हमारे भेजे हुए उनके पास ही लिख रहे हैं ।[2]

قُلْ إِن كَانَ لِلرَّحْمَٰنِ وَلَدٌ فَأَنَا أَوَّلُ الْعَابِدِينَ ﴿٨١﴾

(८१) (आप) कह दीजिए कि यदि मान लिया जाये कि दयालु की संतान हो तो मैं सर्वप्रथम इबादत करने वाला होता ।[3]

سُبْحَانَ رَبِّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُونَ ﴿٨٢﴾

(८२) आकाशों एवं धरती तथा अर्श का प्रभु, जो कुछ (ये) कहते हैं उससे (अत्यन्त) पवित्र है ।[4]

नरक के पात्रों ने सत्य को अप्रिय ही नहीं समझा अपितु उसके विरोध में सुनियोजित उपायें तथा षडयंत्र रचते रहे, जिसके मुक़ाबिले में फिर हमने भी उपाय की तथा हमसे दृढ़ उपाय किसकी हो सकती है ? इसी अर्थ में यह आयत है ।

﴿أَمْ يُرِيدُونَ كَيْدًا ۖ فَالَّذِينَ كَفَرُوا هُمُ الْمَكِيدُونَ﴾

"क्या ये लोग कोई छल करना चाहते हैं ? तो विश्वास कर लें कि धोखा खाये हुए काफ़िर ही हैं ।" (सूर: अत्तूर-४२)

[1]अर्थात गुप्त बातें जो वह अपने मनों में छिपाये फिरते हैं अथवा एकांत में धीमे-धीमे करते हैं अथवा आपस में कानाफूसियाँ करते हैं, क्या वे समझते हैं कि हम वह नहीं सुनते ? अर्थ यह है कि हम सब सुनते तथा जानते हैं ।

[2]निश्चय हम सुनते हैं । इसके अतिरिक्त, हमारे भेजे हुए फ़रिश्ते अलग उनकी सारी बातें लिखते हैं ।

[3]क्योंकि मैं अल्लाह का आज्ञाकारी हूँ । यदि वास्तव में उसकी संतान होती तो सर्वप्रथम उसका उपासक मैं होता । अभिप्राय मुश्रिकों (अनेकेश्वरवादियों) के भ्रम का खंडन है जो अल्लाह की संतान सिद्ध करते हैं ।

[4]यह अल्लाह का कथन है जिसमें उसने अपने शुभ तथा पवित्रता का वर्णन किया है, अथवा रसूल का कथन है तथा आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने भी अल्लाह की आज्ञा से इन वस्तुओं से अल्लाह की स्वच्छता तथा पवित्रता का वर्णन किया है जिसे मुश्रिक अल्लाह से संबंधित करते थे ।

فَذَرْهُمْ يَخُوضُوا وَيَلْعَبُوا حَتَّىٰ يُلَاقُوا يَوْمَهُمُ الَّذِي يُوعَدُونَ ﴿٨٣﴾

(८३) अब आप उन्हें इसी वाद-विवाद एवं खेल-कूद में छोड़ दीजिए [1] यहाँ तक कि उन्हें उस दिन से पाला पड़ जाये, जिनका ये वचन दिये जाते हैं।[2]

وَهُوَ الَّذِي فِي السَّمَاءِ إِلَٰهٌ وَفِي الْأَرْضِ إِلَٰهٌ ۚ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْعَلِيمُ ﴿٨٤﴾

(८४) तथा वही आकाशों पर भी पूज्य है तथा धरती पर भी वही उपासना के योग्य है,[3] तथा वह बड़ा हिक्मत वाला एवं पूर्ण ज्ञाता है।

وَتَبَارَكَ الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَعِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٨٥﴾

(८५) तथा वह अति शुभ शक्ति है जिसके पास आकाशों तथा धरती एवं उनके मध्य का राज्य है,[4] तथा क़यामत का ज्ञान भी उसी के पास है[5] तथा उसी की ओर तुम सब लौटाये जाओगे।[6]

وَلَا يَمْلِكُ الَّذِينَ يَدْعُونَ

(८६) तथा जिन्हें ये लोग अल्लाह के अतिरिक्त पुकारते हैं वे सिफ़ारिश करने का अधिकार

---

[1]अर्थात यदि यह संमार्ग नहीं अपनाते तो उन्हें अपनी दशा पर छोड़ दें तथा दुनिया के खेलकूद में लगे रहने दें। यह धमकी तथा चेतावनी है।

[2]उनकी आँखें उसी दिन खुलेंगी जब उनके इस आचरण का परिणाम उनके आगे आयेगा।

[3]यह नहीं कि आकाश का पूज्य कोई और हो तथा धरती का कोई और, अपितु जैसे इन दोनों का रचयिता एक है पूज्य भी एक ही है। इसी के समानार्थ यह आयत है।

﴿وَهُوَ اللَّهُ فِي السَّمَاوَاتِ وَفِي الْأَرْضِ يَعْلَمُ سِرَّكُمْ وَجَهْرَكُمْ وَيَعْلَمُ مَا تَكْسِبُونَ﴾

"तथा वही है सत्य उपास्य आकाशों में भी तथा धरती में भी, वह तुम्हारी गुप्त तथा प्रकट स्थितियों को भी जानता है तथा तुम जो कुछ कर्म करते हो उसको भी जानता है।" (*अल-अंआम-३*)

[4]ऐसा स्तित्व जिसके पास सभी अधिकार तथा धरती एवं आकाश की बादशाहत (राज्य) हो, उसे भला संतान की क्या आवश्यकता ?

[5]जिसे वह अपने समय पर व्यक्त करेगा।

[6]जहाँ वह प्रत्येक को उसके कर्मों के अनुसार प्रतिकार (पुण्य तथा दण्ड) देगा।

مِن دُونِهِ الشَّفَاعَةَ إِلَّا مَن شَهِدَ بِالْحَقِّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٨٦﴾

नहीं रखते,[1] हाँ, (सिफ़ारिश के योग्य वे हैं) जो सत्य बात को स्वीकार करें तथा उन्हें ज्ञान भी हो।[2]

وَلَئِن سَأَلْتَهُم مَّنْ خَلَقَهُمْ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ فَأَنَّىٰ يُؤْفَكُونَ ﴿٨٧﴾

(८७) तथा यदि आप उनसे पूछें कि उन्हें किसने पैदा किया है तो अवश्य यह उत्तर देंगे कि अल्लाह ने। फिर ये कहाँ उल्टे जाते हैं ?

وَقِيلِهِ يٰرَبِّ إِنَّ هٰٓؤُلَآءِ قَوْمٌ لَّا يُؤْمِنُونَ ﴿٨٨﴾

(८८) तथा उनका (पैग़म्बरों का अधिकतर) यह कहना कि[3] हे मेरे प्रभु ! निःसंदेह यह वे लोग हैं जो ईमान नहीं लाते।

فَاصْفَحْ عَنْهُمْ وَقُلْ سَلَامٌ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿٨٩﴾

(८९) तो आप उनसे मुख फेर लें तथा (विदाई का) सलाम कह दें।[4] उन्हें (स्वयं ही) शीघ्र ज्ञात हो जायेगा।

---

[1]अर्थात संसार में यह जिन मूर्तियों की पूजा करते हैं इस भ्रम में कि यह अल्लाह के समक्ष हमारी अभिस्तावना (सिफ़ारिश) करेंगे, उन उपास्यों को सिफ़ारिश का सर्वथा कोई अधिकार न होगा।

[2]सत्य बात से तात्पर्य धर्म-सूत्र 'ला एलाह इल्लल्लाह' है तथा यह स्वीकार सूझबूझ के आधार पर हो, केवल रीति-रिवाज एवं पूर्वजों की प्रथा के रूप में न हो, अर्थात मुख से कलमा तौहीद का. उच्चारण करने वाले को पता हो कि इसमें केवल एक अल्लाह का स्वीकार तथा अन्य सभी उपास्यों का इंकार है, फिर तदानुसार कर्म हो। ऐसे लोगों के पक्ष में सिफ़ारिश करने वाले की सिफ़ारिश लाभदायक होगी। अथवा यह अभिप्राय है कि सिफ़ारिश करने का अधिकार मात्र ऐसे लोगों को मिलेगा जो सत्य को स्वीकार करने वाले होंगे, जैसे अम्बिया, धर्मात्मा तथा फ़रिश्ते, न कि झूठे उपास्यों को जिन्हें अनेकेश्वरवादी (मुशरिक) अपना सिफ़ारिशी समझते हैं।

[3]و قِيله का संबंध و عنـده عِلْمُ السّاعَـة से है अर्थात وَ عِلْمُ قِيله अल्लाह के पास ही क़यामत (प्रलय) तथा अपने पैग़म्बर की शिकायत (उलाहना) का ज्ञान है।

[4]यह सलाम वियोगवाची है, जैसे (قَالُوا سلما)(*अल-फ़ुरक़ान*-६३) में है। अर्थात धर्म के मामले में मेरा तथा तुम्हारा मार्ग अलग-अलग है, यदि तुम नहीं रुकते तो अपना काम करते जाओ मैं अपना काम किये जा रहा हूँ, शीघ्र ही ज्ञात हो जायेगा कि सच्चा कौन है तथा झूठा कौन ?

सूरतुद दुख़ान-४४

سُوْرَةُ الدُّخَانِ

सूर: दुख़ान मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें उनसठ आयतें एवं तीन रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

حٰمٓ ①

(१) हा॰मीम॰।

وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ②

(२) सौगन्ध है इस खुली किताब की।

اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةٍ مُّبٰرَكَةٍ

(३) निश्चय हमने इसे शुभ रात्रि[1] में अवतरित किया है। नि:संदेह हम सावधान कर देने

---

[1]शुभरात्रि से अभिप्राय लैलतुल क़द्र है, जैसाकि दूसरे स्थान पर वर्णित है ﴿اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةِ الْقَدْرِ﴾ (सूरतुल क़द्र) "हमने यह क़ुरआन शबेक़द्र में अवतरित किया।" यह शुभरात्रि रमज़ान के अन्तिम दहे (दस रात्रि) की विषम रात्रियों में कोई एक रात होती है। यहाँ क़द्र (सम्मान) की इस रात को शुभ रात कहा गया है। इसके शुभ होने में क्या संदेह हो सकता है। एक तो इसमें क़ुरआन का अवतरण हुआ। दूसरे, इसमें फ़रिश्तों तथा जिब्रील का अवतरण होता है। तीसरे, इसमें पूरे वर्ष होने वाले विषय का निर्णय किया जाता है (जैसाकि आगे आ रहा है)। चौथे, इस रात की इबादत (उपासना) हज़ार महीने (अर्थात ८३ वर्ष ४ महीने) की उपासना से उत्तम है। शबेक़द्र अथवा "लैलये मुबारकह" में क़ुरआन के अवतरण का अभिप्राय यह है कि इस रात नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर पवित्र क़ुरआन अवतरित होना प्रारम्भ हुआ। अथवा यह अभिप्राय है कि लौहे महफ़ूज़ (सुरक्षित पट्टिका) से इसी रात बैतुल इज़्ज़त (सम्मान गृह) में अवतरित किया गया जो संसार के आकाश पर है। फिर वहाँ से आवश्यकतानुसार २३ वर्षों तक विभिन्न समय में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर अवतरित होता रहा। कुछ ने लैलये मुबारकह से शाबान महीने की पंद्रहवीं रात तात्पर्य लिया है, किन्तु यह सही नहीं है। जब क़ुरआन के खुले शब्दों से क़ुरआन का शबेक़द्र में अवतरित होना सिद्ध है तो इससे "शबेबराअत" तात्पर्य लेना कदापि सही नहीं। इसके अतिरिक्त, "शबेबराअत" (शाबान महीने की पंद्रहवीं रात) के सम्बन्ध में जितनी रिवायतें (वर्णन) है जिनमें उसकी महत्ता का वर्णन है। अथवा उनमें उसे निर्णय की रात कहा गया है, यह सभी वर्णन प्रमाण के आधार पर क्षीण हैं। यह क़ुरआन के खुले शब्दों का मुक़ाबला किस प्रकार कर सकती हैं?

إِنَّا كُنَّا مُنذِرِينَ ۝٣

वाले हैं ।[1]

فِيهَا يُفْرَقُ كُلُّ أَمْرٍ حَكِيمٍ ۝٤

(४) उसी रात्रि में प्रत्येक सुदृढ़ काम का निर्णय किया जाता है ।[2]

أَمْرًا مِّنْ عِندِنَا ۚ إِنَّا كُنَّا مُرْسِلِينَ ۝٥

(५) हमारे पास से आदेश होकर,[3] हम ही हैं रसूल बनाकर भेजने वाले ।

رَحْمَةً مِّن رَّبِّكَ ۚ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝٦

(६) आपके प्रभु की कृपा से ।[4] वही है सुनने वाला तथा जानने वाला ।

رَبِّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۖ إِن كُنتُم مُّوقِنِينَ ۝٧

(७) जो प्रभु है आकाशों का तथा धरती का एवं जो कुछ उनके मध्य है, यदि तुम विश्वास करने वाले हो ।

لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۖ رَبُّكُمْ وَرَبُّ آبَائِكُمُ الْأَوَّلِينَ ۝٨

(८) कोई पूजने योग्य नहीं उसके अतिरिक्त, वही जीवित करता है तथा मारता है, वही तुम्हारा प्रभु है तथा तुम्हारे पिछले पूर्वजों का ।[5]

---

[1]क़ुरआन के अवतरण का उद्देश्य लोगों को धार्मिक लाभ तथा हानि से अवगत कराना हैं ताकि उन पर तर्क स्थापित हो जाये ।

[2] يُفْرَقُ का अर्थ يُفَصَّلُ و يُبَيَّنُ, निर्णय कर दिया जाता है तथा सम्बंधित फ़रिश्तों को सौंप दिया जाता है । حَكِيمٍ तत्वदर्शिता से पूर्ण कि अल्लाह का प्रत्येक काम हिक्मत से पूर्ण होता है, अथवा مُحْكَم के अर्थ में (सुदृढ़ सुनियोजित) जिसमें फेर-बदल संभव नहीं । सहाबा तथा ताबेईन से इसकी व्याख्या में कहा गया है कि इस रात में आगामी वर्ष के संदर्भ में मृत्यु-जीवन तथा जीवन साधन के निर्णय लौहे महफ़ूज़ से उतार कर फ़रिश्तों के सुपुर्द कर दिये जाते हैं । (इब्ने कसीर)

[3]अर्थात सारे निर्णय हमारे आदेश एवं आज्ञा तथा हमारे भाग्य लेख एवं इच्छा से होते हैं ।

[4]अर्थात धर्मशास्त्र अवतरित करने के साथ पैग़म्बरों को भेजना, यह भी हमारी दया ही का एक अंश है ताकि वह हमारी अवतरित की हुई किताबों की व्याख्या करें तथा हमारे आदेश लोगों तक पहुँचायें । इस प्रकार भौतिक आवश्यकतायें पूरी करने के साथ हमने अपनी दया से लोगों की आध्यात्मिक माँगों की पूर्ति का भी साधन उपलब्ध करा दिया ।

[5]यह आयतें भी *सूरः आराफ़* की आयत १५८ के समान हैं ।

بَلْ هُمْ فِىْ شَكٍّ يَّلْعَبُوْنَ ⑨

(९) बल्कि वे संदेह में पड़े खेल रहे हैं ।[1]

فَارْتَقِبْ يَوْمَ تَاْتِى السَّمَآءُ بِدُخَانٍ مُّبِيْنٍ ⑩

(१०) आप उस दिन की प्रतीक्षा में रहें जबकि आकाश प्रत्यक्ष धुआँ लायेगा ।[2]

يَّغْشَى النَّاسَ ؕ هٰذَا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ⑪

(११) जो लोगों को घेर लेगा, यह दुखदायी प्रकोप है ।

رَبَّنَا اكْشِفْ عَنَّا الْعَذَابَ اِنَّا مُؤْمِنُوْنَ ⑫

(१२) (कहेंगे कि) हे हमारे प्रभु ! यह प्रकोप हमसे दूर कर हम ईमान स्वीकार करते हैं ।[3]

اَنّٰى لَهُمُ الذِّكْرٰى وَقَدْ جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مُّبِيْنٌ ⑬

(१३) उनके लिए शिक्षा कहाँ है ? स्पष्ट रूप से वर्णन करने वाले पैग़म्बर उनके पास आ चुके ।

---

[1]अर्थात सत्य तथा उसके प्रमाण उसके सामने आ गये, किन्तु वह उस पर ईमान लाने के बजाय संदेह में ग्रस्त हैं तथा इस शंका के साथ खेलकूद तथा उपहास में पड़े हैं ।

[2]यह उन काफ़िरों के लिए धमकी है कि अच्छा आप उस दिन की प्रतीक्षा करें जब आकाश पर धुआँ प्रकट होगा । इसके अवतरण के कारण क्रम में बताया गया है कि मक्कावासियों के विरोधी आचरण से तंग आकर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके लिये अकाल का शाप दिया । जिसके कारण अकाल का प्रकोप आया यहाँ तक कि वे हड्डियाँ, खालें तथा मुर्दा तक खाने को बाध्य हो गये । आकाश की ओर देखते तो उन्हें भूख तथा दुर्बलता के कारण धुआँ दिखाई देता । अन्ततः वह व्याकुल होकर आपके पास आये तथा प्रकोप टालने पर ईमान लाने का वचन दिया, किन्तु उसके पश्चात फिर उनका कुफ्र तथा विरोध उसी प्रकार लौट आया । फिर बद्र के रण में उनकी कड़ी पकड़ की गई । (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़सीर) कुछ कहते हैं कि क़यामत के निकट के दस बड़े लक्षणों में एक धुआँ भी है जिसका प्रभाव काफ़िर पर अधिक तथा मोमिन पर बहुत कम होगा । आयत में उसी धुयें की चर्चा है । इस व्याख्या के अनुसार यह लक्षण क़यामत के निकट उत्पन्न होगा, जबकि प्रथम व्याख्या के अनुसार यह प्रकट हो चुका । इमाम शौकानी फ़रमाते हैं, दोनों बातें अपने स्थान पर सही हैं । इसके अवतरण की विशेषता के अनुसार यह घटना घट चुकी है जो सही प्रमाण से सिद्ध है । फिर भी क़यामत के लक्षणों में इसकी चर्चा भी सही हदीसों में आयी है । इसलिए वह भी इसके विपरीत नहीं है, उस समय भी यह प्रकट होगा ।

[3]प्रथम व्याख्या के अनुसार यह मक्का के काफ़िरों ने कहा तथा दूसरी व्याख्या के अनुसार क़यामत के निकट काफ़िर कहेंगे ।

ثُمَّ تَوَلَّوْا عَنْهُ وَقَالُوا مُعَلَّمٌ مَّجْنُونٌ ﴿١٤﴾

(१४) फिर भी उन्होंने उनसे मुख फेरा तथा कह दिया कि यह सिखाया-पढ़ाया हुआ दीवाना है।

إِنَّا كَاشِفُوا الْعَذَابِ قَلِيلًا إِنَّكُمْ عَائِدُونَ ﴿١٥﴾

(१५) हम यातना को थोड़ी दूर कर देंगे तो तुम फिर अपनी उसी अवस्था में आ जाओगे।

يَوْمَ نَبْطِشُ الْبَطْشَةَ الْكُبْرَىٰ إِنَّا مُنتَقِمُونَ ﴿١٦﴾

(१६) जिस दिन हम अत्यन्त कड़ी पकड़ पकड़ेंगे।[1] निश्चित रूप से हम बदला लेने वाले हैं।

وَلَقَدْ فَتَنَّا قَبْلَهُمْ قَوْمَ فِرْعَوْنَ وَجَاءَهُمْ رَسُولٌ كَرِيمٌ ﴿١٧﴾

(१७) तथा निःसंदेह हम इससे पूर्व फ़िरऔन की जाति की (भी) परीक्षा ले चुके हैं,[2] जिनके पास (अल्लाह का) सम्मानित रसूल आया।

أَنْ أَدُّوا إِلَيَّ عِبَادَ اللَّهِ ۖ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٨﴾

(१८) कि अल्लाह (तआला) के बंदों को मुझे दे दो,[3] विश्वास करो कि मैं तुम्हारे लिए ईमानदार रसूल हूँ।[4]

وَأَن لَّا تَعْلُوا عَلَى اللَّهِ ۖ إِنِّي

(१९) तथा तुम अल्लाह तआला के समक्ष

---

[1]इससे तात्पर्य बद्र के रण की पकड़ है, जिसमें सत्तर काफ़िर मारे गये तथा सत्तर बंदी बना लिये गये। दूसरी व्याख्या के अनुसार यह कड़ी पकड़ क़यामत (प्रलय) के दिन होगी। इमाम शौकानी फ़रमाते हैं कि यह उस पकड़ की विशेष चर्चा है जो बद्र के रण में हुई, क्योंकि क़ुरैश ही के प्रकरण में इसकी चर्चा है। यद्यपि क़यामत के दिन भी अल्लाह तआला कड़ी पकड़ करेगा, फिर भी वह पकड़ सामान्य होगी जिसमें प्रत्येक दुराचारी सम्मिलित होगा।

[2]परीक्षा लेने का अर्थ है कि हमने उन्हें सांसारिक सुख-सुविधा तथा सम्पन्नता दी तथा फिर अपना महामान्य पैग़म्बर भी उनकी ओर भेजा, किन्तु न उन्होंने प्रभु के वरदानों की कृतज्ञता व्यक्त की और न पैग़म्बर पर ईमान लाये।

[3] عِبَادَ اللهِ (अल्लाह के बंदों) से अभिप्राय यहाँ मूसा अलैहिस्सलाम की जाति इस्राईल की संतान है, जिसे फ़िरऔन ने दास बना रखा था। आदरणीय मूसा अलैहिस्सलाम ने अपनी जाति की स्वाधीनता की माँग की।

[4]अल्लाह का आदेश (संदेश) पहुँचाने में अमानतदार हूँ।

اٰتِيۡكُمۡ بِسُلۡطٰنٍ مُّبِيۡنٍ ۚ﴿۱۹﴾

उद्दण्डता न दिखाओ,[1] मैं तुम्हारे सामने खुला प्रमाण लाने वाला हूँ।[2]

وَاِنِّىۡ عُذۡتُ بِرَبِّىۡ وَرَبِّكُمۡ اَنۡ تَرۡجُمُوۡنِ ﴿۲۰﴾

(२०) तथा मैं अपने एवं तुम्हारे प्रभु की शरण में आता हूँ इससे कि तुम मुझे पत्थरों से मार डालो।[3]

وَاِنۡ لَّمۡ تُؤۡمِنُوۡا لِىۡ فَاعۡتَزِلُوۡنِ ﴿۲۱﴾

(२१) तथा यदि तुम मुझ पर ईमान नहीं लाते तो मुझसे अलग ही रहो।[4]

فَدَعَا رَبَّهٗۤ اَنَّ هٰٓؤُلَاۤءِ قَوۡمٌ مُّجۡرِمُوۡنَ ﴿۲۲﴾

(२२) फिर उन्होंने अपने प्रभु से प्रार्थना की कि ये सब पापी लोग हैं।[5]

فَاَسۡرِ بِعِبَادِىۡ لَيۡلًا اِنَّكُمۡ مُّتَّبَعُوۡنَ ۙ﴿۲۳﴾

(२३) (हमने कह दिया) कि रातों-रात तू मेरे बंदों को लेकर निकल, निःसंदेह तेरा[6] पीछा किया जायेगा।

وَاتۡرُكِ الۡبَحۡرَ رَهۡوًا ؕ اِنَّهُمۡ جُنۡدٌ مُّغۡرَقُوۡنَ ﴿۲۴﴾

(२४) तथा तू सागर को स्थिर छोड़कर चला जा,[7] निःसंदेह यह सेना डूबो दी जायेगी।

---

[1]अर्थात उसके रसूल के आज्ञापालन का इंकार करके अल्लाह के सामने अपनी बड़ाई तथा उद्दण्डता का प्रदर्शन न करो।

[2]यह अपने पूर्व का कारण है कि मैं ऐसा खुला प्रमाण साथ लाया हूँ जिसके इंकार का अवसर ही नहीं है।

[3]इस आमंत्रण तथा धर्मप्रचार के उत्तर में फ़िरऔन ने मूसा अलैहिस्सलाम को हत्या कर देने की धमकी दी, जिस पर उन्होंने अपने प्रभु की शरण माँगी।

[4]यदि मुझ पर ईमान नहीं लाते तो न लाओ किन्तु मेरी हत्या करने अथवा दुख देने का प्रयास न करो।

[5]जब उन्होंने देखा कि आमंत्रण का प्रभाव स्वीकार करने की जगह उसका कुफ़्र (इंकार) तथा विरोध अधिक बढ़ गया तो अल्लाह के आगे प्रार्थना के लिए हाथ फैला दिये।

[6]अल्लाह ने प्रार्थना स्वीकार की तथा उन्हें आदेश दिया कि इस्राईल की संतान को लेकर यहाँ से रातों-रात निकल जाओ तथा देखो घबराना नहीं, तुम्हारा पीछा भी होगा।

[7] رَهْـوًا स्थिर अथवा शुष्क। अभिप्राय यह है कि तेरी लाठी मारने से सागर चमत्कारिक

كَمْ تَرَكُوا مِن جَنَّٰتٍ وَعُيُونٍ ﴿٢٥﴾

(२५) वे बहुत से बाग़[1] तथा जलस्रोत छोड़ गये।

وَزُرُوعٍ وَمَقَامٍ كَرِيمٍ ﴿٢٦﴾

(२६) तथा खेतियाँ एवं आरामदायक आवास।

وَنَعْمَةٍ كَانُوا فِيهَا فَٰكِهِينَ ﴿٢٧﴾

(२७) तथा वे सुखदायी वस्तुयें जिनमें सुख भोग रहे थे।

كَذَٰلِكَ وَأَوْرَثْنَٰهَا قَوْمًا ءَاخَرِينَ ﴿٢٨﴾

(२८) इसी प्रकार हो गया।[2] तथा हमने उन सब का उत्तराधिकारी अन्य समुदाय को बना दिया।[3]

فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ ٱلسَّمَآءُ وَٱلْأَرْضُ وَمَا كَانُوا مُنظَرِينَ ﴿٢٩﴾

(२९) तो उन पर न तो आकाश एवं धरती रोये[4] तथा न उन्हें अवसर मिला।

وَلَقَدْ نَجَّيْنَا بَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ مِنَ ٱلْعَذَابِ ٱلْمُهِينِ ﴿٣٠﴾

(३०) तथा हमने (ही) इस्राईल की संतान को (अति) अपमानित दण्ड से मुक्ति दी।

مِن فِرْعَوْنَ ۚ إِنَّهُۥ كَانَ عَالِيًا مِّنَ ٱلْمُسْرِفِينَ ﴿٣١﴾

(३१) (जो) फ़िरऔन की ओर से (हो रही) थी। वास्तव में वह उद्दण्ड एवं सीमा उल्लंघन करने वालों में से था।

रूप से स्थिर व शुष्क हो जायेगा तथा उसमें मार्ग बन जायेगा। तुम साग़र पार करके उसे उसी स्थिति में छोड़ देना ताकि फ़िरऔन तथा उसकी सेना भी साग़र पार करने के लिए साग़र में प्रवेश कर जाये तथा हम उसे वहीं जलमग्न कर दें। अतः ऐसा ही हुआ जैसाकि वर्णन गुज़र चुका है।

[1] كَمْ विधेयवाची है जो अधिकता का लाभ (अर्थ) देता है। नील नदी के दोनों तरफ बाग़ों तथा खेतों की अधिकता थी, भव्य भवन तथा सम्पन्नता के प्रतीक थे। सब कुछ यहीं संसार में रह गया तथा शिक्षा के लिए केवल फ़िरऔन तथा उसकी जाति का नाम रह गया।

[2] अर्थात यह मामला इसी प्रकार हुआ जैसे वर्णित किया गया है।

[3] कुछ के निकट इससे तात्पर्य इस्राईल की संतान हैं। किन्तु कुछ के विचार से इस्राईली वंश का पुनः मिश्र आना ऐतिहासिक रूप से सिद्ध नहीं। इसलिए मिश्र देश की उत्तराधिकारी कोई अन्य जाति बनी, इस्राईल की संतान नहीं।

[4] अर्थात इन फ़िरऔनियों के पुण्य कर्म थे ही नहीं जो आकाश पर चढ़ते तथा उनके क्रम के टूटने (विनाश होने) पर आकाश रोते। न धरती ही पर वह अल्लाह की इबादत करते थे कि उससे वंचित होने पर धरती रोती। अभिप्राय यह है कि आकाश तथा धरती में से कोई उनके विनाश पर रोने वाला नहीं था। (फ़तहुल क़दीर)

وَلَقَدِ اخْتَرْنٰهُمْ عَلٰى عِلْمٍ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿٣٢﴾

(३२) तथा हमने जान बूझकर इस्राईल की सन्तान को संसार वालों पर श्रेष्ठता प्रदान की ।[1]

وَاٰتَيْنٰهُمْ مِّنَ الْاٰيٰتِ مَا فِيْهِ بَلٰٓؤٌا مُّبِيْنٌ ﴿٣٣﴾

(३३) तथा हमने उन्हें ऐसी निशानियाँ प्रदान कीं, जिनमें खुली परीक्षा थी ।[2]

اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ لَيَقُوْلُوْنَ ﴿٣٤﴾

(३४) यह लोग तो यही[3] कहते हैं ।

اِنْ هِيَ اِلَّا مَوْتَتُنَا الْاُوْلٰى وَمَا نَحْنُ بِمُنْشَرِيْنَ ﴿٣٥﴾

(३५) कि (अन्तिम वस्तु) यही हमारा प्रथम बार (दुनिया से) मर जाना है तथा हम पुन:[4] उठाये नहीं जायेंगे ।

فَاْتُوْا بِاٰبَآئِنَآ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٣٦﴾

(३६) यदि तुम सच्चे हो तो हमारे पूर्वजों को ले आओ ।[5]

---

[1]इस जगत से अभिप्राय इस्राईल की संतान के युग का जगत है । सामान्यत: सारा जगत नहीं है, क्योंकि पवित्र क़ुरआन में मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सम्प्रदाय को كُنْتُمْ خَيْرَ أُمَّةٍ की उपाधि से सम्मानित किया गया है । अर्थात इस्राईल की संतान अपने युग में जगतवासियों पर प्रधानता रखती थी । उनकी यह प्रधानता उस योग्यता के कारण थी जिसे अल्लाह ही जानता है ।

[2]आयत से अभिप्राय वह चमत्कार हैं जो आदरणीय मूसा को प्रदान किये गये थे । उनमें परीक्षा का पक्ष यह था कि अल्लाह तआला देखे कि वह कैसे कर्म करते हैं ? अथवा फिर आयात से अभिप्राय वह अनुग्रह हैं जो अल्लाह ने उन पर किये, जैसे फ़िरऔनियों को डुबा कर उनको मुक्त करना, उनके लिए सागर को फाड़कर मार्ग बनाना, बादलों की छाया तथा मन्न-सलवा उतारना आदि । इसमें परीक्षा यह है कि इन अनुग्रहों के बदले में यह जाति अल्लाह के आज्ञापालन का मार्ग अपनाती है अथवा उसकी कृतघ्नता करते हुए उपद्रव तथा उद्दण्डता का मार्ग अपनाती है ।

[3]यह संकेत मक्का के काफ़िरों की ओर है, इसलिए कि वाक्यक्रम उन्हीं से सम्बंधित है । मध्य में फ़िरऔन की कथा उनकी चेतावनी स्वरूप वर्णन किया है कि फ़िरऔन ने भी उनकी भाँति कुफ़्र पर दुराग्रह किया था । यदि ये भी अपने कुफ़्र (इंकार) तथा शिर्क पर अड़े रहे तो उनका परिणाम भी फ़िरऔन तथा उसके अनुगामियों से भिन्न न होगा ।

[4]अर्थात सांसारिक जीवन ही बस अन्तिम जीवन है । इसके पश्चात पुन: जीवित होना तथा हिसाब-किताब होना संभव नहीं है ।

[5]यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तथा मुसलमानों को काफ़िरों की ओर से कहा जा रहा है कि तुम्हारा यह विश्वास वास्तव में सही है कि पुर्नजीवन है तो हमारे बाप-दादों को

أَهُمْ خَيْرٌ أَمْ قَوْمُ تُبَّعٍ ۙ وَّالَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ أَهْلَكْنَاهُمْ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا مُجْرِمِينَ ﴿٣٧﴾

(३७) क्या ये लोग श्रेष्ठ हैं अथवा तुब्बअ के समुदाय के लोग तथा जो उनसे भी पूर्व थे ? हमने उन सबको नष्ट कर दिया, नि:संदेह वे पापी थे ।[1]

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لَاعِبِينَ ﴿٣٨﴾

(३८) तथा हमने धरती तथा आकाशों एवं उनके मध्य की वस्तुओं को खेल के रूप में उत्पन्न नहीं किया ।[2]

مَا خَلَقْنَاهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٩﴾

(३९) बल्कि हमने उन्हें सही युक्ति के साथ ही पैदा किया है,[3] परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते ।[4]

जीवित करके दिखाओ । यह उनका विवाद तथा कटबहसी था, क्योंकि पुर्नजीवन का विश्वास प्रलय से संबंधित है, न कि क़यामत से पहले ही दुनिया में जीवित हो जाना अथवा कर देना ।

[1]अर्थात यह मक्का के काफ़िर तुब्बअ तथा उनसे पहले की जातियाँ आद तथा समूद आदि से शक्तिशाली तथा उत्तम हैं । जब हमने उनको पापों के बदले में उनसे अधिक शक्ति तथा बल रखने पर भी नाश कर दिया तो यह क्या महत्व रखते हैं ? तुब्बअ से अभिप्राय सबा की जाति है । सबा में हिम्यर जाति थी । यह अपने राजा को तुब्बअ कहते थे । जैसे रूम के राजा को क़ैसर, ईरान के राजा को किसरा, मिश्र के राजा को फ़िरऔन तथा हब्शा के अधिपति को नजाशी कहा जाता था । इतिहासकारों की सहमति है कि कुछ तुब्बअ को बड़ी उन्नति प्राप्त हुई यहाँ तक कि कुछ इतिहासकारों ने कह दिया कि वह देशों को विजय करते हुए समरकन्द तक पहुँच गया । इसी प्रकार और भी कई बड़े राजा इस जाति में गुज़रे । यह अपने समय की एक श्रेष्ठतम जाति थी जो शक्ति, बल, सम्पन्नता तथा बड़ाई में विशेषता रखती थी, किन्तु जब उस जाति ने भी पैग़म्बरों को झुठलाया तो उसे अस्त-व्यस्त कर दिया गया । (व्याख्या के लिए देखिए सूरह सबा की सम्बन्धित आयतें) हदीस में एक तुब्बअ के बारे में आता है कि वह मुसलमान हो गया था, उसे अपशब्द न कहो (मजमऊ ज्जवायेद ८६\८७ , सहीहुल जामेअ लिल अलबानी १३१९) फिर भी उनमें से अधिकांश अवज्ञाकारी ही रहे जिसके कारण विनाश उनका भाग्य बना ।

[2]यही विषय इससे पहले *सूर: साद-२७, सूर: अल-मोमिनून-११५,११६, अल-हिज्र-८५* आदि में वर्णित है ।

[3]वह लक्ष्य तथा सही उपाय यही है कि लोगों की परीक्षा की जाये तथा पुण्यकर्मियों को उनकी नेकियों का फल तथा बुरों को उनकी बुराईयों का दण्ड दिया जाये ।

[4]अर्थात वह इस उद्देश्य से निश्चिन्त तथा अचेत हैं । इसीलिए आख़िरत की तैयारी से

إِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ مِيقَاتُهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٤٠﴾

(४०) नि:संदेह निर्णय का दिन उन सबका निश्चित समय है ।[1]

يَوْمَ لَا يُغْنِي مَوْلًى عَن مَّوْلًى شَيْئًا وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ﴿٤١﴾

(४१) उस दिन कोई मित्र किसी मित्र के कुछ भी काम न आयेगा। तथा न उनकी सहायता की जायेगी ।[2]

إِلَّا مَن رَّحِمَ اللَّهُ ۚ إِنَّهُ هُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿٤٢﴾

(४२) परन्तु जिस पर अल्लाह की दया हो जाये, वह अत्यन्त शक्तिशाली एवं दया करने वाला है।

إِنَّ شَجَرَتَ الزَّقُّومِ ﴿٤٣﴾

(४३) नि:संदेह ज़क़्क़ूम (थूहड़) का वृक्ष।

طَعَامُ الْأَثِيمِ ﴿٤٤﴾

(४४) पापी का भोजन है।

كَالْمُهْلِ يَغْلِي فِي الْبُطُونِ ﴿٤٥﴾

(४५) जो तलछट के समान [3] है तथा पेट में खौलता रहता है।

كَغَلْيِ الْحَمِيمِ ﴿٤٦﴾

(४६) तेज़ गर्म पानी (के खौलने) के समान ।[4]

خُذُوهُ فَاعْتِلُوهُ إِلَىٰ سَوَاءِ الْجَحِيمِ ﴿٤٧﴾

(४७) उसे पकड़ लो फिर घसीटते हुए नरक के मध्य तक पहुँचाओ ।[5]

ثُمَّ صُبُّوا فَوْقَ رَأْسِهِ مِنْ عَذَابِ الْحَمِيمِ ﴿٤٨﴾

(४८) फिर उसके सिर पर अत्यन्त गर्म पानी की यातना बहाओ।

लापरवाह तथा सांसारिक माया-मोह में लीन हैं।

[1]अर्थात यही वह मूल उद्देश्य है जिसके लिये इंसानों को पैदा किया गया तथा आकाश एवं धरती को रचा गया है।

[2] अर्थात जैसे कहा ﴿فَإِذَا نُفِخَ فِي الصُّورِ فَلَا أَنسَابَ بَيْنَهُمْ﴾ (अल-मोमिनून-१०१) ﴿وَلَا يَسْأَلُ حَمِيمٌ حَمِيمًا﴾ (अल-मआरिज १०)

[3] مُهْل 'मुहल' पिघला हुआ तांबा, आग में पिघला पदार्थ अथवा तलछट तेल आदि के अंत में जो गदली-सी मिट्टी की तह रह जाती है।

[4]वह ज़क़्क़ूम (थूहड़) का खाद्य खौलते पानी के समान पेट में खौलेगा।

[5]यह नरक पर नियुक्त फ़रिश्तों से कहा जायेगा। سَوَاء (सवाअ) मध्य के अर्थ में है।

ذُقْ ۚ إِنَّكَ أَنتَ الْعَزِيزُ الْكَرِيمُ ﴿٤٩﴾

(४९) (उससे कहा जायेगा) चखता जा, तू तो बड़े आदर और सम्मान वाला था ।[1]

إِنَّ هَٰذَا مَا كُنتُم بِهِ تَمْتَرُونَ ﴿٥٠﴾

(५०) यही वह वस्तु है जिसमें तुम संदेह किया करते थे ।

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي مَقَامٍ أَمِينٍ ﴿٥١﴾

(५१) निःसंदेह (अल्लाह से) डरने वाले शान्ति के स्थान में होंगे ।

فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿٥٢﴾

(५२) बागों तथा जल स्रोतों में ।

يَلْبَسُونَ مِن سُندُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ مُّتَقَابِلِينَ ﴿٥٣﴾

(५३) बारीक तथा कोमल रेशमी वस्त्र पहने हुए आमने-सामने बैठे होंगे ।[2]

كَذَٰلِكَ وَزَوَّجْنَاهُم بِحُورٍ عِينٍ ﴿٥٤﴾

(५४) यह उसी प्रकार है,[3] तथा हम बड़ी-बड़ी आँखों वाली अप्सराओं से उनका विवाह कर देंगे ।[4]

يَدْعُونَ فِيهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ آمِنِينَ ﴿٥٥﴾

(५५) निश्चिन्तता से वहाँ हर प्रकार के मेवों की माँगें कर रहे होंगे ।[5]

---

[1]संसार में तो अपने तौर पर बड़ा आदर तथा सम्मान के साथ फिरा करता था तथा ईमानवालों को अपमान की दृष्टि से देखता था ।

[2]काफ़िरों तथा पापियों के मुक़ाबिले में ईमानवालों तथा सदाचारियों का स्थान बताया जा रहा है, जिन्होंने अपने दामन कुफ़्र, दुष्कर्म तथा पापों से बचाये रखा था । أمين (अमीन) का अर्थ है ऐसा स्थान जहाँ वह प्रत्येक प्रकार के भय तथा चिंता से सुरक्षित होंगे ।

[3]अर्थात متقين (संयमियों) के साथ निश्चय ऐसा ही व्यवहार होगा ।

[4]حُور यह حوراء (हौराअ) का बहुवचन है, काली तथा श्वेत आँखें । حوراء (हौराअ) इसलिये कहा जाता है कि आँखें उनकी सुंदरता तथा शोभा को देखकर चकित रह जायेंगी । عِين (ईन) बहुवचन है عيناء (ऐनाअ) का, मृगनयनी, जैसे मृग की आँखें होती हैं । हम पहले ही बता आये हैं कि प्रत्येक स्वर्गवासी को कम से कम दो हूरें अवश्य मिलेंगी, जो सौन्दर्य में सूर्य एवं चन्द्र के समान होंगी । हाँ, तिर्मिज़ी की एक हदीस से विदित होता है जिसे सहीह कहा गया है कि शहीद (जो धर्म युद्ध में मारा गया हो) को विशेष रूप से ७२ हूरें मिलेंगी । (अबवाबु फ़ज़ायेलिल जिहाद, बाबु माजाअ अय्युन्नासि अफ़ज़ल)

[5] آمنين (निश्चिन्ततापूर्वक) का अभिप्राय है उनके समाप्त हो जाने का भय न होगा न

لَا يَذُوقُونَ فِيهَا الْمَوْتَ إِلَّا الْمَوْتَةَ الْأُولَىٰ ۖ وَوَقَاهُمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ﴿٥٦﴾

(५६) वहाँ वे मृत्यु का स्वाद चखने वाले नहीं सिवाय प्रथम मृत्यु के (जो वे मर चुके)[1] उन्हें अल्लाह (तआला) ने नरक के दण्ड से बचा दिया।

فَضْلًا مِّن رَّبِّكَ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٥٧﴾

(५७) यह केवल तेरे प्रभु की कृपा है।[2] यही है बड़ी सफलता।

فَإِنَّمَا يَسَّرْنَاهُ بِلِسَانِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٥٨﴾

(५८) हमने इस (क़ुरआन) को तेरी भाषा में सरल कर दिया ताकि वे शिक्षा ग्रहण करें।

فَارْتَقِبْ إِنَّهُم مُّرْتَقِبُونَ ﴿٥٩﴾

(५९) अब तू प्रतीक्षा कर ये भी प्रतीक्षा कर रहे हैं।[3]

उनके खाने से रोग आदि का डर अथवा मृत्यु व थकान तथा शैतान का कोई भय न होगा।

[1]अर्थात संसार में उन्हें जो मौत आई थी उसके पश्चात उन्हें मृत्यु का स्वाद नहीं चखना पड़ेगा। जैसे हदीस (अन्तिम ईशदूत के कथन) में आता है कि मृत्यु को एक मेंढे के रूप में नरक तथा स्वर्ग के मध्य लाकर बध कर दिया जायेगा तथा घोषणा कर दी जायेगी, "हे स्वर्गवासियो ! तुम्हारे लिये स्वर्ग का जीवन स्थाई है, अब तुम्हारे लिये मृत्यु नहीं। तथा हे नरकवासियो ! तुम्हारे लिये नरक की यातना स्थाई है, मृत्यु नहीं" (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूर: मरियम, मुस्लिम किताबुल जन्नह)। दूसरी हदीस में फ़रमाया : हे जन्नतियो ! तुम्हारा भाग्य अब स्वास्थ्य तथा बल है, तुम कभी रोगी नहीं होगे। तुम्हारे लिये अब जीवन ही जीवन है, मौत नहीं। तुम्हारे लिये वरदान ही वरदान है, इन में कमी नहीं होगी तथा सदा नवयुवक रहोगे, कभी बुढ़ापा नहीं आयेगा। (सहीह बुख़ारी किताबुर्रिक़ाक़, बाबुल क़स्दे वल मुदावमति अलल अमले तथा मुस्लिम उपरोक्त किताब)

[2]जिस प्रकार हदीस में भी है। फ़रमाया : यह बात जान लो कि तुम में से किसी का कर्म उसे स्वर्ग में नहीं ले जायेगा। सहाबा (आपके सहचरों) ने प्रश्न किया, "अल्लाह के रसूल ! आपको भी ?" फ़रमाया, "हाँ मुझे भी, परन्तु यह कि अल्लाह मुझे अपनी दया तथा करूणा में ढाँप लेगा।" (सहीह बुख़ारी, किताबुर्रिक़ाक़, बाबुल क़स्दे वल मुदावमते अलल अमल तथा मुस्लिम उपरोक्त किताब)

[3]तू अल्लाह के प्रकोप की प्रतिक्षा कर यदि यह ईमान न लाये। यह प्रतीक्षा कर रहे हैं इस बात की कि इस्लाम के प्रभुत्व तथा लागू होने से पहले ही संभवत: आप का निधन हो जाये।

سُوۡرَةُ الجَاثِيَة

सूरतुल जासिय:-४५

सूर: जासिय: मक्के में अवतरित हुई, इसमें सैंतीस आयतें तथा चार रूकूअ हैं।

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

حٰمٓ ۚ ﴿۱﴾

(१) हा॰मीम॰।

تَنۡزِيۡلُ الۡكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الۡعَزِيۡزِ الۡحَكِيۡمِ ﴿۲﴾

(२) यह किताब अल्लाह प्रभावशाली हिक्मत वाले की ओर से अवतरित हुई है।

اِنَّ فِى السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ لَاٰيٰتٍ لِّلۡمُؤۡمِنِيۡنَ ﴿۳﴾

(३) आकाशों तथा धरती में ईमानवालों के लिए नि:संदेह बहुत सी निशानियाँ हैं।

وَفِىۡ خَلۡقِكُمۡ وَمَا يَبُثُّ مِنۡ دَآبَّةٍ اٰيٰتٌ لِّقَوۡمٍ يُّوۡقِنُوۡنَ ۙ ﴿۴﴾

(४) तथा स्वयं तुम्हारे जन्म में तथा पशुओं को फैलाने में विश्वास रखने वाले समुदाय के लिए बहुत-सी निशानियाँ हैं।

وَاخۡتِلَافِ الَّيۡلِ وَالنَّهَارِ وَمَاۤ اَنۡزَلَ اللّٰهُ مِنَ السَّمَآءِ مِنۡ رِّزۡقٍ فَاَحۡيَا بِهِ الۡاَرۡضَ بَعۡدَ مَوۡتِهَا وَتَصۡرِيۡفِ الرِّيٰحِ اٰيٰتٌ لِّقَوۡمٍ يَّعۡقِلُوۡنَ ﴿۵﴾

(५) तथा रात्रि-दिन के बदलने में तथा जो कुछ जीविका अल्लाह (तआला) आकाश से अवतरित करके धरती को उसकी मृत्यु के पश्चात जीवित कर देता है,[1] उसमें तथा हवाओं के बदलने में भी उन लोगों के लिए जो बुद्धि रखते हैं। निशानियाँ हैं।[2]

---

[1]आकाश तथा धरती, मानव जाति की रचना, रात-दिन की आवागमन एवं आकाशीय वर्षा के द्वारा सूखी धरती में जीवन की लहर का दौड़ जाना आदि, विश्व तथा प्राणों में असंख्य (निशानियाँ (चिन्ह) हैं जो अल्लाह की एकता तथा उसके प्रतिपालक होने पर प्रमाण हैं।

[2]कभी वायु का रूख उत्तर एवं दक्षिण को, कभी पूर्व एवं पश्चिम को होता है, कभी जलीय हवायें, कभी थलीय हवायें, कभी रात को, कभी दिन को, कुछ वर्षा वाली, कुछ लाभदायक, कुछ हवायें आत्मा का आहार तथा कुछ सब कुछ झुलसा देने वाली तथा केवल धूल धप्पड़ का तूफ़ान। वायु के इतनी प्रकार भी प्रमाणित करते हैं कि इस विश्व का कोई संचालक है जो मात्र एक है, दो अथवा अधिक नहीं। सभी अधिकार का स्वामी वही एक है, उनमें

تِلْكَ آيَاتُ اللَّهِ نَتْلُوهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۖ فَبِأَيِّ حَدِيثٍ بَعْدَ اللَّهِ وَآيَاتِهِ يُؤْمِنُونَ ﴿٦﴾

(६) यह हैं अल्लाह (तआला) की आयतें जिन्हें हम आपको सत्य रूप से सुना रहे हैं, तो अल्लाह (तआला) तथा उसकी आयतों के पश्चात ये किस बात पर ईमान लायेंगे ।[1]

وَيْلٌ لِكُلِّ أَفَّاكٍ أَثِيمٍ ﴿٧﴾

(७) धिक्कार (एवं खेद है) प्रत्येक झूठे पापी पर ।[2]

يَسْمَعُ آيَاتِ اللَّهِ تُتْلَىٰ عَلَيْهِ ثُمَّ يُصِرُّ مُسْتَكْبِرًا كَأَنْ لَمْ يَسْمَعْهَا ۖ فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٨﴾

(८) जो अल्लाह की आयतें अपने सामने पढ़ी जाती हुई सुने फिर भी गर्व करता हुआ इस प्रकार अड़ा रहे जैसेकि सुनी ही नहीं ।[3] तो ऐसे लोगों को कष्टदायी यातना की सूचना (पहुँचा) दें ।

وَإِذَا عَلِمَ مِنْ آيَاتِنَا شَيْئًا اتَّخَذَهَا هُزُوًا ۚ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُهِينٌ ﴿٩﴾

(९) तथा वह जब हमारी आयतों में से किसी आयत की सूचना पा लेता है तो उसका उपहास उड़ाता है,[4] यही लोग हैं जिनके लिए अपमान वाली यातना है ।

कोई उसका साझी नहीं। प्रत्येक प्रकार का निज़ाम वही चलाता है, किसी और के पास तनिक भी अधिकार नहीं। इसी भावार्थ की आयत सूर: बक़र: की आयत नं॰ १६४ भी है।

[1]अर्थात अल्लाह का अवतरित किया हुआ क़ुरआन, जिसमें उसकी तौहीद के प्रमाण तथा युक्तियाँ हैं। यदि यह उसके प्रति भी विश्वास नहीं करते तो अल्लाह की बात के बाद किसकी बात है तथा उसकी निशानियों के पश्चात किसकी निशानियाँ हैं, जिनके प्रति वह विश्वास करेंगे ? بعدَ الله का अभिप्राय है, بعدَ حديثِ الله و بعدَ آياته यहाँ पवित्र क़ुरआन को हदीस कहा गया है। जैसे ﴿اللَّهُ نَزَّلَ أَحْسَنَ الْحَدِيثِ﴾ (अज़्ज़ुमर २३) में है।

[2] أَفَّاك (अफ़्फ़ाक) كَذَّاب के अर्थ में, أَثِيم (महापापी)। وَيْلٌ विनाश अथवा नरक की एक वादी का नाम।

[3]अर्थात कुफ़्र पर अड़ा रहता है तथा सत्य के आगे स्वयं को बड़ा समझता है तथा इसी अहंकार में सुनी अनसुनी कर देता है।

[4]अर्थात प्रथम तो वह क़ुरआन को ध्यान से सुनता ही नहीं तथा यदि कोई बात उसके कान में पड़ जाती है अथवा कोई बात उसके ज्ञान में आ जाती है तो उसे उपहास तथा परिहास का विषय बना लेता है। अपनी बुद्धिहीनता तथा निर्बोधता के कारण अथवा कुफ़्र तथा अवज्ञा पर हठधर्मी तथा अहंकार के कारण।

مِنْ وَّرَآئِهِمْ جَهَنَّمُ ۚ وَلَا يُغْنِيْ عَنْهُمْ مَّا كَسَبُوْا شَيْـًٔا وَّلَا مَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْلِيَآءَ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝١٠

(१०) उनके पीछे नरक है,[1] जो कुछ उन्होंने प्राप्त किया था वह उन्हें कुछ भी लाभ न देगा[2] तथा न वह (कुछ काम आयेंगे) जिनको उन्होंने अल्लाह के अतिरिक्त संरक्षक (एवं कार्यक्षम) बना रखा था ।[3] उनके लिए तो अत्यन्त भारी यातना है ।

هٰذَا هُدًى ۚ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ لَهُمْ عَذَابٌ مِّنْ رِّجْزٍ اَلِيْمٌ ۝١١

(११) यह (सर्वथा) मार्गदर्शन है ।[4] तथा जिन लोगों ने अपने प्रभु की आयतों को न माना उनके लिए अत्यन्त कष्टदायी यातनायें हैं ।[5]

اَللّٰهُ الَّذِيْ سَخَّرَ لَكُمُ الْبَحْرَ لِتَجْرِيَ الْفُلْكُ فِيْهِ بِاَمْرِهٖ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ

(१२) अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए समुद्र को अधीनस्थ बना दिया[6] ताकि उसके आदेश से उसमें नावें चलें [7] तथा तुम उसकी कृपा

---

[1]अर्थात ऐसे आचरण के लोगों के लिए प्रलय के दिन नरक है ।

[2]अर्थात उन्होंने दुनिया में जो धन कमाया होगा, जिस संतान तथा जत्थे पर गर्व करते रहे होंगे, वह प्रलय के दिन उन्हें कोई लाभ नहीं दे सकेंगे ।

[3]जिन्हें संसार में अपना मित्र एवं सहाय तथा पूज्य बना रखा था, वे उस दिन उसे दिखाई ही नहीं देंगे, सहायता तो क्या करेंगे ?

[4]अर्थात कुरआन, क्योंकि उसके अवतरण का उद्देश्य ही यह है कि लोगों को कुफ़्र तथा शिर्क के अंधेरों से निकालकर ईमान के प्रकाश में लाया जाये । इसलिए उसके सर्वथा मार्गदर्शन होने में तो कोई संदेह नहीं, किन्तु मार्गदर्शन मिलेगा तो उसे ही जो उसके लिए अपना वक्ष (सीना) खोल देगा ।

[5] اَلِيْمٌ यह عذابٌ का विशेषण है । कुछ इसे رِجْزٍ का विशेषण बताते हैं । رِجْز का अर्थ हैं कड़ी यातना ।

[6]अर्थात उसे ऐसा बना दिया कि तुम नवकाओं तथा जहाजों द्वारा उस पर यात्रा कर सको ।

[7]अर्थात समुद्रों में नवकाओं तथा जहाजों का चलना, यह तुम्हारा कमाल तथा हुनर नहीं, यह अल्लाह की आज्ञा तथा इच्छा है । अन्यथा वह चाहता तो समुद्र की लहरों को इतनी उद्दण्ड वना देता कि कोई नवका व जलयान उसके आगे रूक ही नहीं सकता, जैसाकि कभी-कभी वह अपनी शक्ति दिखाने के लिए ऐसा करता है । यदि स्थाई रूप से लहरों की दशा यही रहती तो तुम कभी भी समुद्र में यात्रा करने योग्य न होते ।

وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝١٢

ढूँढो[1] तथा ताकि तुम उसकी कृतज्ञता व्यक्त करो।[2]

وَسَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا مِّنْهُ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝١٣

(१३) तथा आकाश एवं धरती की प्रत्येक वस्तु को भी उसने अपनी ओर से तुम्हारे अधीनस्थ कर दिया है।[3] जो लोग विचार करें, नि:संदेह, वे इसमें बहुत सी निशानियाँ पायेंगे।

قُلْ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يَغْفِرُوْا لِلَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ اَيَّامَ اللّٰهِ لِيَجْزِيَ قَوْمًۢا بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝١٤

(१४) आप ईमानवालों से कह दें कि वह उन लोगों को क्षमा कर दिया करें जो अल्लाह के दिनों की आशा नहीं रखते[4] ताकि अल्लाह तआला एक समुदाय को उनके करतूतों का बदला दे।[5]

---

[1]अर्थात व्यापार द्वारा तथा उसमें गोता लगाकर मोती तथा अन्य पदार्थ निकाल कर तथा समुद्री जन्तु (मछली आदि) का शिकार करके।

[2]यह सब कुछ इसलिए किया कि तुम उसके उपहारों पर अल्लाह की कृतज्ञता दिखाओ जो इस समुद्र को वश में करने के कारण तुम्हें प्राप्त होता है।

[3]वश में करने का अभिप्राय यही है कि उनको तुम्हारी सेवा के लिए नियुक्त कर दिया है। तुम्हारे हित-लाभ तथा तुम्हारी जीविका सब इन्हीं से संबंधित है जैसे चाँद, सूर्य, प्रकाशमान तारे, वर्षा, मेघ एवं वायु आदि हैं। तथा अपनी ओर से का अभिप्राय अपनी विशेष दया तथा करूणा से।

[4]अर्थात जो इस बात का भय नहीं रखते कि अल्लाह अपने ईमानदार बंदों की सहायता करने तथा शत्रुओं का विनाश करने की शक्ति रखता है। तात्पर्य काफ़िर हैं। तथा أَيَّامُ اللهِ (अल्लाह के दिनों से) अभिप्राय घटनायें हैं, जैसे ﴿وَذَكِّرْهُم بِأَيَّامِ اللَّهِ﴾ (इब्राहीम-५) में है। अभिप्राय है कि उन काफ़िरों से क्षमा तथा अंदेखी से काम लो, जो अल्लाह के प्रकोप से निश्चिन्त तथा निर्भय हैं। यह प्रारम्भिक आदेश था जो मुसलमानों को पहले दिया जाता रहा था। बाद में जब मुसलमान मुक़ाबले के योग्य हो गये तो फिर कड़ाई तथा उनसे टकरा जाने (जिहाद) का आदेश दे दिया गया।

[5]अर्थात जब तुम उनकी ओर से दुखों को सहन तथा उनके अत्याचारों को क्षमा करोगे तो यह सभी पाप उनके ऊपर रहेंगे, जिनका दण्ड क़यामत के दिन हम उनको देंगे।

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ اَسَآءَ فَعَلَيْهَا ۚ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ تُرْجَعُوْنَ ﴿١٥﴾

(१५) जो पुण्य करेगा वह अपने स्वयं के भले के लिए तथा जो बुराई करेगा उसका दुष्परिणाम उसी पर है;[1] फिर तुम सब अपने प्रभु की ओर लौटाये जाओगे ।[2]

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ وَرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ وَفَضَّلْنٰهُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦﴾

(१६) तथा निःसंदेह हमने इस्राईल की संतान को किताब, राज्य[3] एवं नबूवत प्रदान किया था, तथा हमने उन्हें पवित्र (एवं उत्तम) जीविका प्रदान की थी ।[4] तथा उन्हें दुनिया वालों पर श्रेष्ठता प्रदान की थी ।[5]

وَاٰتَيْنٰهُمْ بَيِّنٰتٍ مِّنَ الْاَمْرِ ۚ فَمَا اخْتَلَفُوْٓا اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ ۙ بَغْيًا ۢ بَيْنَهُمْ ۗ اِنَّ رَبَّكَ يَقْضِيْ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا

(१७) तथा हमने उन्हें धर्म की खुली निशानियाँ (तर्क) प्रदान कीं,[6] फिर उन्होंने अपने पास ज्ञान के पहुँच जाने के पश्चात आपस के द्वेष-विवाद के कारण ही मतभेद उत्पन्न कर डाला ।[7] ये जिन-जिन बातों में मतभेद कर

---

[1]अर्थात प्रत्येक गिरोह तथा काफ़िर का कर्म (अच्छा-बुरा), उसका लाभ अथवा हानि स्वयं कर्ता को ही पहुँचेगी, किसी अन्य को नहीं। इसमें नेकी का प्रलोभन भी है तथा बुराई से चेतावनी भी।

[2]अतः वह प्रत्येक को उसके कर्मानुसार फल देगा। सत्कर्मियों को अच्छा तथा दुष्कर्मियों को बुरा।

[3]किताब से तात्पर्य धर्मग्रंथ तौरात, حكم (हुक्म) से राज्य तथा शासन अथवा बोध एवं निर्णय की वह योग्यता है जो विवाद तथा लोगों के बीच निर्णय करने के लिए आवश्यक है।

[4]वह जीविकायें जो उनके लिए वैध (उचित) थीं, तथा उन्हीं में से 'मन्न' तथा 'सलवा' का अवतरण भी था।

[5]अर्थात उनके युग में।

[6]कि यह वैध (हलाल) हैं तथा यह अवैध (हराम), अथवा चमत्कार अभिप्राय है, अथवा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नबी बनाकर भेजे जाने का ज्ञान, आप की नबूअत (ईशदूत होने) के प्रमाण तथा आप के प्रवास स्थान का निर्धारण अभिप्राय है।

[7]بَغْيًا بَيْنَهُمْ का अभिप्राय है परस्पर एक-दूसरे से ईर्ष्या एवं द्वेष का प्रदर्शन करते हुए अथवा

كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿١٧﴾

रहे हैं उनका निर्णय क़यामत के दिन उनके मध्य तेरा प्रभु (स्वयं) करेगा ।[1]

ثُمَّ جَعَلْنٰكَ عَلٰى شَرِيْعَةٍ مِّنَ الْاَمْرِ فَاتَّبِعْهَا وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٨﴾

(१८) फिर हमने आपको धर्म के (स्पष्ट) मार्ग पर स्थापित कर दिया,[2] तो आप उसी पर लगे रहें तथा अज्ञानियों की इच्छाओं का अनुगमन न करें ।[3]

اِنَّهُمْ لَنْ يُّغْنُوْا عَنْكَ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ وَاِنَّ الظّٰلِمِيْنَ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۚ وَاللّٰهُ وَلِيُّ الْمُتَّقِيْنَ ﴿١٩﴾

(१९) (याद रखें) कि ये लोग कदापि अल्लाह के समक्ष आप के कुछ काम नहीं आ सकते । (समझ लो कि) अत्याचारी लोग आपस में एक-दूसरे के साथी होते हैं तथा सदाचारियों का साथी (संरक्षक) अल्लाह (महान) है ।

هٰذَا بَصَآئِرُ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿٢٠﴾

(२०) यह (क़ुरआन) लोगों के लिए सूझ की बातें[4] एवं मार्गदर्शन तथा कृपा है उस[5] गिरोह के लिए जो विश्वास रखता है ।

मान-मर्यादा एवं पद की ख़ातिर । उन्होंने ज्ञान आ जाने के उपरान्त मतभेद अथवा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबूअत (दूतत्व) से इंकार किया ।

[1]अर्थात सत्यवादी को अच्छा बदला तथा मिथ्यावादी को बुरा बदला देगा ।

[2]شریعت (शरीअत) का शाब्दिक अर्थ है मार्ग, संघ एवं रीति । विशाल मार्ग को भी शारेअ कहा जाता है कि वह उद्देश्य तथा लक्ष्य तक पहुँचाता है । अत: यहाँ शरीयत से तात्पर्य वह धर्म है जो अल्लाह ने अपने बंदों के लिए नियुक्त किया है ताकि लोग उस पर चल कर अल्लाह की प्रसन्नता का लक्ष्य प्राप्त कर लें । आयत का अभिप्राय है कि हमने आपको धर्म के एक स्पष्ट मार्ग अथवा रीति पर स्थित कर दिया है जो आपको सत्य तक पहुँचायेगा ।

[3]जो अल्लाह की तौहीद (अद्वैत) तथा उसके धर्मविधान से अनभिज्ञ हैं । तात्पर्य मक्का के काफ़िर तथा उनके साथी हैं ।

[4]अर्थात उन प्रमाणों का संग्रह है जो धर्म के आदेशों से संबन्धित हैं तथा जिनसे मानव जाति की आवश्यकतायें संलग्न हैं ।

[5]अर्थात संसार में संमार्ग बताने वाला तथा आख़िरत में अल्लाह की दया का कारण है ।

(२१) क्या उन लोगों का जो बुरे कार्य करते हैं, यह विचार है कि हम उन्हें उन लोगों जैसा कर देंगे जो ईमान लाये तथा पुण्य के कार्य किये कि उनका मरना-जीना समान हो जाये,[1] बुरा निर्णय है वह जो वे कर रहे हैं।

أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ اجْتَرَحُوا السَّيِّئَاتِ أَنْ نَّجْعَلَهُمْ كَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَوَاءً مَّحْيَاهُمْ وَمَمَاتُهُمْ ۚ سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ﴿٢١﴾

(२२) तथा आकाशों एवं धरती को अल्लाह ने बहुत ही न्याय के साथ पैदा किया है और ताकि प्रत्येक व्यक्ति को उसके किये हुए कार्य का पूरा बदला दिया जाये तथा वे अत्याचार न किये जायेंगे।[2]

وَخَلَقَ اللَّهُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ وَلِتُجْزَىٰ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٢٢﴾

(२३) क्या आपने उसे भी देखा जिसने अपनी मनोकांक्षा को अपना पूज्य बना रखा है,[3]

أَفَرَأَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ إِلَٰهَهُ هَوَاهُ

---

[1]अर्थात लोक-परलोक में दोनों के बीच कोई अंतर न करें। इस तरह कदापि नहीं हो सकता। अथवा अभिप्राय है कि जिस प्रकार वह दुनिया में समान थे आख़िरत में भी समान ही रहेंगे कि मरकर यह भी नास्ति वह भी नास्ति, न दुराचारी को दण्ड, न सदाचारी को पुरस्कार। ऐसा नहीं होगा। इसलिए आगे कहा कि उनका यह बुरा निर्णय है जो वह कर रहे हैं।

[2]तथा यही न्याय है कि क़यामत के दिन बेलाग निर्णय होगा तथा प्रत्येक को उसके कर्मों के अनुसार अच्छा अथवा बुरा प्रतिकार मिलेगा। यह नहीं होगा कि अच्छे बुरे दोनों के साथ सामान व्यवहार करे, जैसाकि काफ़िरों का भ्रम है, जिसका खंडन विगत कई आयतों में किया गया है। क्योंकि दोनों को बराबरी के स्तर पर रखना अन्याय तथा मान्यताओं से विमुखता भी। अत: जिस प्रकार काँटा बोकर अंगूर की उपज प्राप्त नहीं की जा सकती इसी प्रकार बुराई करके वह स्थान प्राप्त नहीं हो सकता जो अल्लाह ने ईमान वालों के लिए रखा है।

[3]अत: वह उसी को अच्छा समझता है जिसे उसका मन भला तथा उसी को बुरा समझता है जिसे उसका मन बुरा मानता है। अर्थात अल्लाह के रसूल के आदेशों की तुलना में अपनी मनमानी को प्रधानता देता है अथवा अपनी समझ (बुद्धि) को महत्व देता है, जबकि समझ भी वातावरण से प्रभावित अथवा स्वार्थ का शिकार होकर मनोइच्छा की भाँति ग़लत निर्णयकर सकती है। एक अर्थ उसका यह किया गया है कि जो अल्लाह की ओर से अवतरित मार्गदर्शन तथा प्रमाण के बिना अपने मन का धर्म अपनाता है। कुछ कहते हैं कि इससे तात्पर्य ऐसा व्यक्ति है जो पत्थर को पूजता था जब उसे अधिक सुन्दर पत्थर

وَأَضَلَّهُ اللَّهُ عَلَىٰ عِلْمٍ وَخَتَمَ عَلَىٰ سَمْعِهِ وَقَلْبِهِ وَجَعَلَ عَلَىٰ بَصَرِهِ غِشَاوَةً فَمَن يَهْدِيهِ مِن بَعْدِ اللَّهِ ۚ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿٢٣﴾

तथा समझ-बूझ के उपरान्त भी अल्लाह ने उसे पथभ्रष्ट कर दिया है,[1] तथा उसके कान तथा हृदय पर मुहर लगा दी है[2] तथा उसकी आँख पर भी पर्दा डाल दिया है ?[3] अब ऐसे व्यक्ति को अल्लाह के पश्चात कौन मार्गदर्शन करा सकता है ।[4] क्या अब भी तुम शिक्षा ग्रहण नहीं करते ?[5]

وَقَالُوا مَا هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوتُ وَنَحْيَا وَمَا يُهْلِكُنَا إِلَّا الدَّهْرُ ۚ وَمَا لَهُم بِذَٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۖ إِنْ هُمْ

(२४) उन्होंने कहा कि हमारा जीवन केवल सांसारिक जीवन ही है; हम मरते हैं तथा जीते हैं तथा हमें केवल काल (युग) ही मार डालता है ।[6] (वास्तव में) उन्हें उसका कुछ

मिल जाता तो पहले पत्थर को फेंक कर दूसरे को उपास्य बना लेता। (फ़तहुल क़दीर)

[1]अर्थात ज्ञान पहुँचने तथा प्रमाण की स्थापना के उपरांत वह कुमार्ग ही को अपनाता है। जैसे बहुत से ज्ञान के घमंड में ग्रस्त भ्रष्ट ज्ञानियों की दशा है। होते वह कुपथ हैं, सिद्धान्त उनका निराधार होता है। परन्तु 'हम जैसा कोई नहीं' के घमंड में वह अपने 'तर्कों' को ऐसा समझते हैं जैसे आकाश से तारे तोड़ लाये हों। और यूँ 'ज्ञान तथा समझ' रखते हुए वह भ्रष्ट ही नहीं होते, दूसरों को भी पथभ्रष्ट करने पर गर्व करते हैं। نعوذ بالله من هذا العلم الضال و الفهم السقيم و العقل الزائغ "हम गुमराही के ज्ञान तथा रोगी समझ एवं वक्र बुद्धि से अल्लाह की शरण माँगते हैं।"

[2]जिससे उनके कान शिक्षा तथा सदुपदेश सुनने से तथा उनके दिल संमार्ग को समझने से वंचित हो गये।

[3]अत: वह सत्य को देख भी नहीं पाता।

[4]जैसे फ़रमाया :

﴿مَن يُضْلِلِ اللَّهُ فَلَا هَادِيَ لَهُ ۚ وَيَذَرُهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ﴾

"जिसे अल्लाह कुपथ कर दे उसका कोई पथप्रदर्शक नहीं, उन्हें उनकी पथभ्रष्टता में भटकते छोड़ देता है।" (*अल-आराफ़*-१८६)

[5]अर्थात चिंतन-मनन नहीं करते ताकि वास्तविकता तुम पर प्रकट एवं स्पष्ट हो जाये।

[6]यह नास्तिक (भौतिकवादी) तथा उनसे सहमत मक्का के मुशरिकों का कथन है जो आख़िरत (परलोक) को नहीं मानते थे। वह कहते थे कि बस सांसारिक जीवन ही प्रथम

إِلَّا يَظُنُّونَ ﴿٢٤﴾

ज्ञान ही नहीं; ये तो केवल अनुमान एवं अटकल से ही काम ले रहे हैं।

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ
مَّا كَانَ حُجَّتَهُمْ إِلَّا أَن
قَالُوا ائْتُوا بِآبَائِنَا
إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٢٥﴾

(२५) तथा जब उनके समक्ष हमारी स्पष्ट (एवं प्रकाशवाली) आयतों का पाठ किया जाता है तो उनके पास इस कथन के अतिरिक्त कोई तर्क नहीं होता कि यदि तुम सच्चे हो तो हमारे पूर्वजों को लाओ।[1]

قُلِ اللَّهُ يُحْيِيكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ
ثُمَّ يَجْمَعُكُمْ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ
لَا رَيْبَ فِيهِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ
النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢٦﴾

(२६) (आप) कह दीजिए कि अल्लाह ही तुम्हें जीवित करता है फिर तुम्हें मार डालता है, फिर तुम्हें क़यामत के दिन एकत्रित करेगा जिसमें कोई संदेह नहीं, परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते।

وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ
يَخْسَرُ الْمُبْطِلُونَ ﴿٢٧﴾

(२७) तथा आकाशों एवं धरती का राज्य अल्लाह ही का है, तथा जिस दिन क़यामत व्याप्त होगी उस दिन असत्यवादी बड़ी हानि में पड़ेंगे।

तथा अंतिम जीवन है, उसके पश्चात कोई जीवन नहीं तथा मृत्यु एवं जीवन मात्र कालगति का परिणाम है। जैसे दार्शनिकों का एक गिरोह कहता है कि प्रत्येक छत्तीस हज़ार वर्ष के पश्चात प्रत्येक वस्तु अपनी दशा में लौट आती है तथा यह क्रम बिना किसी रचयिता तथा प्रबंधक के स्वतः चल रहा है तथा चलता रहेगा, न इसका आदि है न अंत यह गिरोह 'दौरियह' कहलाता है। (इब्ने कसीर) प्रत्यक्ष बात है कि इस सिद्धान्त को बुद्धि भी स्वीकार नहीं करती तथा धार्मिक युक्तियों के भी विपरीत है। हदीस कुदसी में है, अल्लाह तआला फ़रमाता है : "आदम का पुत्र मुझे दुख पहुँचाता है। वह युग को बुरा कहता है (अर्थात कार्यों को उससे संबंधित करके उसे बुरा कहता है) जबकि (युग स्वयं कुछ नहीं है) मैं स्वयं युग हूँ। मेरे ही हाथ में सब अधिकार हैं। रात-दिन भी मैं ही फेरता हूँ।" (अल-बुख़ारी तफ़सीर सूरः अल-जासियः, मुस्लिम, किताबुल अलफ़ाज़ मिनल अदब, बाबुन नहय अन सब्बिद्दहर)

[1]यह उनका सबसे बड़ा तर्क है जो उनकी कटबहसी को स्पष्ट करता है।

(२८) तथा आप देखेंगे कि प्रत्येक समुदाय घुटनों के बल गिरा होगा।[1] प्रत्येक गिरोह अपने कर्मपत्र की ओर बुलाया जायेगा, आज तुम्हें अपने किये का बदला दिया जायेगा।

وَتَرٰى كُلَّ اُمَّةٍ جَاثِيَةً ۗ كُلُّ اُمَّةٍ تُدْعٰٓى اِلٰى كِتٰبِهَا ؕ اَلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٨﴾

(२९) यह है हमारी किताब जो तुम्हारे विषय में सत्य-सत्य बोल रही है।[2] हम तुम्हारे कर्म लिखवाते जाते थे।[3]

هٰذَا كِتٰبُنَا يَنْطِقُ عَلَيْكُمْ بِالْحَقِّ ؕ اِنَّا كُنَّا نَسْتَنْسِخُ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٩﴾

(३०) तो जो ईमान लाये तथा उन्होंने पुण्य के कार्य किये[4] तो उनको उनका प्रभु अपनी

فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُدْخِلُهُمْ رَبُّهُمْ

---

[1]आयत से तो यही विदित होता है कि प्रत्येक गिरोह (चाहे वह अम्बिया के अनुयायियों का हो अथवा उनके विरोधियों का) भय तथा डर के मारे घुटनों के बल बैठा होगा (फ़तहुल क़दीर) यहाँ तक कि सबको हिसाब के लिये बुलाया जायेगा। जैसाकि आयत के आगामी अंश से प्रतिपादित है।

[2]इस किताब से अभिप्राय वह सभी पंजिकायें हैं जिनमें इंसान के सभी कर्म अंकित होंगे।

﴿ وَوُضِعَ الْكِتٰبُ وَجِائْٓءَ بِالنَّبِيّٖنَ وَالشُّهَدَآءِ ﴾

"कर्मपत्र सामने लाये जायेंगे, नबियों तथा गवाहों को गवाही के लिये प्रस्तुत किया जायेगा।" (*अज़्ज़ुमर-६९*)

यह कर्मपत्र इंसानी जीवन के ऐसे रिकार्ड होंगे जिनमें किसी प्रकार की कमी-बेशी नहीं होगी। इंसान उन्हें देख कर पुकार उठेगा।

﴿ مَالِ هٰذَا الْكِتٰبِ لَا يُغَادِرُ صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً اِلَّآ اَحْصٰىهَا ﴾

"यह कैसा कर्मपत्र है जिसने किसी भी छोटी-बड़ी चीज़ को नहीं छोड़ा, सब कुछ ही तो इसमें अंकित है।" (*अल-कहफ़-४९*)

[3]अर्थात हमारे ज्ञान के अतिरिक्त फ़रिश्ते भी हमारे आदेश से तुम्हारी प्रत्येक चीज लिखते तथा सुरक्षित रखते थे।

[4]यहाँ भी ईमान के साथ पुण्य के कर्म की चर्चा करके उसका महत्व दिखा दिया तथा पुण्य के कार्य वह कर्म हैं जो सुन्नत के अनुकूल किये जायें, न कि प्रत्येक वह कर्म जिसे इंसान अपने मन से अच्छा समझ ले तथा उसे बड़ी व्यवस्था एवं रूचि से करे। जैसे बहुत सी बिदआत (नई बातें) धार्मिक गिरोहों में प्रचलित हैं तथा जो उनके निकट अनिवार्य तथा आवश्यक धार्मिक कर्मों से भी अधिक महत्व रखती हैं। इसलिए अनिवार्य कर्तव्य तथा सुन्नत का त्याग तो उनके यहाँ सामान्य है, किन्तु बिदअत ऐसी आवश्यक है

فِي رَحْمَتِهِ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْمُبِينُ ﴿٣٠﴾

कृपा की छत्रछाया में ले लेगा।[1] यही स्पष्ट सफलता है।

وَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا أَفَلَمْ تَكُنْ آيَاتِي تُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ فَاسْتَكْبَرْتُمْ وَكُنتُمْ قَوْمًا مُّجْرِمِينَ ﴿٣١﴾

(३१) परन्तु जिन लोगों ने कुफ़्र किया तो (मैं उनसे कहूँगा) कि क्या मेरी आयतें तुम्हें सुनायी नहीं जाती थीं ?[2] फिर भी तुम गर्व करते रहे तथा तुम थे ही पापी लोग।[3]

وَإِذَا قِيلَ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَالسَّاعَةُ لَا رَيْبَ فِيهَا قُلْتُم مَّا نَدْرِي مَا السَّاعَةُ إِن نَّظُنُّ إِلَّا ظَنًّا وَمَا نَحْنُ بِمُسْتَيْقِنِينَ ﴿٣٢﴾

(३२) तथा जब कभी कहा जाता कि अल्लाह का वादा निश्चित रूप से सत्य है तथा क़यामत के आने में कोई संदेह नहीं तो तुम उत्तर देते थे कि हम नहीं जानते कि क़यामत क्या (वस्तु) है ? हमें कुछ यों ही सोच-विचार हो जाता है परन्तु हमें विश्वास नहीं।[4]

وَبَدَا لَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا عَمِلُوا وَحَاقَ بِهِم مَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ﴿٣٣﴾

(३३) तथा उन पर अपने कर्मों की बुराईयाँ खुल गयीं तथा जिसे वे उपहास में उड़ा रहे थे, उसने उन्हें घेर लिया।[5]

कि उनमें किसी प्रकार के आलस्य की कल्पना ही नहीं है, जब कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसे सबसे अधिक बुरा काम बताया है।

[1] رحمت (रहमत) से अभिप्राय स्वर्ग है। अर्थात स्वर्ग में ले जायेगा, जैसे हदीस में है अल्लाह का आदेश होगा।

«أَنْتِ رَحْمَتِي أَرْحَمُ بِكِ مَنْ أَشَاءُ»

"तू मेरी रहमत है मैं तेरे द्वारा (अर्थात तुझमें प्रवेश देकर) मैं जिस पर चाहूँगा दया करूँगा।" (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूर: क़ाफ़)

[2] यह फटकार के रूप में उनसे कहा जायेगा क्योंकि रसूल उनके पास आये थे, उन्होंने अल्लाह के आदेश उन्हें सुनाये थे किन्तु उन्होंने परवाह ही न की थी।

[3] अर्थात सत्य को स्वीकार करने से तुमने अहंकार किया तथा ईमान नहीं लाये, अपितु तुम थे ही पापी।

[4] अर्थात क़यामत का होना मात्र अनुमान तथा विचार है, हमें तो विश्वास नहीं कि यह वास्तव में होगी।

[5] अर्थात क़यामत की यातना, जिसे वह उपहास अर्थात अनहोनी समझते थे, उसमें ग्रस्त होंगे।

وَقِيلَ الْيَوْمَ نَنسَاكُمْ كَمَا نَسِيتُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَٰذَا وَمَأْوَاكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُم مِّن نَّاصِرِينَ ﴿٣٤﴾

(३४) तथा कह दिया गया कि आज हम तुम्हें भुला देंगे जैसाकि तुमने अपने इस दिन के मिलने को भुला दिया था,[1] तुम्हारा ठिकाना नरक है तथा तुम्हारी सहायता करने वाला कोई नहीं।

ذَٰلِكُم بِأَنَّكُمُ اتَّخَذْتُمْ آيَاتِ اللَّهِ هُزُوًا وَغَرَّتْكُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا ۚ فَالْيَوْمَ لَا يُخْرَجُونَ مِنْهَا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ ﴿٣٥﴾

(३५) यह इसलिए है कि तुमने अल्लाह (तआला) की आयतों का उपहास उड़ाया था तथा दुनिया के जीवन ने तुम्हें धोखे में डाल रखा था, तो आज के दिन न तो ये (नरक) से निकाले जायेंगे तथा न उनसे विवशता एवं बहाना स्वीकार किया जायेगा।[2]

فَلِلَّهِ الْحَمْدُ رَبِّ السَّمَاوَاتِ وَرَبِّ الْأَرْضِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٣٦﴾

(३६) तो अल्लाह के लिए सब प्रशंसा है, जो आकाशों एवं धरती तथा सर्वलोक का पालनहार है।

وَلَهُ الْكِبْرِيَاءُ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٣٧﴾

(३७) तथा समस्त (महिमा एवं) बड़ाई आकाशों एवं धरती में उसी की है,[3] तथा वही प्रभावशाली एवं हिक्मत वाला है।

---

[1]जैसे हदीस में आता है कि अल्लाह अपने कुछ बंदों से कहेगा : "क्या मैंने तुझे पत्नी नहीं दी थी, क्या मैंने तुझे सम्मान नहीं दिया था, क्या मैंने घोड़े तथा बैल इत्यादि तेरे अधीन में नहीं किये थे ? तू सरदारी भी करता तथा चुंगी भी लेता रहा।" वह कहेगा "हाँ यह ठीक है मेरे पालनहार !" अल्लाह तआला उससे प्रश्न करेगा, "क्या तुझे मुझसे मिलने का विश्वास था ?" वह कहेगा, "नहीं।" अल्लाह फ़रमायेगा «فَالْيَوْمَ أَنْسَاكَ كَمَا نَسِيتَنِي». (तो आज मैं तुझे नरक में डालकर भूल जाऊँगा जैसे तू मुझे भूला रहा) (सहीह मुस्लिम किताबुज़्ज़ुहद)

[2]अर्थात अल्लाह की निशानियों तथा आदेशों का उपहास तथा दुनिया के धोखे में लिप्त रहना, यह दो अपराध ऐसे हैं जिन्होंने तुम्हें नरक की यातना का पात्र बना दिया। अब उससे निकलने की संभावना नहीं तथा न इस बात की आशा कि किसी अवसर पर तुम्हें तौबा तथा क्षमा-याचना का अवसर प्रदान कर दिया जाये तथा तुम क्षमा माँगकर अल्लाह को मना लो।

[3]जैसे हदीस कुदसी में अल्लाह तआला फ़रमाता है : "العظمة إزاري والكبرياء ردائي فمن نازعني واحدًا منهما أسكنته ناري" (मुस्लिम किताबुल बिर्र, बाबु तहरीमिल किब्र)